—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीकी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2740406
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computer Institute - 9335214913

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

सितम्बर, 2006 | वर्ष 5 | अंक 07

इस समय का सबसे बड़ा काम यह है कि हम अपने अपने धर्म की परिधि में मानवता के प्रति आदर की भावना पैदा करने और इन्सानियत को ज़िन्दा रखने का प्रयास करें।

(पयामे इन्सानियत)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक नज़र में

❐	हमारी ज़िम्मेदारी	सम्पादकीय.....3
❐	कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मंजूर नोमानी 5
❐	कुर्आनी दुआओं की विशेषता	मौलाना अब्दुल्लाह अब्बास नदवी..... 6
❐	नअ़त	नजर रायबरेलवी 6
❐	प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम 7
❐	हज और उमरा	मौ०स० अबुल हसन अली हसनी 9
❐	सीरतुन्नबी	अल्लामा शिब्ली नोमानी..... 12
❐	उम्मते मुस्लिमा की सरफराजी	मौ० मुहम्मद राबे हसनी 16
❐	बुलाकर दर पे फरमाया दुआ कर	ख़ैरुन्निसा बेहतर 17
❐	जिन्दगी का असल सरमाया	अब्दुल्लाह हसनी 18
❐	इस्लाम और आतंकवाद एक नहीं हो सकते	मु० उस्मान रहमानी 19
❐	संक्षिप्त इस्लामी इतिहास	मौ० अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी..... 20
❐	अपने देश को जानिये	माख़ूज़..... 22
❐	आस्टियो पोरोसिस	स्नेह ठाकुर..... 23
❐	धार्मिक क्रान्ति का युग	प्रो० श्री नेत्र पाण्डे 25
❐	आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा 28
❐	रिश्वत	अनुवाद 29
❐	इल्म इन्सानियत का जेवर	मु० हसन अन्सारी 30
❐	नअ़त व मनक़बत	हैदर अली नदवी 31
❐	पतन के रास्ते पर समाज	मौ० असरारुल हक कासिमी 32
❐	रमज़ान आ रहा है	अबू मर्गूब 35
❐	कुइज़ क्या है?	अब्दुल्लाह 37
❐	जुल्म व ना इन्साफी और ख़ुद गरजी	मौ० मु० राबे हसनी नदवी 38
❐	अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ नदवी 40

❐❐❐

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है)

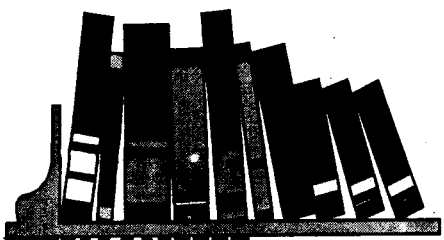

हमारी ज़िम्मेदारी

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

हमारी ज़िम्मेदारी यह है कि हम पर जिन जिन के हुक़ूक़ बनते हैं अपनी सकत व ताक़त भर उन को अदा करें। साहिबे ईमान होने के नाते से हमारी पहली ज़िम्मेदारी यह है कि हम अल्लाह के हुक़ूक़ अदा करें लेकिन हम को क्या मअ़लूम कि हम पर अल्लाह के हुक़ूक़ क्या हैं। मगर अल्लाह का बड़ा करम है कि उस ने अपने हुक़ूक़ से हम को आगाह कर दिया। उस का सब से अहम हक़ यह है कि हम उसकी इबादत करें।

फ़रमाया : "वमा ख़लक़्तुल जिन्न वलइन्स इल्ला लियअ़बुदूनि" (५१:५६) (हम ने जिन्नों और इन्सानों को अपनी इबादत के लिये पैदा किया) हम सिर्फ़ उसी की इबादत करें फ़रमाया : "व क़ज़ा रबुक अल्ला तअ़बुदू इल्ला इय्याह" (और आपके रब ने हुक्म दिया कि उसके सिवा किसी और की इबादत मत करो) लेकिन अल्लाह तआ़ला ने अपनी इबादत के तरीक़े में इन्सान को उसकी अ़क़्ल पर नहीं छोड़ा अपनी इबादत का तरीक़ा बताने के लिए अपने रसूलों को भेजा जो बड़ी तअ़दाद में आए और सब से आख़िर में अपने महबूब तरीन रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को भेज कर हुक्म दे दिया कि रसूल की इताअ़त करो मेरी इताअ़त यअ़नी इबादत हो जाएगी (मंय्युतिअ़िर्रसूल फ़क़द अ़ताअ़ल्लाह) (जिसने रसूल की इताअ़त की उस ने अल्लाह की इताअ़त की) और फ़रमाया : रसूल तुम को जो दें वह ले लो और जिस से वह रोक दें उससे रुक जाओ। (वमा आताकुमुर्रसूलु फ़ख़ुज़ूहु वमा नहाकुम अ़न्हु फंतहू) फिर हम इस्लाम का कल्मा पढ़ने में इस बात की शहादत देते हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं इस लिए हम पर दूसरी बड़ी ज़िम्मेदारी अल्लाह के रसूल की इताअ़त है इस लिए कि अल्लाह के हक़ की अदाएगी मुनहसिर है अल्लाह के रसूल की इताअ़त पर और अल्लाह के रसूल की इताअ़त मुनहसिर है अल्लाह के रसूल की महब्बत और आप की तअ़लीमात के इ़ल्म पर । अतः हमारी ज़िम्मेदारी है कि अपनी ज़िन्दगी से मुतअ़ल्लिक अल्लाह के रसूल की तअ़लीमात को हासिल करें।

हमारी बाक़ी ज़िम्मेदारियां अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की इताअ़त के ज़िमन (अन्तर्गत) में है जैसे मां बाप के हुक़ूक़, बीवी बच्चों के हुक़ूक़, पड़ोसियों के हुक़ूक़, रिश्तेदारों के हुक़ूक़, आम मुसलमानों के हुक़ूक़ आम इन्सानों के हुक़ूक़, जानवरों के हुक़ूक़ यह सब हम को अल्लाह के रसूल से मअ़लूम होंगे। कहीं मुतअ़य्यन (नियुक्त) हुक़ूक़ मअ़लूम होंगे तो कहीं हुक़ूक़ के उसूल (नियम) बताए गये होंगे। हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम इन हुक़ूक़ की जानकारी किसी आ़लिम से हासिल कर के इन हुक़ूक़ की अदाएगी करें।

इसी तरह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम अपनी ज़रूरियात को पूरा करने और अपनी रोज़ी कमाने का कोई ऐसा ज़रीआ़ इख़्तियार करें जिस की इजाज़त अल्लाह के रसूल की जानिब से हो। हम को चाहिए कि हदीस की किताबों या उ़लमा हज़रात से मअ़लूम कर के कोई जाइज़ पेशा इख़्तियार करें। फिर हमारी ज़िम्मेदारी है कि उस जाइज़ पेशे के हुक़ूक़ अदा करें। ज़िराअ़त, तिजारत, मुलाज़मत सब के मसाइल किताब व सुन्नत से अख़्ज़ कर के उ़लमा ने किताबों में जमअ़ कर दिये हैं और तमाम दीनी इदारों में क़ाइम दारुलइफ़्ता पूछने पर हर किस्म के अहकाम की

वज़ाहत करते हैं हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम मअलूम करके उन पर अ़मल करें।

किसान लोग यह समझते हैं कि हमारा सख्त मशक्क़त का काम है हम अपनी समझ से जैसे चाहें करें सब दुरुस्त है मगर ऐसा नहीं है। कभी बाग लगाते हैं लेकिन उसका फल बेचने में हम शरीअ़त का लिहाज़ नहीं करते, दरख़्त का फल कई कई साल का पेशगी बेच लेते हैं जो दुरुस्त नहीं, ज़मीन किसी की है मेहनत कोई और करता है इस में जो मुआमला होता है उसको मुफ़्ती से पूछ कर करना चाहिए, कभी क़र्ज़ देकर ज़मीन रिहन कर लेते हैं और ज़मीन पर खेती करके फाइदा उठाते हैं जो जाइज़ नहीं, इस लिए खेती में भी बहुत सी जगहों पर उलमा से पूछना ज़रूरी हो जाता है।

तिजारत में भी कुछ लोग समझते हैं कि इस में क्या पूछना लेकिन कुछ चीज़ों की तिजारत तो जाइज़ ही नहीं है जैसे शराब की तिजारत मुर्दार की तिजारत या गाने बजाने के आलात की तिजारत वगैरह इसी तरह तिजारत के बअ़ज मुआमलात दुरुस्त नहीं हैं इसलिए उलमा से मालूम करना ज़रूरी है।

हम मज़दूर हैं तो हमारी ज़िम्मेदारी है कि मज़दूरी के वक़्त में दयानतदारी से काम अंजाम दें न काम में कोताही करें न वक़्त ज़ायिअ़ करें। हम मालिक हैं तो हमारी ज़िम्मेदारी है कि मज़दूर पर किसी किस्म की ज़ियादती न करें मज़दूरों को पूरी मज़दूरी दें मज़दूरों का शोषण (इस्तिहसाल) न करें।

हम नौकर हैं तो अपने महकमे (डिपार्ट) के नियमों का उल्लंघन न करें। जिसका महीने का वेतन नियुक्त है वह नौकरी के नियम में आता है चाहे वह अधिकारी हो या कर्मचारी, गुरू (उस्ताद) हों या किलर्क (मुहर्रिर) सब को अपने डिपार्ट के निमयों का पालन करना चाहिए जैसे वक़्त की पाबन्दी और काम ठीक से करना, न अधिकारी ज़ियादती करे न कर्मचारी कोताही करे। हमारी ज़िम्मेदारी है कि जिन औक़ात में जो काम हम को सौंपे गये हैं, उन कामों पर बेतन के अतिरिक्त (अ़लावा) कोई पैसा या कोई और बदल न लें, इसे रिश्वत कहते हैं रिश्वत (घूस) से हम पूरी तरह बचें।

हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम झूठ, चोरी, डकैती, व्यभिचार सभी पापों से बचें और मानवता (इन्सानियत) के नाते जिस किसी मनुष्य पर विपत्ति आ पड़े तो शक्ति भर उसकी सहायता करें, छोटों पर दया और बड़ों का आदर हमारी ज़िम्मेदारियों में है।

यह भी हमारी ज़िम्मेदारी है कि जिन बातों को हम अच्छा समझते हैं या जिन बातों को बुरा जानते हैं हम दूसरों को अर्थात अपने भाइयों को भी बताएं कि यह भला है इसे अपनाओ और यह बुरा है इस को छोड़ दो। यानी दीन की बातें मुआमलात, अख़लाक़ व इ़बादात की बातें दूसरों को भी पहुंचाएं।

इस सिलसिले में हमारे लिये ज़रूरी है कि पहले हम अपनी औलाद को बताएं और इस तरह बताएं कि वह अच्छी तरह समझ लें फिर जो कुछ उनको समझाएं उस पर उन से अ़मल भी करवा लें। अपनी औलाद को समझाना और अ़मल करवाना अगर छोटे पन से हो तो बहुत आसान होता है। यह ज़िम्मेदारी मां बाप दोनों पर है। किसी दीनी मकतब में दाख़िल करके तअ़लीम वाली ज़िम्मेदारी से सुबुकदोश हुआ जा सकता है लेकिन इल्म पर अ़मल कराने की ज़िम्मेदारी मां बाप के ज़िम्मे ही रहेगी। मियां, बीवी में जो भी ज़रूरियाते दीन से ना वाक़िफ़ हों, एक दूसरे को सिखाना ज़रूरी है, ख़ुदा न ख़्वास्ता आप दीन से वाक़िफ़ हों और आप के मां बाप नावाक़िफ़ हो तो अदब से उन को सिखाना और उस पर अ़मल करवाने की कोशिश ज़रूरी है। फिर ख़ान्दान, फिर पड़ोस फिर जहां तक मुम्किन हो ब सुहूलत नर्म के साथ यह काम करना चाहिए। ख़ुलासा यह कि हम पर जिस के जो हुक़ूक़ हैं उन को अदा करना हमारी ज़िम्मेदारी है कोताही पर हम को जवाब भी देना होगा और सज़ा भी भुगतना होगी।

कुर्आन की शिक्षा

मौ० मंजूर नोमानी

वही सब का खालिक व रज्जाक और पर्वदगार व कारसाज है, और वही अपने हुक्म से इस कारखानए–हस्ती को चला रहा है

कुर्आने–मजीद बड़े जोर के साथ और बड़ी तफसील से यह भी बतलाता है और दिलों में इस का यकीन पैदा करना चाहता है कि सारी काइनात को पैदा, और गैर मौजूद से मौजूद, भी खुदा ने किया है। और वही इस कारखानए–आलम (दुन्या) के सारे निजाम को खुद अकेले (किसी और की शिर्कत के बगैर) चला रहा है। जिन्दगी और रिज्क वगैरा जिन्दगी के जो सामान जिस को मिल रहे हैं, वह अल्लाह ही दे रहा है। और उसके अलावा किसी के हाथ में न जिन्दगी है, न जिन्दगी की जरूरियात और उसके सामान हैं बल्कि वही जिस को जब तक और जितना देना चाहता है देता है और जिसको देना नहीं चाहता, नहीं देता।

कुर्आने–मजीद का काफी हिस्सा इसी मजमून से मुतअल्लिक है। चंद आयतें इस सिलसिले की भी यहां पढ़ लीजिए। सूरये अअराफ में फर्माया :–

तर्जमा : सुन लो ! उसी का काम है पैदा करना और हुक्म चलाना। बाबरकत है अल्लाह जो पर्वदगार हैं सारी काइनात का। (अअराफ :५४)

और सूरए–जुमर में फमार्या :

तर्जमा : अल्लाह ही हर चीज का पैदा करने वाला है और वही हर चीज का जिम्मेदार है, जमीन–व आसमान (के खजाने और उन) की कुंजियां उसी के कब्जे और तसर्रुफ में है। (जुमर : ६२,६३)

और सूरए–रूम में मुशरिकीन से खिताब करते हुए इर्शाद फर्माया :–

तर्जमा : अल्लाह ही वह है जिस ने तुम को पैदा किया है, और वही तुम्हारा राजिक है, फिर (वक्त आने पर) वही तुम को मौत देगा और फिर तुम को वही दुबारा जिन्दा करेगा। क्या तुम्हारे इन शरीकों में (जिन को तुम इबादत और दुआ में खुदा के साथ शरीक करते हो) कोई है? जो इन कामों में से कुछ भी कर सके–पाक है वह अल्लाह और बरतर है उनके शिर्क से और शरीकों से। (अर्रूम : ४०)

और सूरए शूरा में फर्माया :–

तर्जमा : वह अल्लाह जमीन व आसमान का पैदा करने वाला है, उसी ने तुम में से तुम्हारे वास्ते जोड़े बनाये और चौपायों में से जोड़े बनाये। वही तुम्हें जमीन में फैला और बढ़ा रहा है, नहीं है उसकी मिसाल कोई, वह सुनने वाला और देखने वाला है। (सब की सुनता और सब को देखता है)। जमीन–व–आसमान (के खजाने और उन) की कुंजियां उसी के पास हैं, जिसे चाहता है रोजी में वुसअत देता है और जिसके लिये चाहता है तंगी करता है। वह सब कुछ खूब जानता है। (अश्शूरा : ११,१२)

तर्जुमा : अल्लाह ही वह है जिसने पैदा किया आस्मानों को और जमीन को और उतारा आसमान से पानी, फिर पैदा किये उस के जरिये गल्ले और मेवे तुम्हारी रोजी के लिये, और तुम्हारे काबू में किया कश्तियों को कि उस के हुक्म से (तुम्हारे कामों में) समंदर में चलती रहती है, और उस ने तुम्हारे काम में लगाया नहरों नदियों को (जिन में तुम अपनी कश्तियां दौड़ाते हो और उनके पानी से अपने बहुत से काम करते हो)। और उसने तुम्हारे काम में लगाया है सूरज और चांद को जो बराबर एक निजाम के मुताबिक चलते रहते हैं, और उसी ने तुम्हारे काम का बनाया है दिन और रात को यानी उसने दिन और रात क्रा निजाम ऐसा कायम किया जैसे कि तुम्हारी जरूरियात का तकाजा था और सिर्फ यही चीजें तुम्हारी जरूरत की उस ने नहीं बनायी हैं बल्कि इनके अलावा भी जो तुम्हारी जिन्दगी की जरूरियात थीं और जुबाने हाल या काल से जो कुछ तुम ने उस से मांगा उस में से तुम को उसने दिया, और उस के इसी फज्लो–करम से तुम्हारी जिन्दगी का निजाम चल रहा है, और तुम पर उसके इतने एहसानात हैं कि अगर तुम शुमार करो तो न कर सकोगे, वाकिआ यह है कि इन्सान बड़ा बे इन्साफ नाशुकरा

है। (इब्राहीम : ३४)

और सूरए–मुअमिनून में फर्माया:

तर्जमा : वही अल्लाह है जिस ने तुम्हारे (सुनने के लिए) कान (देखने के लिए) आंखें और (सोचने के लिए) दिल पैदा किये (मगर) तुम बहुत ही कम शुक्र करते हो। और वही है जिस ने तुमको (इस जिन्दगी में) जमीन में फैलाया और बसाया है, और (यहां से जाने के बाद) तुम सब उसी की तरफ ले जाये जाओगे। और वही है जो जिलाता और मारता है। (अर्थात उसी के हाथ में जिन्दगी और मौत का निजाम है)। और उसी का काम है रात–दिन का उलट–फेर और यके–बाद–दीगर उनकी आमद–व–रफ्त। तो क्या तुम अकलो–खिरद से बिल्कुल काम नहीं लेते। (और नहीं सोचते कि तुम्हारा रवैया उस खालिक व मालिक और एहसान करने वाले के साथ क्या होना चाहिए)। (अलमुअ्मिनून : ७८–८०)

और सूरए–मुअमिन में एक जगह इर्शाद फमार्या :–

तर्जमा : अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे वास्ते जमीन को मुस्तकर (ठहरने की जगह) बनाया और आसमान को छत की तरह ऊंचा किया और उसने तुम्हारी सूरतगरी की और अच्छी–अच्छी सूरतें बनायीं और नफीस–नफीस गिजाओं से तुम्हें रिज्क दिया, वही अल्लाह तुम्हारा रब है बड़ी बर्कत और अजमत वाला है जो सारी काइनात का पर्वर्दगार है। (अलमुअ्मिन : ७४)

और सूरए अनआम में फमार्या :

तर्जमा : कहो ! क्या अल्लाह के सिवा किसी और को मैं अपना रब बनाऊं, हालांकि वही हर चीज का रब है और उसी की तरफ से सब की पर्वर्दगारी हो रही है। (अनआम : १६५)

और सूरए अनआम में फर्माया :

तर्जमा : सो सारी हम्दो–सताइश सिर्फ अल्लाह ही के लिए है (उस के सिवा किसी के लिए हम्द सजावार नहीं क्योंकि तनहा वही है) जो जमीन व आसमान और सारी काइनात का रब है, और सब उसी की पर्वरिश से फैजियाब हैं – आसमानों–जमीन में अजमत व किब्रियाई भी सिर्फ उसी के लिए है, और वह जबरदस्त और हर काम और फैसले हिक्मत से करने वाला है। (जासिया : ३६,३७)

नअ़त

नज़र रायबरेलवी

हबीबे खुदा का है वो बाबे आली।
जहां पर है शाहो गदा सब सुवाली
कहां से मिसाल उनकी लायेगी दुनिया।
वजूदे हबीबे खुदा बेमिसाली
वो है आश्ना सोजो साजे अजां से।
मुयस्सर है जिसको मकामें बिलाली।
करम हो इधर भी शाहेनशाहे बतहा।
कि हैं आप ही बागे वहदत के माली।
मेरे दिल की फिरदौस है सब्ज गुम्बद।
निगाहों की जन्नत है रौजे की जाली।
वहां की फजायें हैं जन्नत से बेतहर।
जहां कलमये हक पड़े डाली डाली।
नजर उनके दर पे जो पहुंचा है उसने।
खुदा की कसम अपनी किस्मत बना ली।

कुर्आनी दुआओं की विशेषता

क़ुर्आने मजीद में जो दुआ़ओं के अल्फ़ाज़ आए हैं सब मुहाकात (कथावर्णन) के तौर पर आए हैं कि अल्लाह के बन्दों ने उस से क्या मांगा और किन अल्फ़ाज़ में मांगा, लेकिन इस मुहाकात के पहलू में तअलीम भी है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है – मेरे बन्दे ने यूं कहा, इस तरह मांगा, हम ने उस को यह बख़्श दिया, मुसीबत में पुकारा, उसकी मुसीबत दूर कर दी, फ़क्र व इहतियाज (निर्धनता तथा आवश्यकता) में मेरे आगे हाथ फैलाया हम ने उसकी झोली भर दी।

यह सब है तो हिकायत लेकिन इस के पहलू में तल्क़ीन (उपदेश) भी है कि अगर तुम मांगो तो इस तरह मांगो अपनी बन्दगी (दास्ता) और आजिज़ी (विवशता) का इज़हार इस तरह करो, अल्लाह तआ़ला की हम्द व सना इस तरह करो।

यह दुआ़एं जो अक्सर व बेश्तर किसी पैग़म्बर की ज़बान से अदा हुईं कभी जमाअ़त की तरफ़ से कभी एक शख़्स (व्यक्ति) की तरफ़ से अपने अन्दर उन तमाम ज़रूरतों और हाजतों को समेटे हुए हैं जिनका इन्सान मुहताज रहता है।

(मौ० अ़ब्दुल्लाह अ़ब्बास नदवी)

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

आंहजरत (सल्ल०) की शफकत व हिदायत

हजरत जाबिर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरी और तुम्हारी मिसाल ऐसे आदमी की तरह है जिसने आग रौशन की, उसमें पतिंगे और परवाने गिरने लगे और वह हंकाता है। इसी तरह मैं तुम्हारी कमर पकड़कर तुमको दोजख से हटाता हूं, और तुम मेरे हाथ से निकले जा रहे हो। (मुस्लिम)

खाने के आदाब व अहकाम

हजरत जाबिर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उंगलियों के चाटने और रकाबी के साफ करने का हुक्म दिया है। और फरमाया, तुम नहीं जानते इसकी किस चीज में बरकत है। (मुस्लिम)

और इन्हीं की एक रिवायत में है कि तुम्हारा कोई लुकमा गिरे तो उठा लो और अगर कुछ भर गया हो तो साफ करके खा लो, उसको शैतान के लिए न छोड़ो और अपने हाथ को रूमाल में न पोंछो जब तक कि उंगलियां चाट न लो। तुम नहीं जानते कि किस खाने में बरकत है।

और एक रिवायत में है कि शैतान तुम्हारी हर चीज में हाजिर रहता है, यहां तक कि खाने के वक्त भी। पस जब तुम्हारा कोई लुकमा गिरे तो उसको साफ करके खा लो, शैतान के लिए न छोड़ो।

आं हजरत (सल्ल०) के बाद नयी–नयी बातें निकालने वाले

हजरत इब्नि अब्बास (र०) फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह (स०) ने हमसे नसीहत के दौरान में फरमाया कि तुम अल्लाह की तरफ नंगे पांव नंगे बदन अपनी असली हालत पर जमा किये जाओगे और वह फरमाता है कि जैसे हमने पहली मर्तबा तुमको पैदा किया है, उसी तरह हम तुमको पलटायेंगे और हमारा वादा है, हम पूरा करने वाले हैं। याद रक्खो कियामत में सबसे पहले जिसको कपड़े पहनाये जायेंगे वह हजरत इबराहीम (अ) होंगे। और याद रखो मेरी उम्मत के कुछ लोग लाये जायेंगे और बायीं तरफ ले जाया जायेगा। मैं कहूंगा; या रब। यह मेरे लोग हैं तो मुझसे कहा जायेगा कि आप नहीं जानते, उन्होंने आपके बाद क्या नया काम किया। पस मैं कहूंगा, जैसे एक नेक बन्दे ने (नेक बन्दे से हजरत ओसा (अ०) मुराद हैं।) कहा कि मैं जब तक इनमें रहा इन पर गवाह रहा, जब मैं वफात पा गयातो तू इनका निगिहबान था। और तू ही हर चीज पर गवाह है। तो मुझसे कहा जायेगा कि जब से तुमने इनको छोड़ा यह बराबर दीन से फिरते रहे। (बुखारी व मुस्लिम)

कंकरियां और ढीले फेंकने की मुमानिअत

हजरत अब्दुल्लाह (र०) बिन मुगफ्फल से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने कंकरियों के फेंकने से मना फरमाया है। और फरमाया कि यह कंकरियां न शिकार करती हैं न दुश्मन को कत्ल करती हैं। बल्कि यह आंखों को फोड़ देती हैं। और दांतों को तोड़ देती हैं। (बुखारी–मुस्लिम)

एक रिवायत में है कि इब्नि मुगफ्फल ने अपने एक अजीज को कंकरियां फेंकते हुए देखा तो मना किया और हदीस सुनाई। फिर दोबारः उसको कंकरियां फेंकते हुए देखा तो कहा, मैं तुमको सुनाता हूं कि हुजूर (सल्ल०) ने इससे मना फरमाया है और तुम फिर वही हरकत करते हो। अब तुमसे कभी बात न करूंगा।

महज रसूलुल्लाह (सल्ल०) की इक्तिदा में अमल

हजरत आबिस (र०) बिन रबिअः से रिवायत है कि मैंने हजरत उमर (र०) को देखा। हजरे अस्वद को चूम रहे थे और कह रहे थे कि मैं जानता हूं तू पत्थर है न नफा पहुंचा सकता है और न नुक्सान। अगर मैं रसूलुल्लाह (स०) को चूमते न देखता तो मैं तुझ को न चूमता। (बुखारी–मुस्लिम)

मुसलमानों की शान इताअत व तस्लीम

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर यह आयत उतरी।

अनुवाद : अल्लाह के लिए है कि जो कुछ आसमानों और जमीन में है और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है,

उसको छिपाओ या जाहिर करो अल्लाह उसका हिसाब लेगा।

तो यह बात रसूलुल्लाह (सल्ल०) के असहाब पर गरां गुजरी। वह आपके पास आये और घुटनों के बल बैठ गये और कहने लगे, या रसूलल्लाह! हम पर वह आमाल लाजिम किये गये थे जिनकी हममें ताकत थी– मसलन नमाज, रोजा, जिहाद, सदकः। और अब आप पर यह आयत उतरी है, इसकी हम में ताकत नहीं। आपने फरमाया, क्या तुम अहल–किताब की तरह कहना चाहते हो जैसे उन्होंने कहा– हमने सुना और नाफरमानी की, बल्कि कहो हमने सुना और और इताअत की। ऐ हमारे रब। तुमसे मग्फिरत चाहते हैं। और हमको तेरी तरफ पलटना है। जब उन्होंने इसका विर्द किया और उनकी जबानें रवां हो गयीं तो उसके बाद अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी –

अनुवाद : रसूल और ईमान वाले उस पर ईमान लाये जो उन पर उनके रब की तरफ से उतारा गया और हर एक ईमान लाया अल्लाह पर, उसके फिरिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर उसके रसूलों में किसी के दर्मियान हम फर्क नहीं करते और उन्होंने कहा कि सुना हमने और इताअत की हमने, ऐ हमारे परवरदिगार हम तुझसे मग्फिरत चाहते हैं। और हम को तेरी तरफ पलटना है। (सूर बकर ४० आ० २८५)

जब हम यह सब कहने लगे तो अल्लाह तआला ने दिल की बात के हिसाब लिये जाने को मन्सूख कर दिया और यह आयत उतारी –

अनुवाद : अल्लाह किसी को तकलीफ नहीं देता मगर उसकी वुसअत के मुताबिक, जो कुछ कमाया अपने ही नफा के लिए और जो बुरा किया तो अपना नुकसान किया। और फिर ईमान वालों को यह दुआ सिखाई।

अनुवाद : ऐ हमारे परवरदिगार, हमको न पकड़ अगर हम भूल जायें या खता कर जायें।

अल्लाह तआला ने जवाब में फरमाया, हां। (और यह कहना सिखाया)

ऐ रब हमारे, हम पर कोई बोझ न रख जैसे तूने अगलों पर रखा। फरमाया, हां। (और यह कहलाया)

ऐ हमारे रब, न उठवा हमसे (वह बोझ) जिसकी हमको ताकत नहीं।

फरमाया, हां। (और यह कहलाया)

और हमको माफ कर दे और हमको बख्श दे और हम पर रहम कर, तू हमारा मौला है। काफिरों पर हमको मदद दे।

फरमाया हां। (मुस्लिम)

पाठकों से

सच्चा राही के जिन खरीदारों के चन्दों का साल पूरा हो गया है उनको पत्र लिखे जा चुके हैं कृपया वह अपना चन्दा अगले साल के लिए तुरन्त भेजें ताकि इदारा माली दुश्वारी में न पड़े। शुक्रिया।

(मैनेजर)

लेखकों से

हर २०–२२ तारीख तक अगले महीने का मैटर कम्पोजीटर को दे दिया जाता है, जो लेख २५ तारीख के पश्चात मिलेगा वह एक महीने बाद ही प्रकाशित हो सकेगा। लेखक जन याद रखें।

(सम्पादक)

(पृष्ठ ११ का शेष)

"जिसको मैं महबूब हूं अली भी उसको महबूब होना चाहिए, ऐ अल्लाह जो अली से महब्बत रखें तू भी उससे महब्बत रख और जो उन से अदावत रखे उससे तू भी अदावत रख।"

जब आप "जुल हुलैफा" आये तो रात यहीं बसर की। सवादे मदीना पर आप की नजर पड़ी तो आप ने तीन बार तकबीर कही और इरशाद फरमाया :–

खुदा बुजुर्ग व बरतर है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसका कोई शरीक नहीं, बस उसी की सल्तनत है। उसी के लिए तारीफ है वह हर बात पर कादिर है, लौटे आ रहे हैं तौबा करते हुए, फरमाबरदाराना जमीन पर पेशानी रख कर अपने रब की तारीफ में मशगूल होकर, खुदा ने अपना वादा सच्चा किया, अपने बन्दे की नुसरत की और तमाम कबायल को तनहा शिकस्त दी।"

(जादुलमआद जिल्द एक पृष्ठ २४६)

आप मदीना में दिन के वक्त दाखिल हुए।

हज और उमरा के बारे में

अल्लाह के रसूल स० का तरीका

मौ० स० अबुल हसन अली हसनी

इसमें किसी का इख्तेलाफ नहीं है कि हिजरत के बाद अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने सिर्फ एक हज फरमाया और वही हिज्जतुल वदाअ़ था जो सन् दस हिज्री में अदा फरमाया गया। हज सन् नौ या दस हिजरी में फर्ज हुआ इसमें इख्तेलाफ राय है। हिजरत के बाद आपने चार उमरे किये वह सब जीकादा के महीने में हुए।

"अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने हज का इरादा फरमाया और लोगों को इसकी खबर कर दी कि आप हज के लिए जाने वाले हैं। यह सुनकर लोगों ने आप के साथ हज में जाने की तैयारियां शुरू कर दीं।

इस की खबर मदीना के आस पास भी पहुंची और वहां के लोग बड़ी तादाद में मदीना हाजिर हुए। रास्ते में इतनी बड़ी तादाद में लोग काफिले में शामिल होते गये, कि उन का शुमार मुश्किल है। लोगों का एक हुजूम था, जो आगे, पीछे, दाहिने, बायें जहां तक निगाह जाती आप को अपने जुलू में लिए हुए थे। आप मदीना से दिन में जुहर के बाद पचीस जीकादा दिन शनिवार को रवाना हुए। पहले जुहर की चार रकअतें आपने अदा फरमाई इससे पहले खुत्बा दिया और इसमें एहराम के वाजिबात और सुनन बयान फरमाये। फिर तलबिया कहते हुए रवाना हुए। तलबिया के अल्फाज यह थे :–

"लब्बैक, अल्लाहुम्म लब्बैक लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक, इन्नल हम्द वन्निअमत लक वल्मुल्क ला शरीक लक"

मजमा इन अल्फाज को घटा देता कभी बढ़ा देता। इस पर आप कोई नकीर न फरमाते। तलबिया का सिलसिला आप ने बराबर जारी रखा और "अरज" में पहुंचकर पड़ाव किया। आप की सवारी और हजरत अबू बक्र की सवारी एक थी।

फिर आगे चले और "अलअबवा" पहुंचे। वहां से चलकर "वादी–ए–असफान" और "सरिफ" पहुंचे, फिर वहां से चलकर "जीतुवा" में मंजिल की, और शनिवार की रात वहां गुजारी, यह जिलहिज्जा की चार तारीख थी, फज्र की नमाज आपने अदा फरमाई। उसी रोज गुस्ल भी फरमाया और मक्का की तरफ रवाना हुए। मक्का में आप का दाखिला दिन में बालाई मक्का की तरफ से हुआ वहां से चलते हुए आप हरम शरीफ में दाखिल हुए यह चाश्त का वक्त था। बैतुल्लाह पर नजर पड़ते ही आपने फरमाया :–

"ऐ अल्लाह! अपने इस घर की इज्जत व शरफ ताजीम व तकरीम और रोब व हैबत में और इजाफा फरमा।"

दस्ते मुबारक बलन्द करते तकबीर कहते और फरमाते :–

"ऐ अल्लाह आप सलामती हैं, आप ही से सलामती का वजूद है, ऐ हमारे रब हम को सलामती के साथ जिन्दा रख।"

जब हरम शरीफ में आप दाखिल हुए तो सब से पहले आपने काबा का रूख किया। हजरे असवद का सामना हुआ तो आपने बगैर किसी मुज़ाहमत के उसका बोसा लिया; फिर तवाफ के लिए दाहिनी तरफ रुख किया। काबा आप के बायें तरफ था। इस तवाफ के पहले तीन शौत में आपने रमल किया। आप तेजी से कदम उठाते थे। कदमों का फासिला मुख्तसर होता था। आपने अपनी चादर अपने एक शाने पर डाल ली थी, दूसरा शाना खुला हुआ था। जब आप हजरे असवद के सामने गुजरते तो उसकी तरफ इशारा करके अपनी छड़ी से इस्तेलाम करते। जब तवाफ से फरागत हुई तो मकामे इब्राहीम के पीछे तशरीफ लाये और यह आयत तिलावत फरमाई :–

"वत्तखिजू मिम मकामि इब्राहीम मुसल्ला" (सूरः बरकः १२५)

इसके बाद यहां दो रकअतें पढ़ी। आप नमाज से फारिग होकर फिर हजरे असवद के करीब तशरीफ ले गये और उसका बोसा लिया, फिर सफा की तरफ उस दरवाजे से चले जो आप के सामने था जब उसके करीब आये तो फरमाया :–

"सफा और मरवा अल्लाह की निशानियों में से है, मैं शुरू करता हूं उससे जिस से अल्लाह तआला ने शुरू किया।"

फिर आप सफा तशरीफ ले गये यहां तक कि काबा आप को नजर आने लगा फिर किबला की तरफ

देखकर आपने फरमाया :–

"अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह यकता है, उसका कोई शरीक नहीं। उसी का सब मुल्क और बादशाही है। और उसी के लिए सारी हम्द व तारीफ है और वह हर चीज पर कादिर है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह यकता है, उसका कोई शरीक नहीं, उसने अपना वादा पूरा किया, अपने बन्दे की मदद फरमायी, और तमाम जमाअतों और गिरोहों को तनहा शिकस्त दी।"

मक्का में आपने चार दिन इतवार, सोमवार, मंगल और बुद्ध को कयाम फरमाया। जुमेरात को दिन निकलते ही आप तमाम मुसलमानों के साथ "मिना" तशरीफ ले आये। जुहर और अस्र की नमाजें यहीं अदा फरमाई, और रात भी यहीं बसर की। यह जुमा की रात थी, जब सूरज निकल आया तो आप "अरफा" की तरफ रवाना हुए। आपने देखा कि " नमिरा" में आप के लिए खेमा लगाया जा चुका है, इसलिए आप इसी में उतरे । जब जवाल का वक्त हो गया तो अपनी ऊंटनी 'कसवा' को तैयार करने का हुक्म दिया, फिर वहां से रवाना होकर "अरफा" के मैदान के बीच में आप ने मंजिल की और अपनी सवारी ही पर तशरीफ रखते हुए एक शानदार खुतबा दिया जिसमें आपने इस्लाम की बुनियादों को वाजेह किया, और शिर्क व जिहालत की बुनियादें ढा दीं। इसमें आपने उन तमाम चीजों की तहरीम फरमाई जिन के हराम होने पर तमाम मजाहिब व अकवाम मुत्तफिक हैं। और वह हैं – नाहक खून करना, माल हड़प करना, आबरू रेजी, आपने जाहिलियत की तमाम बातों को अपने कदमों के नीचे पामाल कर दिया, जाहिलियत का सूद कुल का कुल आपने खत्म कर दिया और उसको बिल्कुल बातिल करार दिया। औरतों के साथ अच्छा सुलूक करने की तलकीन की और उनके हुकूक और जो उनके जिम्मे हुकूक हैं उनकी वजाहत की और बताया कि दस्तूर के मुताबिक अख्लाक और अच्छे बर्ताव के मेयार पर खुराक और लेबास, नान नफका उनका हक है।

उम्मत को आप ने अल्लाह की किताब के साथ जुड़े रहने की वसीयत की और फरमाया, "जब वह इसके साथ अपने को अच्छी तरह वाबिस्ता रखेंगे, गुमराह न होंगे।" आपने उनको आगाह किया कि उनसे कल कयामत के दिन आपके बारे में सवाल होगा, और उनको इसका जवाब देना होगा इस मौके पर आपने तमाम हाजरीन से पूछा कि वह इस मौके पर क्या कहेंगे, और क्या गवाही देंगे? सब ने एक जबान होकर कहा कि हम गवाही देंगे कि आपने हक का पैगाम बे कमोकास्त पहुंचा दिया आपने अपना फर्ज पूरा किया, खैर ख्वाही का हक अदा कर दिया। यह सुनकर आपने आसमान की तरफ उंगली उठाई और तीन बार अल्लाहतआला को उन पर गवाह बनाया, और उनको हुक्म दिया जो यहां मौजूद है वह उन लोगों तक यह बात पहुंचा दे जो यहां मौजूद नहीं।

जब आप इस खिताब से फारिग हुए, तो आपने हजरत बिलाल रजी० को अजान का हुक्म दिया। उन्होंने अजान दी, फिर आपने जुहर की नमाज दो रकअत पढ़ी, इसी तरह अस्र की नमाज भी दो रकअत पढ़ी। यह जुमा का दिन था।

नमाज से फारिग हो कर आप अपनी सवारी पर तशरीफ ले गये और मौकफ (वकूफ की जगह) पर आये, यहां आकर आप अपनी सवारी पर बैठ गये और गुरूब आफताब तक दुआ व मुनाजात में मशगूल रहे। दुआ में आप दस्ते मुबारक सीना तक उठाते थे जैसे कोई सायल और मिसकीन नाने शबीना का सुवाल कर रहा हो। दुआ यह थी–

"ऐ अल्लाह ! तू मेरी सुनता है, और मेरी जगह को देखता है, और मेरे पोशीदा और जाहिर को जानता है, तुझ से मेरी कोई बात छुपी नहीं रह सकती, मैं मुसीबत जदा हूं, मुहताज हूं, फरियादी हूं, पनाह जू हूं, परेशान हूं, एतराफ करने वाला हूं, तेरे आगे सवाल करता हूं, जैसे बेकस सुवाल करते हैं, तेरे आगे गिड़गिड़ाता है, जैसे गुनहगार जलील व ख्वार गिड़गिड़ाता है, और तुझ से तलब करता हूं जैसे खौफ जदा, आफत रसीदा तलब करता हो, और जैसे वह शख्स तलब करता है जिस की गर्दन तेरे सामने झुकी हो और उसके आंसू बह रहे हों, और तन बदन से वह तेरे आगे फरोतनी किये हुए हो और अपनी नाक तेरे सामने रगड़ रहा हो। ऐ रब। तू मुझे अपने से दुआ मांगने में नाकाम न रख। और मेरे हक में बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला हो जा, ऐ सब मांगे जाने वालों से बेहतर और सब देने वालों से अच्छे।"

इसी मौके पर यह आयत नाजिल हुई –

"आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया तुम पर अपनी नेमत तमाम कर दी। और तुम्हारे लिए इस्लाम को बहैसियत दीन इन्तेखाब

कर चुका।" (सूर : मायदा –३)

जब आफताब गुरूब हो गया तो आप अरफा से रवाना हो गये, और उसामा बिन जैद को अपने पीछे बिठाया आप सुकून और वकार के साथ आगे चले, ऊंटनी की मेहार आप ने इस तरह समेट ली थी कि करीब था कि उसका सर आप के कुजावा से लग ज़ाये। आप कहते जाते थे कि कि लोगो सुकून व इतमिनान के साथ चलो। रास्ते भर आप तलबिया करते जाते और जब तक मुज्दल्फा न पहुंच गये यह सिलसिला जारी रहा। वहां पहुंचते ही आपने हजरत बेलाल रजी० को अजान का हुक्म फरमाया। अजान दी गयी, आप खड़े हो गये और ऊंटों को बिठाने और सामान उतारने से पहले मगरिब की नमाज़ अदा फरमाई। जब लोगों ने सामान उतार लिया, तो आप ने इशा की नमाज भी अदा फरमाई। फिर आप आराम फरमाने के लिए लेट गये और फज्र तक सोये।

फज्र की नमाज अव्वल वक्त अदा फरमाई फिर सवारी पर बैठे और 'मशअरूल हराम' आये और किबला रूख हो कर दुआ, तकबीर और जिक्र में मशगूल हो गये यहां तक कि खूब रोशनी फैल गई। यह सूरज निकलने से पहले की बात है। फिर आप मुज्दल्फा से रवाना हुए। फजल बिन अब्बास रजी०सवारी पर आप के पीछे थे। आप बराबर तलबिया में मशगूल रहे। आप ने इब्न अब्बास को हुक्म दिया कि रमी जेमार के लिए सात कंकरियां चुन लें। जब आप वादी–ए–मुहस्सर के बीच में पहुंचे तो आप ने ऊंटनी को तेज कर दिया और बहुत उजलत फरमाई। क्योंकि यही वह जगह है जहां असहाबे फील पर अजाब नाजिल हुआ था, यहां तक कि मिनां पहुंचे और वहां की जमरतुलअक्बा तशरीफ लाये और सवारी पर सूरज निकलने के बाद रमी की और तलबिया मौकूफ किया।

फिर मिना वापसी हुई। यहां पहुंच कर आपने एक बलीग खुतबा दिया जिस में आप ने "योमुन्नहर" (कुरबानी का दिन) की हुरमत से आगाह किया और अल्लाह तआला के नजदीक इस दिन की जो फजीलत है, उसको बयान किया। दूसरे तमाम शहरों पर मक्का की फजीलत व बरतरी का जिक्र किया, और जो किताबुल्लाह की रोशनी में उन की कयादत करे, उसकी इताअत व फरमांबरदारी को वाजिब करार दिया, फिर आप ने हाजरीन से कहा कि वह अपने मनासिब व आमाल हज से मालूम कर लें। आपने लोगों को यह भी तलकीन फरमाई कि देखो मेरे बाद काफिरों की तरह न हो जाना कि एक दूसरे की गर्दन मारते रहो। आपने यह भी हुक्म दिया कि यह सब बातें दूसरों तक पहुंचा दी जायें। इस खुतबा में आपने यह भी इरशाद फरमाया :

"अपने रब की इबादत करो, पांच वक्त की नमाज पढ़ो, एक महीना (रमजान) का रोजा रखो, और अपने उलुलअम्र की इताअत करो अपने रब की जन्नत में दाखिल हो जाओ।"

उस वक्त आपने लोगों के सामने वदाइया कलमात भी कहे और इसी वजह से इस हज का नाम "हिज्जतुल वदाअ" पड़ा।

फिर मिना में "मनहर" तशरीफ ले गये और अपने हाथ से तिरसठ ऊंट जबह किये, उस वक्त आप की उम्र का तिरसठवां साल था। तिरसठ के बाद आप ठहर गये और हजरत अली रजि० से कहा कि सौ में जितने बाकी हैं वह पूरे करें। आपने जब कुरबानी पूरी कर ली तो हज्जाम को तलब फरमाया और बालों को मुंडायां और अपने बालों को करीब के लोगों में तकसीम फरमाया, फिर सवारी पर मक्का रवाना हुए, तवाफे इफाजा किया जिसको तवाफे जियारत भी कहते हैं। फिर जमजम कुंए के पास तशरीफ लाये, और खड़े होकर पानी नोश फरमाया। फिर उसी दिन मिना वापसी हुई और रात वहीं गुजारी। दूसरे दिन आप दिन ढलने का इन्तेजार करते रहे। जब दिन ढल गया तो आप अपनी सवारी से उतर कर रमी जेमार के लिए तशरीफ ले गये। पहले जमरा से शुरू किया। उसके बाद बीच वाले जमरा और तब पीछे वाले जमरा के करीब जाकर रमी की। मिना में आपने दो खुतबे दिये एक कुरबानी के दिन जिसका जिक्र अभी ऊपर गुजरा, दूसरा कुर्बानी के दूसरे दिन।

यहां आप ने तवक्कुफ फरमाया और अय्याम तशरीक के तीनों दिन की रमी मुकम्मल की, फिर मक्का की तरफ रूख किया और सहर के वक्त तवाफे वदाअ और लोगों को तैयारी का हुक्म फरमाया और मदीना की तरफ रवाना हुए।

अब आप गदीर खुम पहुंचे तो आपने एक खुतबा दिया और हजरत अली रजी की फजीलत बयान फरमाई। आपने फरमाया :–

(शेष पृष्ठ ८ पर)

चौथी किस्त

सीरतुन्नबी

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अख़लाक़

सय्यिद सुलैमान नदवी

इस्लाम का फलस्फ-ए-अख़लाक़ (नैतिक दर्शन शास्त्र)

आचरण का इतिहास उतना ही पुराना है जितना पुराना मानव–जीवन के मानसिक व शारीरिक क्रियाओं का वुजूद है। मगर इन आमाल (कर्म) की हक़ीक़त पर बहस, इनके कारणों की तलाश, इनके उसूलों की जाँच व परख और इनके मक़सद तय करने की बात यूनानियों के युग में शुरू हुई और मौजूदा ज़माने में मनोविज्ञान (साइकोलाजी) के आलोक में पुराने नज़रियों (दृष्टिकोण) पर दोबारा नज़र डाली गयी। इस काम में शुरू से आज तक फ़िलास्फ़रों में पगपग पर विवाद पैदा हुए। हर सवाल के जवाब में अनेक नज़रिये बनते और बिगड़ते रहे और नये नये फ़िर्क़े और स्कूल पैदा होते रहे और उनमें से हर एक का अलग–अलग नाम पड़ चुका है, फिर भी अगर इन सबको समेटना चाहें तो बुनियादी तौर पर यह तमाम मज़हब इन्हीं दो पुराने मसलकों (विचारधाराओं) की व्याख्या हैं जिन्हे यूनानी शब्दावली (इस्तेलाह) में "रवाकियः" और "लज़्ज़तीयः" कहा गया है। मौजूदा शब्दावली में पहले को "ज़मीरियः" और दूसरे को "अफ़ादियः" कह लीजिये या यूँ कहिये कि पहला फ़रीक़ अख़लाक़ की बिना "जज़बात" पर क़रार देता है और दूसरा "अक़्ल" पर। फिर इस विवाद की मंशा के तहत अलग–अलग अर्थ निकालने के कारण और बहुत से फ़िर्क़े पैदा हो गये। अरस्तू और उसके अनुयाइयों ने अख़लाक़ की बुनियाद नफ़्स (वजूद, काम–वासना) की तकमील को क़रार दिया।

अख़लाक़ी कानून की हक़ीक़त और असल स्रोत के बारे में भी बहुत विवाद हैं। अख़लाक़ व आचरण के अलग–अलग फिर्क़ों ने बादशाह का क़ानून, ख़ुदा का क़ानून, फितरत (प्रकृति) का क़ानून, अख़लाक़ की ज्ञानेन्द्रियों (हास्सः) की आवाज़, ज़मीर (अन्तःकरण) का कानून, विज्दानियत (सहृदयता) और अन्ततः अक़्ल का क़ानून कहकर अलग–अलग अपने नज़रियों की बुनियाद डाली है। लेकिन वास्तव में इन की भी दो ही असल तक़्सीमें हैं अर्थात् यह कि यह अख़लाक के क़नून किसी आसमानी वाणी से लिये गये हैं या किसी बाहरी स्रोत से जो लोग 'वही' व 'इल्हाम' पर ईमान न लासके, उन्होंने इन क़ानूनों का कोई बाहरी ज़रिया (स्रोत) क़रार देना चाहा। फिर किसी ने इस बाह्य स्रोत को ख़ुद इन्सान के अन्दर तलाश किया और किसी ने उससे बाहर। जिन्होंने ख़ुद इन्सान के अन्दर तलाश किया उन्होंने अलग–अलग पसन्द के साथ इन्सान की असल फ़ितरत को इन्सान में एक ख़ास हास्स–ए–अख़लाक़ी (नैतिक अनुभूति), इन्सान के विजदान (अन्तःकरण) को, इन्सान में ज़मीर (आत्मा) को, और अन्ततः ख़ुद इन्सान की अ़क़्ल को इनका स्रोत क़रार दिया। जिन्होंने इन्सान से बाहर ढूँढा उन्होंने क़बीला के सरदार और बादशाह का हुक्म या सोसाइटी की रीति–रिवाज को इनका स्रोत क़रार दिया। मगर सवाल तो यह है कि क़बीला के सरदार का हुक्म या बादशाह का हुक्म या सोसाइटी के रस्म व रिवाज की बुनियाद ख़ुद किस उसूल पर पड़ी? इसलिये लाचार इस बाह्य स्रोत को छोड़ कर फिर किसी अन्दरूनी ही स्रोत को असल बुनियाद क़रार देना होगा, वरनः अख़लाक़ी उसूल को फित्री होने के बजाय बनावटी (कृत्रिम) बताना पड़ेगा जो अख़लाक़ की समस्याओं की जननी में कभी स्वीकार नहीं किया जा सकता।"

बहरहाल दुनिया का कोई मज़हब ऐसा नहीं जो अख़लाक़ का स्रोत ख़ुदा के हुक्म के अलावा किसी और चीज़ को मानता हो। लेकिन इस्लाम इसके साथ यह कहता है कि ख़ुदा ने अपने इन अहकाम को 'वही' के अल्फ़ाज़ में बयान भी किया है और अपने बन्दों की फ़ितरत में दाख़िल भी किया है। ताकि फितरत अगर किसी वजह से ख़ामोश रहे तो अहकामे इलाही की आवाज़ उस को पुकार कर सावधान कर दे। फ़िलास्फ़रों की कोशिशों और मूशिगाफ़ियों (बाल की खाल निकालना) को छोड़कर अमली

हैसियत से गौर कीजिये तो मालूम होगा कि यह नज़रिये आपस में विरोधी होने के बावजूद भी आपस में इतने विलोम नहीं कि वह एक जगह जमा न हो सकें। हो सकता है कि हमारे अख़लाक़ का स्रोत ख़ुदा का हुक्म होने के साथ इसके समर्थक स्रोत व कारक ज़मीर, फ़ितरत, विजदान और अक़्ल सब हों। इसी तरह अख़लाक व आचरण के स्तर में भी एकता मुमकिन है। यह भी हो सकता है कि इन्सान बिना किसी व्यक्तिगत स्वार्थ को ध्यान में लाये हुए मात्र अपने स्वभाव के कारण या अन्तःकरण की पुकार से मजबूर होकर एक काम करे या अपना फ़र्ज़ समझकर उसको पूरा करे या इसके साथ कोई लोकहित भी शामिल हो और वह रूहानी तकमील का भी ज़रियः हो। इस्लाम केअख़लाक़ी दर्शनशास्त्र (फ़लस्फ़ः) में यह सब पहलू एक काम में जमा हो सकते हैं।

फर्ज़ कीजिये कि एक मज़लूम की इमदाद, ख़ुदा का हुक्म भी है और हमारी फ़ितरत के अन्दर भी यह दाखिल है, हमारे ज़मीर का भी यही तक़ाज़ा है और विजदान भी इसी तरह इस काम को अच्छा कहता है जिस तरह वह एक ख़ूबसूरत चीज़ को ख़ूबसूरत यक़ीन करने पर मजबूर है साथ ही इसके अन्दर आम फ़ायदे और मसलहतें भी हैं। और हमको इससे ख़ुशी भी होती है और अक़्ल भी यही कहती है लेकिन इसमें शक नहीं कि बहुत से ऐसे मौक़े भी हो सकते हैं जहाँ ख़ुदा, ज़मीर, फ़ितरत, जज़बात और विजदान का एक हुक्म हो और हमारी ख़ुद पसन्द और मसलहत शनास अक्ल (विवेक) दूसरी तरफ़ जा रही हो, इसीलिये आचरण के अध्याय में वह अक़्ल जो हमारी सकत के सामुहिक आदेश के ख़िलाफ़ जाना चाहती है, इस्लाह (सुधार) के लायक़ है।

सारांश यह कि ख़ुदा का हुक्म होने के साथ इस्लाम इनको इन्सान के अन्दर की आवाज़ भी कहता है, इस अन्दर की आवाज़ को चाहे फ़ितरत कहिये, विजदान कहिये, अख़लाक़ी तक़ाज़ा कहिये ज़मीर कहिये इस फ़ल्सफ़ियानः चीड़–फाड़ से इसको बहस नहीं और बावजूद इसके वह इन को अक़्ल और मसलहत और फ़ायदे पर निर्भर समझता है। इसकी तफ़सील यह है कि एक बात बिना दलील के साबित है कि इन्सान में ज़्यादातर अख़लाक़ी उसूल ऐसे हैं जिनकी अच्छाई या बुराई पर जलवायु, क्षेत्रीय विशेषताआयें, भाषा, मज़हब, रीति–रिवाज, शासन का तरीक़ः सैकड़ों मतभेद के बावजूद दुनिया की सारी कौमें बिना दलील एकमत और एकजुट हैं। इसलिये यह मानना पड़ेगा कि यह अख़लाक़ी हिस (नैतिक एहसास) हमारे अन्दर उसी तरह फ़ितरतन दाख़िल है जिस तरह दूसरे एहसासात दाख़िल हैं। अब यह कोशिश कि जिस तरह देखने, सुनने और छूकर जानने की ज्ञानेन्द्रियों के अलग–अलग नाम हैं इसी तरह अख़लाक़ी तमीज़ के लिये हमारे अन्दर कोई ख़ास अख़लाक़ी हास्सः है जिससे हम अख़लाक की अच्छाई या बुराई का एहसास और तमीज़ करते हैं या कोई अख़लाक़ी विजदान हमारे अन्दर है जिसके ज़रियः से हम इस तरह इसका एहसास करते हैं जिस तरह हम दूसरे एहसासात जैसे अच्छा, बुरा, खूबसूरती और बदसूरती का या यह कि हमारे अन्दर कोई रूहानी आवाज़ है जो हमको बरवक़्त हमारे फ़राइज़ याद दिलाती है और बताती है कि यह अच्छा है या बुरा, अमली हैसियत से कोई अहम्मियत ही नहीं रखती।

तालीम मुहम्मदी सल्ल० ने गो अख़लाक के इन उसूल व बुनियादों की तरह कहीं विस्तार में और कहीं संक्षेप में इशारे किये हैं मगर उसने इस बिन्दु को भुलाया नहीं है कि अख़लाक़ की ख़ूबी उनके इल्म व फ़लस्फ़ः में नहीं बल्कि उनके अमल में है इसलिये "इल्म बिना अमल" की कोई क़द्र व क़ीमत उसकी निगाह में नहीं लेकिन इसी के साथ "अमल बिना इल्म" को भी उसने पसन्ददीदः नहीं समझा है। इसी बिना पर उसने इन उसूलों की तरफ इशारे तो किये हैं मगर अख़लाक़ के अध्याय में इसकी ज्ञानमयी खोज को कोई अहम्मियत नहीं दी है।

इस्लाम ने अख़लाक़ का कमाल यह क़रार दिया है कि वह यहं समझ कर अदा किये जायें कि यह ख़ुदा के अहकाम हैं वह ख़ुदा के दूसरे फ़ितरी अहकाम की तरह हमारे अन्दर दाख़िल हैं। अल्लाह के इन्हीं अहकाम के मुताबिक हमारा ज़मीर, विजदान, अख़लाक़ी हास्सः और अक़्ल में से जिस एक को या सबको असल कहिये होना चाहिए। इनमें आपस में जितना ताल–मेल होगा इन्सान का रूहानी कमाल उतना ही ऊँचा होगा और इनमें जितनी कमी होगी कमाल में उतनी ही ख़राबी होगी।

एक मुसाफ़िर की इमदाद या एक बीमार की तीमारदारी यह समझ कर की जाये कि यह ख़ुदा का हुक्म

है, फिर करने वाले की आत्मा की आवाज़ भी यही होनी चाहिए, उसका विजदान भी यही हो। इसको वह अपना फ़र्ज़ भी जाने, इसके करने में वह अपने अन्दर ख़ुशी भी महसूस करे और इसी की पैरवी में मानवजाति की बड़ी जमाअत का फ़ायदा भी समझे। सारांश यह कि जिस हद तक उसके इन तमाम शक्तियों में इस बारे में आपस में एकरसता होगी उतना ही उसका रूहानी कमाल बुलन्द होगा और जिस क़द्र इसमें कमी होगी कि ख़ुदा का हुक्म समझकर भी उसके अन्दर ज़मीर और विजदान की यह आवाज़ न हो, या वह इसको अपना इन्सानी फर्ज़ न समझे या इससे उसको अन्दरूनी ख़ुशी पैदा न हो उसी क़द्र उसके रूहानी कमाल में कमी है। कितना ही नेक काम हम ख़ुदा का हुक्म समझ कर करें लेकिन अगर अन्दर से इसको नेक नहीं समझते और हमारी अक़्ल इसके ख़िलाफ़ हमको राह सुझाती है तो इसका यह साफ़ मतलब है कि अभी तक इसके ख़ुदा के हुक्म होने पर हमारा यक़ीन पुख़्तः नहीं हुआ है जिसका दूसरा अर्थ यह है कि ईमानी और रूहानी तकमील अधूरी है। इसी तरह अगर किसी नेक काम को कोई इन्सान सिर्फ़ अपने ज़मीर की आवाज़ या सिर्फ़ फ़र्ज़ या विज्दान या ख़ुशी के लिये या जनहित की ग़रज़ से करे मगर ख़ुदा के हुक्म की हैसियत का इसमें ध्यान न रखे तो वह काम भी इस्लाम की नज़र में सवाब और मन को माँझने का ज़रियः नहीं।

बेग़रज़ी (निःस्वार्थता)

चूंकि इस्लाम में अख़लाक़ भी दूसरी मज़हबी चीज़ों की तरह इबादत है इसलिये इसका मक़सद भी हर तरह की दुनियावी, नफ़सानी और ज़ाती अग़राज़ से पाक होना चाहिये। अगर ऐसा नहीं है तो इन कामों में कोई नेकी और सवाब नहीं और न इनकी हैसियत इबादत की बाक़ी रहेगी। मज़हबी कामों को छोड़कर दुनियावी कामों पर भी नज़रडालिये तो मालूम होगा कि हमारे काम में जिस क़द्र इख़लास (निष्ठा) का हिस्सा शामिल होता है उसी क़द्र वह काबिले क़द्र होता है। हम किसी मेहमान की कितनी ही ख़ातिर करें और उसके सामने कितनी ही अच्छी–अच्छी चीज़ें चुन दें लेकिन अगर उसको यह मालूम हो जाये कि इस ख़ातिरदारी की तह में ज़ाती नफ़ा या रियाकारी (दिखावा) या नुमाइश या ख़ुशामद या करने वाले की कोई ज़ाती ग़रज़ है तो हमारी यह तमाम ख़ातिरदारी और शिष्टाचार उसकी निगाह में बेक़ीमत हो जाती है लेकिन अगर हम किसी के सामने इख़लास और बेग़रज़ी के साथ नान व नमक ही रख दें तो इसकी वक़अत और क़द्र व क़ीमत की कोई इन्तेहा न रहेगी। तो जब दुनियावी कामों में इख़लास और अदम इख़लास का यह असर है तो रूहानी आलम में इनके नताइज कहाँ तक होंगे।

नीयत (संकल्प)

इसलिये आँहज़रत सल्ल० ने अपनी तालीमात में नीयत व इरादा और इन्सान के मक़सद को हर अच्छे और बुरे काम की बुनियाद क़रार दिया है बल्कि हक़ीक़त में रूहानी हैसियत से कोई काम अपने नतीजः के लिहाज़ से इतना अच्छा या बुरा नहीं होता जितना दिल की कैफ़ियत और उसके अन्दर की नीयत के लिहाज़ से होता है। एक दो मिसालों से यह हक़ीक़त ज्यादा साफ हो जायेंगी एक आदमी ने बहुत ज़ोर देकर किसी को रात के अन्धेरे में अपने घर इसलिये बुलाया कि उसको यक़ीन था कि राह के डाकू उसको मार डालेंगे या सख़्त तकलीफ़ पहुँचायेंगे। इत्तेफ़ाक यह कि वह अन्धेरे में बहक कर दूसरे रास्ते पर जा पड़ा और वहाँ अशरफ़ियों की थैली रास्ते में उसको पड़ी मिली, तो चाहे इस सफ़र का नतीजा कितना ही अच्छा हो मगर उस बुलाने वाले की नीयत की बुराई में अब भी कोई शक नहीं, और नहीं कहा जा सकता कि उसने रात को अन्धेरे में बुलवाकर उस पर एहसान किया लेकिन एक और आदमी ने उसको रात के अन्धेरे में वास्तव में उसके साथ एहसान करने ही की नीयत से उसको बुलवाया लेकिन वह इत्तेफ़ाक़ से रास्ते में किसी गढ़े या कुँए में गिर कर मर गया तो वह बुलाने वाला बदी के गुनाह का मुर्तकिब न होगा कि गो जाने वाले के सफ़र का नतीजा ख़राब निकला मगर पहले आदमी की तरह इस दूसरे आदमी की नीयत बुरी न थी।

एक दूसरी मिसाल, फ़र्ज़ कीजिये मेरी जेब में रुपयों का एक बटुआ था, इत्तेफ़ाक़ से वह रास्ते में गिर गया, जब मैं रास्ते से वापस पल्टा तो एक बटुआ पड़ा देखा.और दिल में यह ख़्याल करके कि यह किसी दूसरे का है चुपके से उठा लिया, तो यद्यपि घटना के लिहाज़ से मैंने कोई बुरा न किया मगर अपने इरादा व नीयत के लिहाज़ से बुराई कर चुका। लेकिन फ़र्ज़ कीजिये कि किसी दूसरे मौक़े पर इसी क़िस्म का बटुआ मुझको सड़क

पर पड़ा मिला और मैंने उसको अपना समझकर उठा लिया तो गो घटना कितनी ही अलग हो फिर भी मेरा दामन गुनाह की बुराई से पाक है। रास्ते में कोई चल रहा हो और एक औरत सामने से नज़र आये, उसने इसे बेगाना और ग़ैर समझकर किसी बुरी नीयत से उसकी तरफ़ हाथ बढ़ाया मगर वास्तव में वह उसकी पत्नी थी। या उसने किसी ग़ैर औरत की तरफ़ यह समझ कर हाथ बढ़ाया कि वह उकसी पत्नी है हालाँकि ऐसा न था तो पहली सूरत में उसका दिल गुनहगार हो चुका और दूसरी सूरत में उसकी बेगुनाही बिल्कुल ज़ाहिर है। नमाज़ से बढ़कर कोई नेक काम क्या हो सकता है, लेकिन अगर वह भी घमण्ड, नुमाइश, रिया और दिखावे की ख़तिर किया जाये तो वह सवाब के बजाय उल्टा अज़ाब का कारण होगा। इसी तरह आप अगर किसी माजूर (विकलांग) की इमदाद इसलिये करें कि लोग आपकी तारीफ़ करेंगे तो इस्लाम की निगाह में यह नेकी का काम शुमार न होगा। सूरः आले इमरान में हैः—

"और जो दुनिया का बदला चाहेगा उसको वह देंगे और जो आख़िरत का बदला चाहेगा उसको वह देंगे।" (१४५)

एक और आयत में इसका ख़ुलासा कर दिया गया है कि जिस काम का मक़सद सिर्फ नुमाइश और दिखावा हो वह एक छलावा और धोखा है। सूरः बक़रः में फ़रमायाः—

"ऐ ईमान वालो! तुम अपनी ख़ैरातों को एहसान धर कर और जता कर बर्बाद न करो, जिस तरह वह अपने माल को बर्बाद करता है जो लोगों क दिखावे के लिए खर्च करता है और ख़ुदा और क़ियामत पर यक़ीन नहीं रखता।" (२६४)

आँहज़रत सल्ल० ने फ़रमायाः—

"इन्सान के आमाल उसकी नीयत पर मौक़ूफ़ हैं।" और इसकी व्याख्या के लिये इरशाद फ़रमायाः—

"हर शख़्स के लिये वही है जिसकी वह नीयत करे।"

अलग़रज़ अमल का नेक व बद होना तमामतर नीयत और इरादा पर मौक़ूफ़ है और इसीलिये अख़लाक़ की बहस में इसको ख़ास अहम्मियत हासिल है। नेक नीयती न हो तो अख़लाक़ का बड़े से बड़ा काम भी सद्आचरण के दायरे से ख़रिज, दुनियावी तारीफ़ की सीमा से बाहर और रूहानी ख़ैर व बरकत और सवाब से महरूम रह जाता है।

फलस्फ़—ए—अख़लाक़ की ताईद (समर्थन)

आँहज़रत सल्ल० की अख़लाक़ी तालीम का यह वह उसूल है जिसकी अक्षरशः ताईद आधुनिक फलस्फ़—ए—अख़लाक से भी होती है। अतएव जान एस० मैकेंज़ी अपनी किताब "मैनुवल आफ़ एथिक्स" के पहले भाग के छठे अध्याय में लिखता है :—

"जिस चीज़ पर हुक्म लगाया जाता है वह साफ़ है, यानी फ़ेल इरादी, जैसा कि पहले मालूम हो चुका है, यही वह चीज़ है जिससे एथिक्स की शुरू से आखिर तक बहस होती है, इसका काम तमामतर इरादा की सही दिशा ही का बतलाना है। जो अख़लाक़ी अहकाम हम लगाते हैं उनका तअल्लुक भी इरादा से ही होता है जिस काम में इरादा शामिल नहीं उसकी अख़लाक़ी हैसियत नहीं।"

इसकी एक दो मिसालें देकर कैन्ट की राय नक़ल की हैः—

"इसलिये कैन्ट ने अपनी अख़लाक़ियात की किताब को जिस मशहूर दावे के साथ शुरू किया है उसकी हमको तस्दीक़ करनी पड़ती है। वह कहता है कि, "बिना अच्छे इरादा के दुनिया भर में बल्कि दुनिया के बाहर भी कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसको क़तई बिना किसी क़ैद व शर्त के अच्छा कहा जा सके।" (जारी)

प्रस्तुतिः एम०हसन अन्सारी

(पृष्ठ ३६ का शेष)

इस देश में विभिन्न धर्मों के लोग शताब्दियों से परस्पर पड़ोसियों की भांति रह रहे हैं, उन में आपस का टकराव पैदा होने से बचाने और हमदर्दाना मशवरे तथा समझाने बुझाने से काम लेने में अधिक लाभ है और इस के साथ दस्तूर (विधान) के हवाले से सत्ताधारियों से अपने अधिकारों की मांग करने और अधिकार प्राप्त करने के लिए उचित लोकतांत्रिक प्रयास करने का भी पूरा अधिकार है।

आजादी की लड़ाई में इन वर्गों में पारस्परिक सहयोग तथा एकता का पूरा अमल रहा है और इसका खुला हुआ फाइदा सामने आया है। उस एकता को निर्बल करने वाली शक्तियों और शक्तिमान के निर्बल के हक मारने के हालात पर कन्ट्रोल करना देश की शुभेच्छा और देश की उन्नति की प्राप्ति के लक्ष्य में सहायक कार्य है, जिस की ज़िम्मेदारी सत्ता आरूढ़ जनों पर आती है और मीडिया वातावरण को अच्छा बनाने का काम भली भांति कर सकता है। बहर हाल इस समय अन्याय को रोकने और वैयक्तिक स्वार्थ देश की शुभ चिन्तन की ओर हालात को मोड़ने की बड़ी आवश्यकता है।

उम्मते मुस्लिमा की सरफ़राज़ी

(मुस्लिम समुदाय की प्रतिष्ठा)

मौ० मुहम्मद राबे हसनी

मुसलमानों को अल्लाह तआला ने दो अहम खुसूसीयतें (महत्वपूर्ण विशेषताएं) अता फरमाई हैं। पहली खुसूसीयत यह कि उनके लिये दीन की जो बातें तय फरमाईं उनको जामिअ़ (व्यापी) और मुकम्मल (परिपूर्ण) सूरत भी अता फरमा दी। जो गुज़िश्ता (बीती हुई) कौमों को नहीं दी गई थी। लिहाज़ा अब कियामत तक इसमें कोई फर्क़ नहीं किया जा सकता, इसीलिये यह एअ़लान भी कर दिया गया कि अब दीन मुकम्मल हो चुका। दूसरी खुसूसीयत यह दी कि उनको दूसरी कौमों पर फौक़ीयत (प्रधानता) और सरबुलन्दी (उच्चता) अता फरमाई। दीन के मुकम्मल होने की बिना पर यह बात तय पा गई कि परवरदिगार की तरफ से मुकर्रर किया हुआ यह तरीक़ा ही इन्सानी ज़िन्दगी के लिये मुकम्मल ज़ाब्त–ए–अमल (कार्य प्रणाली) रहेगा और ज़िन्दगी की तमाम ज़रूरतों में काम देने वाला रहेगा और इसमें अब किसी कमी बेशी की ज़रूरत न पड़ेगी और न इसकी इजाज़त होगी, यह दीन अब मुकम्मल है और ज़िन्दगी की तमाम ज़रूरतों में काम आने वाला है तो यही दीन और इसी का तरीके कार कियामत तक रहने वाला दीन और तरीक–ए–ज़िन्दगी (जीवन नियम) है और चूंकि यह मुकम्मल और जामिअ़ है लिहाज़ा तमाम इनसानों के लिये खासतौर पर उसके मानने वालों के लिये लाज़िमी ज़ाब्त–ए–हयात (अनिवार्य जीवन नियम) है और रहेगा। और यह मुतअ़य्यन और तय शुदा होनें पर पूरी उम्मते मुस्लिमा की वहदत (एकता) का ज़रीआ़ (साधन) भी रहेगा।

दूसरी खुसूसीयत जो मुसलमानों की सरबुलन्दी की है वह भी दूसरी उम्मतों के मुकाबले में उम्मते मुस्लिमा को मुम्ताज़ (प्रतिष्ठित) करने वाली है। लेकिन उसके साथ अल्लाह तआ़ला ने यह शर्त रखी है कि अल्लाह तआला ने जो दीन यअ़नी जाब्त–ए–हयात (जीवन नियम) अता फरमाया है, उस पर मुसलमानों का अमल ईमाने कामिल के साथ हो। कुर्आने मजीद मे गुज़िश्ता अंबिया और उनकी उम्मतो के ज़िक्र के बअ़द मुसलमानों के मुतअ़ल्लिक़ फरमाया गया है "यह तुम्हारी उम्मत एक नई मुत्तहिदा उम्मत है और मैं तुम्हारा रब हूँ। लिहाज़ा मेरी ही इबादत करो" और दूसरी जगह फरमाया : "और तुम ही सरबुलन्द हो अगर तुम ईमान वाले हो।"

एक तरह तो उम्मत की वहदत (एकता) और आपस में एक होने की तरफ तवज्जुह दिलाई तो दूसरी तरफ यह बात फरमाई कि तुम ही सरबुलन्द हो और उसके साथ शर्त ईमान वाला होने की रखी। इस तरह यह हक़ीकत सामने आई कि मुसलमानों को दूसरी कौमों के मुकाबले में बरतरी (उच्चता) भी हासिल है और उनका इत्तिहाद व इत्तिफाक उनकी अहम सिफ़त और उनका बड़ा इम्तियाज़ है मुसलमानों का यह इम्तियाज़ (प्रधानता) तारीख़ में बराबर ज़ाहिर भी होता रहा है, लेकिन यह उन मौकों पर हुआ है जब उन्होंने अल्लाह की इबादत का हक अदा किया और ईमान का पूरा सुबूत दिया और जब उनसे इन दोनों बातों में कमी जाहिर हुई तो उन को नुक्सान उठाना पड़ा और परेशानी में मुबतला हुए। लिहाज़ा हमारे लिये यह बात ज़रूरी है कि दीन व शरीअ़त के मुआमले में यकजिहती इख़्तियार करते हुए हम अपनी वहदत बनाएं। दूसरे इस बात का लिहाज़ कि अपने परवरदिगार की बन्दगी ईमान के सहीह तक़ाज़ों के साथ इख़्तियार करें। हमारी काम्याबी और सुर्ख़रूई का अस्ल राज़ इसी में है और यह बात उसी वक़्त हो सकती है कि हम बराबर अपनी ज़िन्दगी का जाइज़ा लेते रहें कि हमारा आपस का तअल्लुक और आपसी तआवुन (सहयोग) अपने परवरदिगार (पालनहार) के हुक्म के मुताबिक (अनुकूल) हो, और वह हमारी दुन्यावी मन्फअ़त (लाभ) से बुलन्द और हमारे ज़ाती अग़राज़ से बरतर हो और दूसरे यह कि हमारी ज़िन्दगियों में खुदा और रसूल की फरमाँबरदारी सहीह तौर पर और मुख्लिसाना हो। हम अपने हर अमल पर यह नज़र रखें कि वह खुदा और रसूल के हुक्म में आता है या नहीं। अगर हम अपनी ज़िन्दगी के कामों का जाइज़ा लेते रहें और उस जाइज़े की बुन्याद पर अपने को सीधे रास्ते पर जमाए रखने की कोशिश करते रहें तो हमको दूसरों के

मुकाबले में सरबुलन्दी हासिल रहेगी और हमको कोई तोड़ न सकेगा न दबा सकेगा और खुदाए तआ़ला की तरफ से हमको हमारे मसाइल में मदद मिलती रहेगी, और बरकत भी हासिल होगी।

इस वक्त मुसलमानों के मजमूअी तौर पर जो हालात हैं वह इस तरह के हैं कि दुन्या में हर तरफ से उनको गिराने और नुक्सान पहुंचाने की कोशिशें की जा रही हैं, हर जगह मुसलमानों को सख़्त हालात का सामना करना पड़ रहा है, ऐसे हालात में मुसलमानों को उनके परवरदिगार की तरफ से अता की हुई खुसूसीयत को तवज्जुह से इख़्तियार करने और अपनाने की ज़रूरत है वर्ना वह अपने इस इम्तियाज़ को काइम न रख सकेंगे और उन पर वह पेशीनगोई मुन्तबिक हो जाएगी जो हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की हदीस में ज़ाहिर फरमाई गई है कि "तुम पर एक वक़्त ऐसा आएगा कि सारी कौमें तुम पर ऐसा टूट पड़ेंगी की जैसा खाने वाले खाने पर टूट पड़ते हैं। पूछा गया कि क्या यह मुसलमानों की तअ़दाद कम होने के सबब से होगा? फरमाया नहीं मुसलमान तो उस वक़्त कसरत से होंगे मगर उनकी हैसीयत ऐसी होगी जैसी कि बहते हुए पानी पर झाग की होती है यअ़नी उनकी हैसीयत पानी के मुकाबले में झाग की होगी" ज़ाहिर है उनकी यह कमज़ोरी ईमान और अहकामे खुदावन्दी की फरमांबरदारी में कोताही की वजह से होगी उम्मते मुस्लिमा की ताकत और सरबुलन्दी का राज़ उसकी इन्हीं मज़कूर–ए–बाला (उपरोक्त) खुसूसीयतों में है और इसी में बहुत कमज़ोरी देखी जा सकती है। इस कमज़ोरी को दूर करने की तरफ बड़ी तवज्जुह की ज़रूरत है। हम मुसलमानों के मुख्तलिफ तबकात पर नज़र डालते हैं तो नज़र आता है कि दुन्या की चमक दमक के सामने हम मग़लूब (पराजित) हो चुके हैं और दीन के सहीह तकाज़ों का लिहाज़ करने से पूरी पहलू तिही करते हैं। हलाल व हराम के बीच फर्क करने में भी बहुत कोताह हैं और ज़ाहिर दारी के दुन्यावी तरीक़ों में फंसकर शरीअ़त पर अ़मल करने से दूर जा चुके हैं।

बहरहाल हमको अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि हम अपनी ज़िन्दगी में जब तक दीन को अव्वलीयत (प्राथमिकता) नहीं देंगे अल्लाह तआ़ला की मदद और रहमत हमको हासिल न होगी। ज़रूरत है कि उम्मत के जो दानिश्वर (बुद्धिजीवी) और रहबर हज़रात हैं वह खुद भी इन बातों का लिहाज़ करें और आम मुसलमानों और नावाकिफ (अनजानों) को अपने परवरदिगार (पालनहार) के अहकाम की ताबिअ़दारी की अहम्मीयत से वाकिफ़ कराएं। यही तरीक़ा मुसलमानों को उनका मकामे बुलन्द दिलाने वाला है, जिसके लिये परवरदिगारे आलम ने अपने इस उपदेश में बताया है कि "तुम ही सरबुलन्द (प्रतिष्ठित) हो अगर तुम ईमान वाले हो।"

अगर आपको सच्चा राही अच्छा लग रहा है तो आप कम से कम एक नया खरीदार बनाइये।

(सम्पादक)

बुलाकर दर पे फरमाया दुआ कर

खैरुन्निसा बेहतर

न कर महरूम मुझ को अब बुलाकर
किया वअ़दा जो है तू ने वफ़ा कर
मैं हूं क्या और मेरी ख़्वाहिशें क्या
तू अपनी शान के लाइक़ अ़ता कर
थी ये तेरी ही तो बस शाने क़ुदरत
बुला कर दर पे फ़रमाया दुआ कर
न क्यों मांगूं न क्यों पाऊं मैं तुझ से
वह निअ़मत दे कि ख़ुश हो जाऊं पाकर
किया जो कुछ तलब तूने दिया है
फिरी ख़ाली नहीं दर पर मैं आकर
मिरी इस दम पे यारब शर्म रख ले
किया जो जो तलब या रब अ़ता कर
मक़ासिद सब मेरे या रब बर आएं
करम से अपने हासिल मुद्दआ़ कर
घटाएं ज़ुल्म की बस छा रही हैं
उठा ले तू मेरे यारब बचा कर
नहीं ताक़त है मुझ में कि उठाऊं
मुझे तो क़ैदे ग़म से अब रिहा कर
सिपर बन जाएं मेरी सब दुआ़एं
बलाएं और मुसीबत सब फ़ना कर
हो बस इस्लाम का अब बोलबाला
तू अब मक़्बूल बेहतर की दुआ़ कर

ज़िन्दगी का असल सरमाया :

ख़ुदा और रसूल की महब्बत है

मौ० अब्दुल्लाह हसनी नदवी

सहाबा की महब्बत की कुछ घटनाएं

सहाबाएक्राम को अल्लाह ने जिस प्रकार प्रत्यक्ष और आंतरिक (ज़ाहिरी व बातिनी) असाधारण कमालात और विशेषताओं से सुसज्जित किया था उसी तरह उनके अन्दर प्रेम व महब्बत जान निछावर करने और अल्लाह व रसूल के लिये सब कुछ कुर्बान कर देने का जज़्बा अपनी पूरी तवानाई (ऊर्जा) और कमाल के साथ मौजूद था।

अगर सहाबाएक्राम का इतिहास देखा जाए तो मालूम होगा कि उनमें से हर शख्स अपने अन्दर महब्बत की अदा की सुन्दरता का कोई न कोई पहलू रखता है। रफ़ीके ग़ार, सच्चे आशिक सिद्दीके अकबर (हज़रत अबूबक्र) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्बत में सरशार और हर तरह की कुरबानी देने को हमेशा तैयार रहते थे।

अगरचः यह अपनी कौम में प्रतिष्ठित थे न जाने कितने कुचले पिसे मुसलमानों को उठा चुके थे, कितने लोगों को कलमा पढ़ा चुके थे लेकिन एक समय ऐसा भी आया कि मक्का के मुश्रिकीन उन पर पिल पड़े और इतना मारा पीटा कि यक़ीन हो गया कि वह इस संसार से विदा हो गये। मौत का यक़ीन होने पर हाथ रोका लेकिन खुदा का ऐसा करना कि वह बच गये। घर पर देर में होश आया। आंखें खोलीं तो महबूब के जलवे की इच्छा हुई। कहने वालों ने कहा कि जिनकी खातिर यह तकलीफ उठानी पड़ी फिर उन्हीं का ज़िक्र? सुनते ही तड़प गये, बेचैन होकर ज़बान से निकला जब तब आंखें उनके दर्शन से रौशन नहीं हो जातीं उस समय तक खाना पीना हराम है।

जब रात का सन्नाटा हुआ तो अपनी माता और उम्मे जमील के सहारे महबूब के दरबार में हाज़िर हो गये देखते ही सारा कष्ट दूर हो गया, परेशानी काफूर हो गई। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी अपने चाहने वाले को देखकर रो पड़े। इसी महब्बत का चमतकार था कि सौर गुफ़ा (ग़ारे सौर) में सिद्दीक अकबर पहले गए कि अपने महबूब के लिए जगह साफ कर दें ताकि कोई मामूली तकलीफ न पहुंच पाए। पूरी हिजरत यात्रा में प्रेमी और प्रिय, आशिक़ और माशूक की दिल लुभावन अदाओं को आकाश और धरती भी प्रशंसा करते रहे। कभी रश्क (ईर्ष्या) की निगाहों से तमाशा–ए–महब्बत देखते और बाद में आने वालों को पैग़ामे महब्बत सुनाते और कुरबानी के जज़्बे का पाठ पढ़ाते रहे।

हज़रत तय्यब रज़ि० को मुश्रिकीन पकड़ लेते हैं। अब वह उनके रहमोकरम (दया) पर हैं कि एक गुलामे मुहम्मद हाथ आया, महब्बत का इमतिहान होता है, सूली की तैयारी है। आवाजे कसे जा रहे हैं फबतियां उड़ाई जा रही हैं कि एक ने सम्बोधित करते हुए कहा कि अगर तुम्हारी जगह मुहम्मद होते और तुम अपने घर पर आराम और चैन से होते तो कैसा था? सुनते ही महब्बत से भरा दिल का पैमाना छलक गया। फरमाया सुन ऐ मूर्ख। मैं तो यह भी सोच नहीं सकता कि हमारे हज़रत को एक कांटा भी चुभे और मैं सुख शान्ति से रहूँ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ैफ़ा सहमी को रूमियों ने बन्दी बना लिया। उनके साथी भी गिरफ्तार हुए। ईसाइयों ने तो पहले लालच दिया कि अगर ईसाई हो जाओ तो पद, सम्मान और धन दौलत से मालामाल कर दिये जाओगे लेकिन जब उसका कोई प्रभाव नहीं हुआ तो उन्होंने धमकियों का सहारा लिया। डराते, धमकाते कष्ट पहुंचाते रहे। उसका भी कोई असर नहीं हुआ। अन्त में उनको लाकर यह कहा कि आज अगर नहीं मानते तो खौलते हुए तेल में डाल दिया जाएगा उनके एक साथी को उनके सामने डाला भी गया। नतीजा मालूम था। उनको भी उसके निकट लाया गया ताकि उनको भी खौलते तेल में डाल दिया जाए। उन की आँखों से आंसू जारी हो गए। यह देखकर ईसाई समझे कि यह डर गए। सम्बोधित करके कहा बोलो अब तो स्वीकार कर लो। उन्होंने उसका ऐसा उत्तर दिया जिसका उनको ख्याल भी नहीं हो सकता था। उन्होंने फरमाया मैं इसलिए नहीं रो रहा हूँ कि मेरा यह हश्र (परिणाम) होने वाला है। मैं इस ख्याल से रो रहा हूँ कि मेरी एक अकेली जान है, अभी वह चली जाएगी काश!

हर रोएं से एक अब्दुल्लाह निकलता और तमाम बार उसको खौलते हुए तेल में डालते ताकि अल्लाह के सामने हजार जानें पेश करके सुरखुरू (प्रसन्न मुख) हो सकता।

ऐ दिल तमाम नफअ़ है सौदा–ए–इश्क में।
एक जान की ज़ियां है सो ऐसी ज़ियां नहीं।।

जंगे उहद के अवसर पर एक खातून (महिला) आती हैं। रास्तें में भाई, पति, बेटे की शहादत की सूचना मिलती है। हर बार वह यही पूछती हैं, हमारे हुजूर सल्ल० कैसे हैं? इस पर यह कहा जाता है वह ख़ैरियत से हैं। कहती हैं मैं ज़रा उन का दर्शन कर लूं। देखते ही उनकी ज़बान से यह वाक्य निकल पड़ता है "आप के होते हुए हर मुसीबत हेच (तुच्छ) है। महब्बत की अदाएं निराली होती हैं। आंखों में महबूब का जलवा (छवि) और दिल में उसका ख़्याल। न जान उसकी होती है न सोच, न माल उसका होता है न धन। गुलशने इश्क के फूल गुलिस्तां (पुष्प वाटिका) की आबरू होते हैं और कौसे क़ज़ह (इन्द्र धनुष) से ज़ियादा सुन्दर होते हैं। उसमें दाखिल होने वाले आज़ाद होते हैं क्योंकि महब्बत व इश्क का क़लावह (तौक़) अपनी गर्दन में डालकर हर चीज़ से आज़ाद हो जाते हैं।

मुआविया बिन किर्रः दरबार में हाज़िर हुए हैं। दिल बेताब हैं आँखें बेक़रार जलव–ए–हुस्नो जमाल (रसूलुल्लाह की सुन्दर छवि) सामने आता है। नज़र गले पर पड़ती है,बटन खुला हुआ था। यह अदा बाप बेटे के दिल में ऐसी समाई कि पूरी ज़िन्दगी दोनों ने गले के बटन नहीं लगाए।

हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म के सेवक सय्यदना अनस रजिअल्लाह अनहु ने उनको लौकी के टुकड़े बड़े रुचि व उल्लास से खाते देखा पसन्द बदल गई। लौकी ऐसी रुचिकर (पसन्द) हो गई कि उसी को खाना पसन्द करते थे कि उनकी चीज़ों से महबूब की अदाएं और उसकी दिलनवाज़ी झलकती थी।

पसन्द उनकी पसन्द अपनी,
नज़र उनकी नज़र अपनी।

पसन्द अपनी, नज़र अपनी नहीं होती महब्बत में।।

पाकबाज़ आशिकों और पवित्र प्रेमियों और जान निछावर करने वालों की संख्या इतनी अधिक है कि उनके लिए बड़े–बड़े दफतर नाकाफी हैं। यह चन्द्र घटनाएं इसलिए बयान कर दी गईं कि इश्क के दावेदार और महब्बत के इच्छुक इससे फायदा उठा सकें और जो इस नेअ़मत (सुख सामग्री) से वंचित हैं वह भी अपने दिल को दिल बना सकें–

महब्बत को समझना है तो ऐ ज़ाहिद महब्बत कर।
किनारे से कभी आन्दाज़े तूफां हो नहीं सकता।

मिल्लत का नव्वे फ़ीसद पढ़ा–लिखा नव जवान सिर्फ़ हिन्दी ज़बान जानता है, ऐसे नव जवानों तक "सच्चा राही" पहुंचाना सवाब का काम है उम्मीद है कि आप यह सवाब हासिल करेंगे।

–सम्पादक

आग और पानी की तरह इस्लाम और आतंकवाद कभी एक नहीं हो सकते : मौ० उस्मान रहमानी

लुधियाना (अलअहरार) मजलिस अहरार इस्लाम हिंद के यूनिट गुलाबी बाग टिब्बा रोड की ओर से हजरत मुहम्मद साहब स० की याद में जलस–ए–खत्मे नुबूव्वत का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता लुधियाना की इतिहासिक जामा मस्जिद के नायब शाही इमाम मौलाना उसमान रहमानी लुधियानवी ने की, इस मौके पर इंडियन मुस्लिम कौंसिल पंजाब के अध्यक्ष जनाब अतीकुर्रहमान लुधियानवी, बज्मे हबीब के अध्यक्ष जनाब हसन कैसर, मुहम्मद उसमान, मो. हनीफ, मो० अशरफ, शहजाद बंगाली, मो. कुरबान, हाफिज नईमुद्दीन, एहसान कुरैशी, साबिर इकबाल, मुस्तकीम अहरारी विशेष रूप से उपस्थित थे।

इस मौके पर लुधियाना जामा मस्जिद के नायब शाही इमाम मौलाना उसमान रहमानी ने जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि हजरत मुहम्मद सल्ल० को अल्लाह तआला ने दुनिया और इंसानियत के लिए नबी–ए–रहमत बना कर भेजा है, और इन के बाद कयामत तक कोई नबी नहीं आ सकता, उन्होंने कहा कि हजरत मुहम्मद सल्ल० ने जो पैगाम, अमन और भाई चारे का दिया है मुसलमानों और पूरी दुनिया के इंसानों व हुकमरानों को दिया उस पर अमल करना चाहिए, तभी पूरी दुनिया में अमन व शांति आ सकती है, उन्होंने कहा कि जिस तरह आग और पानी एक नहीं हो सकते उसी तरह मुसलमान और आतंकवाद का कोई मेल नहीं, क्योंकि कुछ लोग इस्लाम का नाम लेकर बेकुसूर लोगों को कत्ल करते है ऐसे लोगों के साथ इस्लाम और मुसलमानों का कोई लेना देना नहीं, उन्होंने कहा कि हजरत मुहम्मद सल्ल० ने बेकुसूर निहत्ते लोगों की हत्या करने से मना फरमाया है।

इस मौके पर इंडियन मुस्लिम कौंसिल पंजाब के अध्यक्ष जनाब अतीकुर्रहमान लुधियानवी ने कहा कि हजरत मुहम्मद सल्ल० के दुनिया में आने से पहले लोग अपनी बेटियों को जिंदा दफन कर दिया करते थे, हजरत मुहम्मद सल्ल०ने आज से १४ सौ साल पहले इस बुराई के खिलाफ संघर्ष किया और पूरी दुनिया के लोगों को बताया कि बेटी अल्लाह की रहमत है। इसको जिन्दा दफन करना या कत्ल करना गुनाह है।

संक्षिप्त इस्लामी इतिहास

अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी

मिस्र की अब्बासी ख़िलाफ़त

बग़दाद की तबाही के बाद अब्बासी खान्दान के दो शख़्स वहां से किसी प्रकार निकल भागे। एक अबुल क़ासिम अहमद बिन ज़ाहिर बिल्लाह और दूसरा अबुल अब्बास अहमद मुसतरशद बिल्लाह। अबू अब्बास तो हलब में रह गया लेकिन अबुल क़ासिम रजब ६५६ हि० में मिस्र पहुंचा। उस ज़माने में यहाँ मालिक ज़ाहिर बीपरस बादशाह था उसने बड़ी आवभगत की। एक बड़ा दरबार किया जिसमें अमीर, वज़ीर आलिम, काज़ी सब इकट्ठा हुए। उन सबके सामने क़ाज़ी ताजुद्दीन ने नसब (वंशज) की जांच की। जब अच्छी तरह साबित हो गकया कि अबुल क़ासिम सचमुच अब्बासी हैं तो उसके हाथ पर ख़लाफ़त की बैअ़त हुई और बग़दाद की तबाही के तीन वर्ष बाद फिर मिस्र में खलाफ़त का सिलसिला शुरू हो गया लेकिन उनके पास कोई दुन्यावी ताक़त न थी, केवल उन्हें दीनी इज़्ज़त हासिल थी। अब तय हुआ कि दोनों भाई मिलकर तातारियों पर हमला करें। मलिक ज़ाहिर ने दस लाख दीनार से सामान ठीक किया और मुसतनसिर (अर्थात अबुल क़ासिम) रवाना हो गया। ३ मुहर्रम ६६० हि० को तातारियों से मुक़ाबला हुआ लेकिन मुसलमानों की पराजय हुई और मुसतनसिर (अबुल क़ासिम) मारा गया।

इसके बाद अबुल आ़स हलब से बुला कर हाकिम बिल्लाह के नाम से खलीफ़ा बनाया गया। ऊपर हम बयान कर चुके हैं कि यह लोग केवल नाम के खलीफ़ा थे। उनकी जो कुछ हक़ीक़त थी केवल दीनी थी। दुन्यावी ताक़त उन्हें कभी प्राप्त नहीं हुई और यह लोग हमेशा मिस्र के बादशाहों के मातह रहे और केवल गुज़ारा पतो रहे। अतः इसका पूरा वर्णन बेकार है। इस सिसिले में केवल नाम लिख देना काफी है।

(१) अबुल क़ासिम मुसतनसिर–६५६–६६० हि० अबुल अब्बास हाकिम ६६०–७०० हि०, मुसतकफ़ी प्रथम ७०१–७४० हि०, वासिक़ ७४०–७४१ हि०, हाकिम द्वितीय ७४१–७५२ हि०, मुअ़तज़िद प्रथम ७५३–७६३ हि०, मुतवक्किल ७६३–८०८ हि० मुसतअ़ीन ८०८–८१५ हि० चन्द महीनों के लिए उसे दुन्यावी ताकत भी हासिल हुई लेकिन फिर हटा दिया गया।

माअ़तज़िद द्वितीय ८१५–८४५ हि० मुकतफी द्वितीय ८४५–८५४ हि०, काईम–८५४–८५६ तनजिद ८५६–८८४ हि० क़ैद किया गया। मुतवक्किल द्वितीय ८८४–९०३ हि०, मुसतमसिक ९०३–९२० हि०, मुतवक्किल तृतीय ९२०–९२३ हि०, यह सबसे आखिरी अब्बासी खलीफ़ा हुआ। ९२३ हि० में उसमानी सुलतान सलीम प्रथम ने मिस्र, शाम, अरब को फ़तह करके अपने राज्य में मिला लिया।

उन्दुलुस (स्पेन)

उन्दुलुस यूरोप के दक्षिणी में उत्तरी अफरीका के मुल्क मराकश के पास एक देश है। मराकश और स्पेन के बीच में पानी की केवल एक लकीर है। हज़रत उसमान रज़ि० के ज़माने में मुसलमान उत्तरी अफरीका के कोने तक पहुंच गए थे। अमीर माविया के ज़माने में वह आगे बढ़े और वलीद के ज़माने में (९२ हि०) मशहूर मुसलमान जनरल तारिक़ ने उन्दुलुस के बादशाह राडर्क की एक लाख फौज को बारह हजार फौज से पराजित करके देश पर कब्जा कर लिया।

मुसलमानों ने इस देश पर छः सौ वर्ष तक हुकूमत की और वहां ऐसे बस गए थे कि अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता था कि वह कभी इस देश से ऐसे निकल जाएंगे कि एक मुसलमान भी वहां बाक़ी नहीं रहेगा।

ठीक उसी समय जब तुर्क यूरोप के देशों में आगे बढ़ रहे थे, यूरोप की दूसरी तरफ़ अरब कमजोर होकर अपने बुज़ुर्गों की छः सौ वर्ष की कमाई को बरबाद कर रहे थे। जब तक बनी उमय्या की दशा ठीक ठाक रही, उन्दुलुस का प्रबन्ध भी ठीक रहा लेकिन ज्यों ज्यों उनके शासन में कमजोरी आती गई, यहां की हालत भी खराब होती गई।

सन् १३२ हि० जब बनी अब्बास के हाथों अमवियों का खातमा हुआ तो

अब्दुल मलिक का परपोता अब्दरुर्रहमान अलदाख़िल किसी तरह जान बचाकर उन्दुलुस पहुंचा। यहां उस ज़माने में विचित्र अफ़रातफरी फैली हुई थी। अरब और बरबर एक दूसरे के दुश्मन थे मदनी व दमिशकी आपस में लड़ रहे थे और सबसे बढ़कर यह कि अरब के दो क़ीबीले हुमैरी और मुज़री एक दूसरे को खाये जाते थे। आपस के इन झगड़ों की वजह से मुल्क तबाह हो गया था और क़रीब था कि बिलकुल ईसाइयों के अधिकार में चला जाए कि इतने में अब्दुर्रहमान अलदाखिल ने कदम रखा। उसने कुछ ऐसी नीत और उपाय से काम लिया कि थोड़े ही दिनों में सारा देश क़ब्ज़े में आ गया और उन्दुलुस में फिर से अमवी हुकूमत काइम हो गई जो सन् ४२४ हि० तक बाकी रही। इस खान्दान में पन्द्रह बादशाह हुए जिनके नाम निम्नवत हैं:–

(१) अब्दुर्रहमान अलदाखिल (२) हश्शाम प्रथम (३) हकम प्रथम (४) अब्दुर्रहमान द्वितीय (५) मुहम्मद (६) मुनज़िर (७) अब्दुल्लाह (८) अब्दुर्रहमान अलनासिर (९) हकम द्वितीय (१०) हश्शाम द्वितीय (११) मुहम्मद मेंहदी (१२) सुलेमान मुसतईन (१३) अब्दुर्रहमान मुसतज़हिर (१४) सुलैमान मुसतकाफ़ी (१५) हश्शाम मोअ़तमिद। कोई चार सौ साल तक इस खान्दान की हुकूमत रही। सबसे पहले अब्दुर्रहमान बादशाह हुए और अपनी मेहनत व तवज्जुह से सारे झगड़े फसाद दूर कर दिये। उनके बाद हकम प्रथम उनके बाद हश्शाम प्रथम, फिर अब्दुर्रहमान द्वितीय बादशाह हुए। उन लोगोंने बड़ी योग्यता व तत्परता से काम किया और उस उन्दुलुस को जो पहले उजाड़ और तबाह था अपनी योग्यता व नीति और मेहनत व तवज्जुह से गुलज़ार बना दिया। जिस जगह पहले धूल उड़ती थी वहाँ हरे भरे बाग़ लहलहाते खेत, बहती नहरें, शान्दार कारखाने और सुन्दर महल खड़े हो गए। जिहालत व बेइल्मी की जगह इल्म की चर्चा होने लगी और जंगलीपन के बदले इंसानियत पैदा हो गई। अब्दुर्रहमान द्वितीय के बाद मुहम्मद, मुतज़िर और अब्दुल्लाह बादशाह हुए लेकिन उनमें अपने बुजुर्गों जैसी हिम्मत थी न वैसी योग्यता। नतीजा यह हुआ कि देश भर मे फिर उधम मचने लगा और देश का विभाजन शुरूअ़ हो गया। हालत यह थी कि ३०० हि० अब्दुर्रहमान अलनासिर तख़्त पर बैठा, उस समय देश की दशा बहुत खराब हो चुकी थी। एक तरफ ईसाइयों का ज़ोर था दूसरी तरफ खुद मुसलमानों में विभेद (तफ़रक़ा) था। कोई और होतां तो घबरा कर भाग खड़ा होता लेकिन अब्दुर्रहमान को अल्लाह ने अनोखा दिल व दिमाग़ दिया था। उसने ऐसे ध्यान से काम किया कि थोड़ी ही मुद्दत में सारे दुश्मन दब गए और हर तरफ़ उसके नाम का डंका बजने लगा।

अब्दुर्रहमान अन्नासिर को इमारतों का बड़ा शौक था। उसने ऐसी नफीस सुन्दर इमारतें बनवाईं जिन्हे देखकर अकल चक्कर में आ जाती थी। राजधानी क़रतबा की रौनक व आबादी का क्या कहना। सोलह मील की लम्बान और छः मील की चौड़ान में आबाद था। एक लाख तेरह हजार मकानात, अस्सी हज़ार चार सौ दुकानें, सात सौ मस्जिदें, नौ सौ स्नानगृह (ग़ुसुलखाने) और चार हजार तीन सौ गोदाम थे, शाही महल, अमीरों, वज़ीरों की कोठियां उसके अलावा थीं। कुल आबादी दस लाख से ऊपर थी।

शहर में जगह जगह सुन्दर पार्क और फूलों से लदे हुए बाग़ थे। क़दम क़दम पर संगमरमर के फ़ौवारे जारी थे। रास्तों और गलियों में पत्थर का फ़र्श था। सड़कों पर सामियाने लगे हुए थे ताकि गर्मी में मुसाफिरों, दूकानदारों और चलने फिरने वालों को कष्ट न हो। बाज़ार सारी दुन्या के सामान से भरे रहते थे यात्रियों और सौदागरों के आराम के लिए बड़ी–बड़ी सरायें बनी हुई थीं जहां जरूरत की तमाम चीज़ें मोजूद रहती थीं।

क़रतबा से मिला हुआ ज़ुहरा का वह नगर था जिसकी खूबी और सुन्दरता की कहानी आज तक प्रसिद्ध है और जिसकी इमारत के सामने दुन्या की तमाम इमारतें हेच हैं।

नासिर के बाद हकम बादशाह हुआ और बाप ही की तरह हुकूमत चलाता रहा। इन लोगोंकी क़दरदानी के कारण सारी दुन्या के विशेषज्ञ क़रतबा में जमा हो गए। सैंकड़ों स्कूलों और कालेज क़ाईम थे जहाँ बड़े–बड़े योग्य व कुशल अध्यापक हजारों विद्यार्थियों को शिक्षा देते थे। घर–घर पुस्तकालय मौजूद थे जिनमें हर प्रकार की किताबें रहती थीं। खुद हकम का पुस्तकालय संसार में बेमिसाल था। इसमें कई लाख पुस्तकें थीं जिनकी सूची चौव्वालिस प्रतियों में थी। हकम के शौक और योग्यता का अनुमान इस से कर सकते हैं कि हर पुस्तक उसकी नज़र से गुजरी थी और उस पर उसकी राय और हस्ताक्षर थे।

सन् ३६६ हि० में हकम का देहांत हो गया और देश में फिर

अव्यवस्थता शुरू होने लगी लेकिन वज़ीर मंसूर की योग्यता व नीति और हिम्मत व बहादुरी से हालत फिर सुधर गई और सलतनत की ऐसी तरक़्क़ी हुई कि ख़लीफ़ा अब्दुर्रहमान अलनासिर का ज़माना आँखों के सामने आ गया। सन् ३६४ हि० में मंसूर का देहान्त हो गया और उनकी जगह उनके बेटे वज़ीर नियुक्त हुए लेकिन उन लोगों में इतनी योग्यता न थी। नतीजा यह हुआ कि फिर गड़बड़ शुरू हो गई और एक सलतनत के बजाय बीसों छोटे–छासेटे राज्य क़ाईम हो गए।

इसाइयों के लिए इससे अच्छा अवसर कौन हो सकता था। तुरंत उठ खड़े हुए और मुसलमानों पर हमले शुरू कर दिये। पचास साठ साल की गड़–बड़ में ईसाई बड़े शक्तिशाली हो गए और लगभग सारा देश उनके प्रभाव में हो गया। अगर कुछ दिन और यही दशा रहती तो मुसलमान पूरी तरह समाप्त हो जाते लेकिन अल्लाह ने समझ दी और उन्होंने मिलकर मुकाबले का इरादा किया लेकिन अभी कमज़ोर थे। इसलिए उन्होंने मराक़श के बादशाह यूसुफ़ बिन तशक़ीन से सहायता मांगी। यूसुफ तुरंत एक बड़ी फौज के साथ उन्दुलुस पहुंचा ४७६ हि० में ज़लाक़ा के स्थान पर अलफाँसू शष्टुम स्पेन के ईसाइ बादशाह से मुकाबला हुआ। अल्लाह ने मुसलमानों को सफलता दी। ईसाइयों को ऐसी पराजय हुई कि मुश्किल से पांच सौ सवार ज़िन्दा बचे। विजय के बाद मुल्क मुसलमानों को सुपुर्द करके यूसुफ वापस चले गए लेकिन यहां फिर आपस के झगड़े शुरू होने लगे तो सन् ४८३ हि० में आकर मुल्क पर कब्ज़ा कर लिया और एक बार फिर सारा उन्दुलुस एक झण्डे के नीचे आ गया।

सन् ५४२ हि० तक यह खान्दान हुकूमत करता रहा लेकिन यूसुफ के देहान्त ५०० हि० के बाद हालत फिर खराब होने लगी और ईसाइयों ने जोर पकड़ना शुरू किया लेकिन अल्लाह ने फिर अपनी कृपा की। अफरीका में एक नये खान्दान (मूहहिदीन) का प्रभाव बढ़ने लगा जो बढ़ते बढ़ते उन्दुलुस तक पहुंच गया। ५४५ हि० तक पूरे देश पर उनका अधिकार हो गया जो ६२८ हि० तक बराबर चलता रहा।

इस खान्दान में (१) अब्दुल मोमिन (२) यूसुफ़ बिन अब्दुल मोमिन (३) याकूब अलमंसूर (४) मुहम्मद अलनासिर मशहूर बादशाह हुए। उनके जमाने में मुसलमान बहुत शक्तिशाली हो गए और देश में फिर रौनक आ गई। ईसाइयों ने कई बार सिर उठाया लेकिन हर बार पराजित हुए। अन्तिम युद्ध ओक़ाब क़िले के पास ६०६ हि० में हुआ। इस युद्ध में मुसलमानों की पराजय हुई जिसके बाद मूहहिदीन बराबर कमजोर होते गए और बीस वर्षों के भीतर उनकी ताक़त हमेशा के लिए समाप्त हो गई।

अनुवाद– हबीबुल्लाह आज़मी

-: अपने देश को जानिये :-

लाहुलस्पिति : पर्यटकों के लिए 'हिमाचल का करिश्मा' और नौकरीपेशे से जुड़े लोगों के लिए 'काला पानी की सज़ा स्थल के नाम' से मशहूर 'काजा' यहीं है. रोहतांग दर्रे के उस पार बसा यह स्थल दुनिया के पर्यटकों के बीच काफी लोकप्रिय है.

कसौली : नयनाभिराम और दिलकश नजारोंसे भरपूर कसौली में अंगरेजों के बनाए बंगले और कोठियां आज भी पर्यटकों और सैलानियों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं. प्रख्यात लेखक रास्किन बांड का जन्म यहीं हुआ था.

एसटीडी कोड : ०१६००२

अमृतसर : स्वर्ण मंदिर के लिए प्रसिद्ध यह शहर करीब ४२५ वर्ष पुराना है जो कला, स्थापत्य, संस्कृति और इतिहास की जीती जागती मिसाल है. इस शहर का शिलान्यास लाहौर के हजरत मियां मीर ने किया था.

एसटीडी कोड : ०१८३

चंडीगढ़ : स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत का यह पहला शहर है जिसे सुव्यवस्थित तरीके से बसाया गया. इंडोफ्रांस शिल्प के बेहतरीन नमूने के यप में पहचाने जाने वाले इस शहर के राक गार्डन, सुखना झील, रोज गार्डन में पर्यटकों की भीड़ हर मौसम में देखने को मिलती है.

एसटीडी : ०१७२

आस्टियोपोरोसिस

स्नेह ठाकुर

कमला अस्पताल में हैं. उनकी आयु ८० के करीब है. फिर भी उम्र के लिहाज से अब तक ठीकठाक चलफिर रही हैं और अपना काम खुद ही निबटा लेती हैं यही नहीं बहू के काम में भी कुछ मदद कर देती हैं. रात को बाथरूम के लिए उठीं तो उठते ही गिर गई थीं.

आस्टियोपोरोसिस में इसी तरह बहुत बार बिना किसी दुर्घटना या चेतावनी के शरीर की हड्डी चटक जाती है, टूट जाती है क्योंकि यह हड्डी की कमजोर करने वाली एक अवस्था है जिसमें हड्डियाँ सहज में टूटने वाली (ब्रिटल) बन जाती हैं.

हड्डियां जीवित ऊतक हैं. पुरानी हड्डी लगातार नई हड्डी से बदलती रहती है. हर दिन आस्टियोक्लास्ट्स कहलाने वाली कोशिकाएं हड्डी तोड़ती हैं और दूसरे प्रकार का आस्टियोब्लास्ट्स नामक सेल नई स्वस्थ हड्डी बनाकर टूटी हुई हड्डी की मरम्मत की कोशिश करता है.

जिंदगी के दौरान इस प्रक्रिया की गति बदलती रहती है. ३० से थोड़ी ज्यादा उम्र तक आस्टियोब्लास्ट्स हड्डी की हानि से ज्यादा हड्डी बनाता है. ३० से ५० की उम्र तक जिस अनुपात में हड्डियां खोती हैं उसी अनुपात में हड्डियां बनती भी हैं.

औरतें जब रजोनिवृत्ति (मेनोपाज) की अवस्था में पहुंचती हैं और पुरुष अपनी ५० की उम्र में पहुंचते हैं तो यह प्रक्रिया फिर बदल जाती है और शरीर हड्डी की हानि से कम हड्डी बनाता है. यह एक धीरेधीरे और चुपचाप होने वाली रोग प्रक्रिया है जो ५० साल से ज्यादा आयु की ४ में से १ महिला को और ५० साल से ऊपर के ८ में से १ पुरुष को होती हैं.

आस्टियोपोरिसस की पहचान

आस्टियोपोरोसिस को छिपा चोर कहा गया है क्योंकि हड्डी की हानि बिना लक्षणों के होती है. लोगों को यह पता ही नहीं चलता कि उन्हें आस्टियोपोरोसिस है, जब तक कि उन दूसरे रोग के इलाज के कारण होता है इसलिए इसे सेकंडरी आस्टियोपोरोसिस कहते हैं.

ग्लूकाकार्टिकोइड्स

इस दवा का शरीर के ढांचे पर बुरा प्रभाव पड़ता है. वे रोग जिन का ग्लूकोकार्टिकोइड्स दवाइयों द्वारा इलाज होता है:

रिह्यूमेटाइड आर्थराइटिस, आस्टियो आर्थराइटिस, बरसाइटिस

अस्थमा, क्रानिक आब्सट्रक्टिव पलमोनरी डिजीज, एजर्जिक रहीनिटिस

दीर्घकालिक, क्रानिक एक्टिव हपेटाइटिस, लिवर डिजीज

सोराइसिस, तीव्र डर्माटाइटिस

ल्यूकीमिया, लिंफोमा और देसरे कैंसर, कीमोथेरैपी के संसर्ग (कनजंक्शन) में

अल्सेरेटिव कोलाइटिस

तीव्र एलर्जिक रिएक्शन और सूजन

मल्टीपल सुरोसिस

हर्ट और किडनी ट्रांसप्लांट के बाद

आंख के रोग और सूजन

हड्डियों पर असर करने वाली दूसरी दवाइयां

कई दूसरी दवाइयां भी हड्डी पर बुरा असर डाल सकती हैं. हर प्रकार की दवाइयां हड्डी के स्वास्थ्य पर असर नहीं डालतीं, इसलिए अपने डाक्टर से हड्डी की कम से कम हानि वाली दवाई के लिए जरूर पूछें.

थायराइड हार्मोंस : अस्थियों के सामान्य विकास के लिए थयराइड हामार्सेस का यथोचित स्तर बहुत जरूरी है लेकिन ज्यादा मात्रा लंबे समय तक लेने से हड्डी को हानि पहुंच सकती है.

मथोट्रेक्सेट : विभिन्न प्रकार के कैंसर, ईम्यून विकार और रेजिस्टेंट आर्थराइटिस स्थितियों के इलाज में उपयोग की गई दवाएं.

कोलेस्टीरामासइन : ब्लड कोलेस्ट्राल स्तर के नियंत्रण के लिए दी जाने वाली दवाएं भी हड्डी को नुकसान पहुंचाती हैं.

पुरुष और आस्टियोपोरोसिस

आस्टियोपोरोसिस को महिलाओं का रोग माना जाता है पर पुरुषों को भी यह रोग होता है. कनाडा में तो २०–३० प्रतिशत आस्टियोपोरोसिस

फ्रैक्चर पुरुषों में होते हैं. करीब ३५ प्रतिशत हिप फ्रैक्चर के मामले में बूढ़े पुरुष हैं. हिप फ्रैक्चर से औरतों की अपेक्षा आदमियों के मरने की सांभावना ज्यादा है.

पुरुषों में आस्टियोपोरोसिस कम होने के कई कारण हैं. पुरुषों में बोन मास पीक ज़ियादा है और वे महिलाओं के मेनोपाज के समय बढ़ते हुए नुकसान का अनुभव नहीं करते हैं. साथ ही बूढ़ी महिलाओं की अपेक्षा कम गिरते हैं.

पुरुषों में आस्टियोपोरोसिस का विकास निम्न कारणों से हो सकता है:

लो पीक बोन डेंसिटी : कुछ लोग जवानी में ज्यादा हड्डी सघनता विकसित नहीं कर पाते. यह आनुवंशिक कारणों से भी हो सकता है, पर यह यौवन देर से आरंभ होने, कैल्शियम इंटेक में कमी, धूम्रपान और ज्यादा शराब पीने के कारण भी हो सकता है.

रोकथाम

इस को समझने के लिए उन कारकों को समझना होगा जो इसके विकास में योग देते हैं. इसके ३ प्रमुख फैक्टर हैं : भोजन में कैल्शियम व विटामिन डी, व्यायाम और हार्मोंस.

कैल्शियम मजबूत हड्डियों का निर्माण करता है और बाद के सालों में टूटने का खतरा कम करता है. इन्सान जैसेजैसे बड़ा होता है उसके शरीर के कैल्शियम को अपने में पचाने की क्षमता कम होती जाती है, जिस से कि उस बदलाव की पूर्ति करना जरूरी हो जाता है.

व्यायाम हड्डियों में कैल्शियम पहुंचाता है. विटामिन डी, कैल्शियम को जज्ब करने में सहायक होता है.

भोजन : कैल्शियम, विटामिन डी और विटामिन सी.

आस्टियोपोरोसिस और कैल्शियम

कैल्शियम बचपन में ताकतवर हड्डी के निर्माण, वयस्कों में हड्डी के घनत्व को बनाए रखने और बढ़ती उम्र के टूटन में कमी के लिए बहुत जरूरी है. खासतौर से शरीर की प्रत्येक कोशिकास, सेल को उचित फंक्शन के लिए कैल्शियम की आवश्यकता है, इसलिए पूरी जिंदगी के दौरान कैल्शियम की यथोचित सप्लाई जरूरी है.

हड्डी वह कुंड है जहां कैल्शियम इकट्ठा किया जाता है. यदि खुराक में कैल्शियम की कमी है ता इस की पूर्ति हड्डी की दृढ़ता को कम करेगी. बहुत से खाद्य पदार्थों के अलावा दूध और दूध से बनी चीज़ों में सब से ज्यादा कैल्शियम होता है.

भोजन के अलावा यदि आप के डाक्टर को जरूरी लगेगा तो वह आपको कैल्शियम की गोलियां प्रस्तावित कर सकता है. कैल्शियम को कभी भी अपने आप नहीं लेना चाहिए.

विटामिन डी कैल्शियम का जज्ब करने में रोल अदा करता है. सूर्य का प्रकाश और दूध इस विटामिन के अच्छें स्रोत हैं.

विटामिन सी कोल्लागन फार्म के लिए जरूरी है. फल व सब्जियों द्वारा विटामिन सी की जरूरत को पूरा किया जा सकता है.

हार्मोंस

कुछ औरतें मेनोपोज के बाद ज्यादा जल्दी हड्डी खोती हैं. यह प्रक्रिया एस्ट्रोजन (सेक्स हार्मोन), जो कैल्शियम की उपयोगिता को प्रभावित करता है, की कमी से संबंधित लगता है. आप का डाक्टर बोन हानि को कम करने के लिए आप को फीमेल हार्मोन सप्लीमेंट प्रस्तावित कर सकता है.

व्यायामः नियमित व्यायाम हड्डियों में कैल्शियम जमा करने में मदद करता है. मसल्स की तरह हड्डियों को भी स्वस्थ रहने के लिए व्यायाम की जरूरत है. शारीरिक रूप से सक्रिय व्यक्तियों में बोन टीशू अधिक मात्रा में होता है.

बोन लास को रोकने के लिए सब से अच्छा व्यायाम, व्हेट वेयरिंग है, जिसमें आप अपने वजन को सपोर्ट करते हैं, जैसे चलना, दौड़ना तैरना आदि.

(पृष्ठ ४० का शेष)

प्रदूषण और ग्लोबंल वार्मिंग के कारण ये बादल बने हैं।

दरअसल वातावरण में पाया जाने वाला पानी जब ज़मीन पर आता है तो उसका कई रूपों में प्रयोग होता है। वह जब भाप के रूप में वापस वातावरण में लौटता है, तो प्रदूषण के कारण उसमें मीथेन की मात्रा भी होती है। मीथेन की मात्रा कई चीज़ों के जलने से और बढ़ रही है। सूर्य की किरण इस मीथेन को तोड़ती है, जिससे हाइड्रोजन बनता है, जो फिर ऑक्सीजन के साथ मिलकर पानी बनाता है। कार्बन डाईऑक्साइड जैसी ग्रीनहाउस गैस दरअसल वातावरण के ऊपरी हिस्से को ठंडा करने में मदद करती है, जहाँ बादल बनते हैं। हालांकि अभी तक यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि बादलों में पाये जाने वाले कणों का स्रोत क्या है।

धार्मिक क्रांति का युग

प्रो० श्रीनेत्र पाण्डेय

क्रांति का अर्थ – क्रांति शब्द संस्कृत की क्रम धातु से बना है जिसका अर्थ होता है गति अथवा चाल। क्रांति उस गति को कहते हैं जो समाज में बहुत बड़ी उथल–पुथल मचा देती है। मनुष्य अपने तथा समाज के विकास एवं कल्याण के लिए विभिन्न प्रकार की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं का निर्माण करता है। परन्तु कालान्तर में उनमें आडम्बर आ जाता है और उनमें अनेक प्रकार के दोष उत्पन्न हो जाते हैं। तब यह संस्थाएं जन साधारण के लिए अभिशाप बन जाती हैं और उनका उन्मूल आवश्यक हो जाता है। परन्तु समाज में प्रायः ऐसे शक्तिशाली वर्ग उत्पन्न हो जाते हैं जो इन संस्थाओं का दुरूपयोग कर अपने स्वार्थ की सिद्धि करते हैं और उनके अस्तित्व को बनाये रखने का यथाशक्ति कुछ काल तक इन भ्रष्ट तथा विकृत संस्थाओं के अत्याचारों को मूक होकर सहन करती हैं क्योंकि इन परम्परागत संस्थाओं के प्रति उसकी बड़ी श्रद्धा होती है और वह सहसा उनके विरुद्ध आन्दोलन करने का साहस नहीं करती। परन्तु प्रत्येक समाज में एक प्रवबुद्ध वर्ग भी होता है जो बड़ा ही प्रगतिवादी विवेकशील तथा स्वतंत्र विचार का होता है। यह वर्ग सामाजिक दोषों की ओर से चैतन्यशील तथा जागरूक रहता है। वह लोक कल्याण की भावना से प्रेरित होकर सामाजिक समस्याआं पर विचार करने लगता है। इस प्रकार उसके मस्तिष्क में विचारों की उथल–पुथल अथवा क्रांति आरंभ हो जाती है। इसी को बौद्धिक क्रान्ति कहा जाता है। प्रबुद्ध वर्ग ध्वंसात्मक तथा रचनात्मक दोनों प्रकार के विचारों से ओत–प्रोत हो जाता है। उसके मस्तिष्क में दूषित संस्थाओं की कुव्यवस्थाओं, अत्याचारों तथा अन्धविश्वासों का चित्र विद्यमान रहता है जिनका वह विध्वंस करना चाहता है और साथ ही साथ स्वस्थ एवं कल्याणकारी काल्पनिक संस्थाओं का चित्र उसके मस्तिष्क में उपस्थित रहता है जिन्हें वह समाज के कल्याण के लिए स्थापित करना चाहता है। प्रबुद्ध वर्ग अपनी मानसिक क्रांति को व्यवहारिक स्वरूप देने के लिए अपने विचारों, प्रवचनों, तथा लेखों द्वारा जनता के सामने उपस्थित करता है। वह दूषित संस्थाओं को अत्यन्त वीभत्स और अपनी काल्पनिक संस्थाओं का अत्यन्त मनोहर एवं कल्याणकारी चित्र जनता के सामने उपस्थित करता है और उसे आन्दोलन करने के लिए प्रोत्साहित करता है जब जनता पुरानी भ्रष्ट व्यवस्थाओं की उन्मूलित करने के लिए आन्दोलन कर देती है। तब उसे जनक्रांति के नाम से पुकारा जाता है। जन–क्रांति द्वारा समाज में बहुत बड़े–बड़े राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा संस्कृतिक मौलिक परिवर्तन हो जाते हैं। यह परिवर्तन दो प्रकार से सम्पन्न किये जाते हैं। यह शांतिपूर्वक भी सम्पन्न हो सकते हैं और इसके सम्पन्न करने में भीषण रक्तपात तथा हत्याकांड भी हो सकता है। छठी शताब्दी ई०पू० में हमारे देश में एक बहुत बड़ी क्रांति हुई जिसका हमारे देश के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक जीवन पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। यह क्रान्ति बड़े ही शांतिपूर्वक तथा अहिंसात्मक ढंग से संपन्न हुई थी।

क्रांति की व्यापकता – छठी शताब्दी ई०पू० न केवल भारत के वरन् विश्व के इतिहास में एक महान् क्रांति का युग माना जाता है। डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी ने इस काल के सम्बन्ध में लिखा है, "छठी शताब्दी ई०पू० मानव इतिहास का एक महत्वपूर्ण काल है। यह विभिन्न क्षेत्रों में जो एक दूसरे से अत्यधिक अलग थे असाधारण मानसिक तथा अध्यात्मिक अशांति का युग था।" जिस समय हमारे देश में यह क्रांति आरंभ हुई उसी समय ईरान, चीन तथा यूनान में भी राजनीतिक, समाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक सुधार के आन्दोलन चल रहे थे जिनका उन देशो के इतिहास पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। हमारे देश में छठीं शताब्दी ई०पूर्व में जो क्रांति आरंभ हुई उसका क्षेत्र अत्यन्त व्यापक था। इस क्राति का प्रभाव राजनीतिक सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। राजनीतिक क्षेत्र में यह मगध के साम्राज्यवाद का युग था। इस समय उत्तरी भारत में सोलह जन–जनपद विद्यमान थे जिनमें परस्पर संघर्ष चला करता था परन्तु थोड़े समय में छोटे–छोटे राज्यों को विनष्ट कर मगध–साम्राज्य का निर्माण किया गया और राजनीतिक एकता स्थापित करने का स्वप्न सिद्ध हो गया। सामाजिक क्षेत्र में भी यह एक क्रान्ति का युग था। इन दिनों जाति–प्रथा के बन्धन अत्यन्त जटिल हो गये थे और

ऊंच–नीच तथा छुआ छूत की भावना बड़ी प्रबल हो गई। ब्राह्मणों की समाज में प्रधानता थी और सर्वत्र उन्हीं का बोल–बाला था। छठी शताब्दी ई०पूर्व० में इन सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध भी आन्दोलन आरम्भ हुआ। जाति–प्रथा का घोर विरोध किया गया और ऊंच–नीच तथा छुआ–छूत की भावनाओं को दूर करने का भगीरथ प्रयास किया गया। क्षत्रियों ने ब्राह्मणों की प्रधानता का विरोध करना आरम्भ किया और अपने को सर्वोच्च श्रेणी में रखने का प्रयत्न किया। सांस्कृतिक क्षेत्र में भी वह एक क्रान्तिकारी युग था। इस काल में साहित्य तथा कला के क्षेत्र में बड़े क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। उसके पूर्व केवल संस्कृत ही साहित्यिक भाषा समझी जाती थी और उसी में ग्रंथों की रचना होती थी और धार्मिक उपदेश दिये जाते थे। यह ब्राह्मणों की भाषा थी और वही लोग इसे ठीक से समझ सकते थे। परनतु छठी शताब्दी ई०पू० में प्राकृत तथा पालि में भी, जो जन–साधारण की भाषा थी, साहित्य रचना होने लगी और धर्मोपदेश दिये जाने लगे। जैन–धर्म ने प्राकृत को और बौद्ध–धर्म ने पाली को माध्यम बनाकर अपने धर्म का प्रचार आरम्भ किया। फलतः प्राकृत तथा पाली भाषा में बहुत बड़े साहित्य की रचना हुई जो सर्वसाधारण के लिए भी बोधगम्य था। कला में भी बड़े क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। वैदिक काल में केवल मंडपों, यज्ञशालाओं आदि का निर्माण किया जाता था परन्तु इस काल में विहारों, गुहा–मन्दिरों तथा स्तूपों और मूर्तियों का निर्माण बड़े जोरों केसाथ आरम्भ हुआ जिससे वास्तु–कला तथा शिल्प–कला में बड़े क्रान्तिकारी परिवर्तन आरम्भ हो गये। परन्तु इस काल में सबसे बड़ा क्रान्तिकारी परिवर्तन धार्मिक क्षेत्र में हुआ। <u>वैदिक धर्म जिसे ब्राह्मण धर्म तथा सनातन धर्म भी कहते है, अत्यन्त जटिल हो गया था और साधारण जनता न उसे समझ सकती थी और न उसका ठीक–ठीक पालन कर सकती थी? केवल ब्राह्मण वर्ग ही उसे समझता था और उसका पालन कर सकता था।</u> वैदिक काल में यज्ञ ही मोक्ष के साधन समझे जाते थे परन्तु यह इतने दुरूह हो गये थे और इनमें इतना अधिक धन व्यय करना पड़ता था और इतना अधिक समय लगता था कि साधारण जनता इन्हें कर नहीं सकती थी। अतएव एक अत्यन्त सरल धर्म की आवश्यकता थी जिसे सभी लोग समझ सकें और सभी पालन कर सकें। फलतः सरल मार्ग को ढूंढने के लिए एक भयंकर धार्मिक क्रान्ति क्षत्रियों के नेतृत्व में आरम्भ हुई जो दो प्रधान धाराओं में प्रवाहित हो चली। एक धारा आस्तिक कहलाई जो वैष्णव तथा शैव–धर्म के रूप में प्रस्फुटित हुई और दूसरी धारा नास्तिक कहलाई जो बौद्ध तथा जैन–धर्म के रूप में प्रवाहित हुई। वैष्णव तथा शैव धर्म ने भक्ति तथा उपासना के अत्यन्त सरल मार्ग को और बौद्ध तथा जैन–धर्म ने उससे भी सरल सत्कर्म तथा सदाचरण मार्ग को ढूंढ निकाला जो सर्व–साधारण के लिए अनुगमनीय था।

<u>क्रांति का महत्व :</u> ऊपर जिस व्यापक क्रांति का संक्षिप्त परिचय दिया गया है उसका भारतीयों के जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। वास्तव में यह क्रान्ति इतिहास में एक नये युग का आरम्भ करती है और इसका महत्व निम्नांकित क्षेत्र में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

१. राजनीतिक क्षेत्र : छठी शताबि ई०पू० के इतिहास को वैदिक काल का इतिहास धार्मिक कहा जाता है। इस काल का राजनीतिक इतिहास जानने का हमारे एक मात्र साधन ग्रंथ हैं जिनमें यत्र–तत्र राजनीतिक तथ्य भी बिखरे हुए मिलते हें इन्हीं तथ्यों का संग्रह करके तथा भाषा–शैली के सहारे इस युग के इतिहास का निर्माण किया गया। अतएव यह इतिहास न तो निभ्रान्त है और न श्रृंखलाबद्ध। परन्तु छठी शताब्दी ई०पू० के तथा उसके बाद का इतिहास जानने में हमें प्रचुर साधन प्राप्त हो जाते हैं इससे इस काल का राजनीतिक इतिहास असंदिग्ध तथा श्रृंखलाबद्ध हो गया।

२. सामाजिक क्षेत्र : छठी शताब्दी ई०पू० की क्रान्ति का सामाजिक क्षेत्र में भी बड़ा प्रभाव पड़ा। इस क्रान्ति के ब्राह्मणों की सत्ता को कम कर दिया और क्षत्रियों के प्रभाव में वृद्धि कर दी। वास्तव में इस क्रान्ति के प्रधान नेता क्षत्रिय ही थे अतएव उन्होंने अपने को समाज में सर्वश्रेष्ठ स्थान प्रदान करने का प्रयत्न किया। इस क्रान्ति ने जाति–प्रथा को उन्मूलित कर समाज को समानता के आधार पर फिर से संगठित करने का प्रयत्न किया।

(३) सांस्कृतिक क्षेत्र – इस क्रान्ति का सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी बहुत बड़ा महत्व है। वैदिक साहित्य केवल संस्कृत भाषा में था जिसमें केवल ब्राह्मण ही लाभ उठा सकते थे परन्तु छठी शताब्दी ई० पू० तथा उसके बाद का साहित्य लौकिक संस्कृत था जन–साधारण की पाली प्राकृत भाषाओं में लिखा गया है। इससे सभी जिज्ञासु लाभ उठा सकते हैं। वैदिक कालीन कला पूर्ण–रूप से धर्म प्रभावित थी परंतु छठी शताब्दी ई० पू० की कला में भौतिकता का प्रादुर्भाव हो गया इसके अतिरिक्त इस क्रान्ति के फलस्वरूप

भारतीय सभ्यता तथा संसकृति का प्रचार विदेशों में हो गया है। बड़े–बड़े सुधारक तथा प्रचारक विदेशों में गये और वहाँ पर उन्होंने भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का प्रचार किया। इससे भारत का विदेशों के साथ घनिष्ठ संपर्क स्थापित हो गया और उनके साथ निरन्तर विचार–विनिमय चलता रहा।

(४) धार्मिक क्षेत्र– इस क्रांति का धार्मिक दृष्टिकोण में सबसे अधिक महत्व है। इस क्रान्ति के फलस्वरूप हमारे देश में बड़े–बड़े विचारक, दार्शनिक तथा सुधारक हुए जिन्होंने नई–नई धार्मिक विचार–धाराओं को जन्म दिया और नयें–नये धर्मों तथा सम्प्रदायों की स्थापना की जिनका भारतीयों के जीवन पर अमिट प्रभाव पड़ा। इसके पहले वेद प्रामाणिक ग्रंथ तथा ज्ञान के एकमात्र साधन समझे जाते थे परन्तु अब वेदों की प्रामाणिकता का विरोध होने लगा और तर्क तथा विवेचन को ज्ञान का सच्चा साधन बतलाया गया। पहले यज्ञों तथा बलि को ही मोक्ष की प्राप्ति का साधन माना जाता था और इसमें ब्राह्मणों की सहायता की आवश्यकता पड़ती थी परन्तु अब बिना किसी की सहायता केवल भक्ति तथा उपासना द्वारा अथवा अहिंसा, सत्कर्म तथा सदाचार द्वारा मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती थी। यह नये मार्ग बड़े ही सरल थे। अतएव यह बड़े लोक–प्रिय बन गये। इस क्रांति ने भारतीय दर्शन की वृद्धि में भी बड़ा योग दिया। स्वतन्त्र चिंतन तथा विवेचन ने आत्मा तथा परमात्मा के सम्बन्ध में ऐसा विशाल साहितय उत्पन्न कर दिया जो अतुलनीय तथा अवर्णनीय है।

क्रांति के कारण– जब समाज में विभिन्न प्रकार के दोष उत्पन्न हो जाते हैं तब उन दोषों को दूर करने के लिए क्रांतियाँ होती हैं। ऋग्वैदिक काल के आर्यों का धर्म और समाज बड़ा ही सरल तथा स्वस्थ था। इस काल के आर्य प्रकृति की पूजा किया करते थे जो सबके लिए अत्यन्त सुगम था। उनके समाज का मूलाधार वर्ण–व्यवस्था थी जो व्यवसाय पर आधारित थी और जिनमें न कोई जटिलता थी और न ऊंच–नीच का भेद–भाव, परन्तु उत्तर–वैदिक काल में आर्यों के धर्म तथा समाज दोनों ही में अनेक दोष उत्पन्न हो गये जो छठी शताब्दी ई० पू० में असह्य हो गये और उनके विरुद्ध एक भयानक क्रांति आरम्भ हो गयी। यह सामाजिक तथा धार्मिक विकृतियाँ, जिनके कारण यह क्रान्ति आरम्भ हुई, निम्नांकित थीं–

(१) साहित्य की जटिलता– वैदिक संस्कृत बड़ी ही कठिन थी और इसी कठिन संस्कृत में धार्मिक ग्रंथों की रचना हुई थी। क्लिष्टता के साथ यह साहित्य बड़ा ही विशाल हो गया। अतएव साधारण जनता न तो उसे पढ़ सकती थी और न समझ सकती थी। इसका परिणाम यह हुआ कि वह वैदिक धर्म को समझने में असमर्थ हो गई और इसकी जानकारी प्राप्त करने के लिए उसे ब्राह्मणों की सहायता लेनी पड़ती थी जो वैदिक संस्कृति तथा धर्म को समझते थे। फलतः जनता को ऐसे धर्म की आवश्यकता हुई जो जन–साधारण की भाषा में हो जिससे वह उसे पढ़े तथा समझ सके। ब्राह्मणों के शुद्ध तथा सरल वैदिक धर्म में इतना आडम्बर तथा पाखण्ड आ गया था कि जनता को उसमें अरुचि हो गई।

(२) यज्ञों की जटिलता– उत्तर–वैदिक काल में ऋग्वैदिक काल की ऋचाओं अर्थात् मन्त्रों का स्थान यज्ञों ने ले लिया था। इन यज्ञों को करने में इतना अधिक समय तथा धन लगाना पड़ता था कि साधारण जनता उनके करने में बिल्कुल असमर्थ हो गई। अब इन यज्ञों को केवल राजा महाराजा तथा धनी–मानी लोग करवा सकते थे। इतना ही नहीं, इन यज्ञों को करने की विधि भी बड़ी कठिन होती थी और उस विधि को केवल ब्राह्मण लोग ही जानते थे। अतएव बिना ब्राह्मणों की सहायता के इन यज्ञों को नहीं किया जा सकता था। परिणाम यह हुआ कि जनता इन यज्ञों की ओर से उदासीन होने लगी और मोक्ष प्राप्ति का कोई अन्य सरल मार्ग ढूंढने लगी।

(३) बलि का प्रयोग– वैदिक काल में यज्ञों के अवसर पर बलि देने की प्रथा थी। ऋग्वैदिक काल में केवल फल तथा दूध की बलि से काम चल जाता था परन्तु उत्तर–वैदिक काल में पशुओं की बलि को प्रधानता हो गई। कभी–कभी मनुष्य की भी बलि दे दी जाती थी। इस प्रकार निरपराध प्राणियों की हत्या कर उसके मांस से हवन किया जाने लगा। धीरे–धीरे इन अमानुषिक कार्यों को घृणा की दृष्टि से देखा जाने लगा और वैदिक धर्म से लोगों का विश्वास हटने लगा। अब जनता ऐसे धर्म को खोजने लगी जो अहिंसात्मक हो और जिनमें सभी प्राणियोंके प्रति दया हो।

(४) मन्त्र–तन्त्र का प्राबल्य– धीरे–धीरे धर्म में आडम्बर तथा अन्धविश्वास बढ़ता ही गया और भूत–प्रेत तथा मन्त्र–तन्त्र में लोगों का विश्वास हो गया। अथर्ववेद में विभिन्न प्रकार के भूत–प्रेत तथा उनके रक्षा के लिए मंत्रों का उल्लेख मिलता है। मंत्रों का महत्व धीरे–धीरे बढ़ गया कि मंत्रों द्वारा देवताओं को भी वश में करने का दावा किया जाने लगा। इस प्रकार के अंधविश्वासों से वैदिक धर्म को बड़ी क्षति पहुंची और उस पर से लोगों का विश्वास हटता ही गया।

आपके प्रश्नों के उत्तर

इदारा

प्रश्न : कुछ लोग जनाज़े की नमाज़ जूता या चप्पल पहने पहने पढ़ते हैं इसका क्या हुक्म है?

उत्तर : अगर जूता या चप्पल ऊपर नीचे हर तरफ से पाक है तो जूता या चप्पल पहने–पहने नमाज़ हो जाएगी। अगर जूता या चप्पल ऊपर से पाक है मगर नीचे से गन्दी है तो जूता या चप्पल निकाल कर उस पर खड़े होकर नमाज़ पढ़ सकते हैं, अगर जूता चप्पल ऊपर से भी गन्दी हो तो नमाज़ के वक़्त उसे अलग कर दें और पाक जगह पर खड़े होकर नमाज़ पढ़ें।

प्रश्न : बीवी का इन्तिक़ाल हो गया तो क्या शौहर अपनी मुर्दा बीवी को देख सकता है और क्या उसे क़ब्र में उतार सकता है?

उत्तर : बीवी इन्तिक़ाल के बअ़द शौहर के लिये अजनबनी अर्थात ग़ैर हो जाती है लिहाज़ा उसे हाथ नहीं लगा सकते लेकिन चेहरा देख लेनी की उ़लमा ने इजाज़त दी है, रहा क़ब्र में जनाज़ा उतारना तो अगर औ़रत के भाई, बाप बेटे, बहन या भाई के बेटे महरम लोग मौजूद हों और उतार सकते हों तो महरम लोग ही उतारें और अगर महरम न उतार सके तो दूसरे अजनबीयों के मुक़ाबले में बेहतर है कि शौहर अपनी बीवी को क़ब्र में उतारे।

प्रश्न : कभी किसी औ़रत का कोई क़रीबी अ़ज़ीज़ का इन्तिक़ाल हो जाता है तो वह चिल्ला चिल्लाकर रोती है, ना महरमों के सामने सर खुल जाता है और कभी तो अपने देवर (शौहर के छोटे भाई) बहनोई जैसे ना महरमों को पकड़ कर रोती है और यह ना महरम उसके सर या कन्धे पर हाथ रखकर तसल्ली देते हैं इन बातों का क्या हुक्म है?

उत्तर : पहली बात तो यह है कि पर्दे के अह़काम हर लड़की को आ़म हालात में अच्छी तरह समझा देना चाहिये, ग़म के वक़्त समझाने की न हर एक में हिम्मत और न ही उन हालात में औ़रत उन पर अ़मल करेगी।

चिल्ला चिल्लाकर रोने से मुम्किन हो तो रोकना चाहिये और नामहरम के सामने सर या जिस्म का वह हिस्सा जिसका नामहरम के सामने खोलना मना है, खोल देना बड़ा गुनाह है और देवर बहनोई या किसी ना महरम का जिस्म छूना ह़राम है। न औ़रत ना महरम मर्द को हाथ लगाए न मर्द ना महरम औ़रत को, चाहे वह ग़म के मौक़िअ़ पर तसल्ली देने के लिये हो या खुशी के मौक़िअ़ पर इज़हारे ख़ुशी के लिये हो।

प्रश्न : मश्हूर है कि मियाँ–बीवी एक बुज़ुर्ग से बैअ़त न हों वरना भाई बहन हो जाएंगे इस का क्या हुक्म है।

उत्तर : उस्ताद के शागिर्दों और पीर के मुरीदों में भाई होने का रिश्ता मअ़नवी है, यह निकाह़ वग़ैरह में रोक नहीं है।

प्रश्न : क्या औ़रत के लिये अपने पीर से पर्दा नहीं है?

उत्तर : पीर अगर पहले से ना महरम है तो अब भी ना महरम है, मुरीद होने से पीर महरम नहीं हो जाता इसी तरह शागिर्द बनने से उस्ताद महरम नहीं हो जाता।

प्रश्न : तज़किय–ए–नफ़्स क्या है जिसके लिये लोग बुज़र्गों से मुरीद होते है।? और किसी बुज़र्ग से बैअ़त करना कैसा है?

उत्तर : सीधी बात यह है कि अगर एक ईमान वाला शरीअ़त के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता है तो यह उसकी नजात के लिये काफ़ी है। तज़किय–ए–नफ़्स अर्थात नफ़्स के तज़किये से मुराद है मन की बुराइयों का दूर होना और मन में भलाइयों का पैदा हो जाना, इस तज़किये का ज़िक्र क़ुर्आने मजीद में मौजूद है अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल के गुणों में बताया कि वह ईमान लाने वालों का तज़किया करते हैं "व युज़क्कीहिम"। हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछा गया कि "इह़सान" क्या है? आप ने फ़रमाया कि "अल्लाह की इबादत इस तरह करो कि जैसे तुम उसे देख रहे हो और अगर तुम उसे नहीं देख सकते तो वह तो तुम्हें देख ही रहा है।" याद रहे यहाँ यह नहीं कहा गया कि तुम उसे देख रहे हो यह तो इस दुन्या में नामुम्किन (असम्भव) है कहा गया जैसे तुम उसे देख रहे हो यअ़नी इबादत के वक़्त तुम्हारा ह़ाल यह हो जैसे उस को देखकर होता और इबादत के वक़्त यह हाल पैदा करने के लिये दूसरी बात यह बताई कि यह कैफ़ीयत पैदा करने के लिये यह तो समझो कि वह

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

रिश्वत (घूस)

रिश्वत–रिश्वत..यह शब्द तो जैसे जन्म घुट्टी में मिल गया था, बचपन से हर बात की वजह रिश्वत ही सुनी थी, उसके कानों में यह नाटक टैप की तरह बजा करते थे।

"बेटा तुम इतने मामूली भवन में क्यों रहते हो? तुम्हारे पापा तो एक्साइज़ इंस्पेक्टर हैं?

"जी मेरे पापा रिश्वत नहीं लेते हैं ना..."

"ओह!"

"मियाँ साहबज़ादे आप इस क़दर सस्ते कपड़े क्यों पहनते हैं? फैन्सी कपड़े क्यों नहीं है आप के पास? अरे इतनी कठिन सरदी और बिना आस्तीन की यह सदरी? खैर से आप के पापा तो इक्साइज़ सुप्रिनटन्डन्ट हैं न आजकल???"

"वह क्या है मेरे पापा रिश्वत नहीं लेते हैं ना!"

"ओह!"

"अरे किधर जा रहे हो बेटे? इस मामूली स्कूल में पढ़ते हैं आप? अच्छे स्कूल में नहीं पढ़ते...आप के पिता तो एक्साइज़ में हैं?"

"जी ....मास्टर साहब वह रिश्वत नहीं लेते हैं। हम आठ भाई, बहन हैं सब पढ़ रहे हैं ना ...इतनी ज़ियादा फीस...किताब पुस्तकें.....रिक्शा, बसों के किराये...हमारी कोई जायदाद नहीं.... बिजनेस नहीं....समझ गये न आप?"

"ओह!!!"

"उफ्फोह अब आप रात–रात भर आँखें क्यों फोड़ रहे हैं... आप का स्लेक्शन मेडिकल में तो चुटकी बजाते हो जाय अगर आप के पापा ज़रा मुट्ठी गर्म करने का जुगाड़ कर लें....अब तो वह असिस्टेन्ट कमिशनर इक्साइज़ हैं।?"

जी....नहीं मेरे पापा रिश्वत नहीं देते...मुझे अपनी मेहनत से ही कामयाबी पानी है...."

"ओह...वेरी सैड...वेरी सैड... आफीसर के बच्चे सो सैड"

"यह क्या आप एनिमल हजबन्ड्री पढ़ रहे हैं...आप करते भी क्या...वह आपके पापा रिश्वत नहीं दे सकते हैं ना....एडिशनल कमिशनर साहब...हा...हा..."

"जी हाँ...आप सही कह रहे हैं लेकिन मैं इसी में प्रसन्न हूँ!"

"वेरी बैड...नानसेंस ब्वॉय..."

"अच्छा तो आप पोलेटरी में मास्टर्स करके आयें हैं...चलिए साहब मैं बिना रिश्वत लिए आपको नौकरी दे रहा हूँ...आप उन्हीं एक्साइज़ कमिशनर साहब के पुत्र हैं ना, जो रिश्वत नहीं लेते...नहीं देते...याद रखिएगा इस एहसान को..."(अर्धपूर्ण मुस्कान)

"यस सर"

"तो मुफ्त में नौकरी मिलते ही आप अपने पिता की राह पर चलने लगे...मेरे यहाँ जितने अण्डे, मुर्गे, साल भर में फार्म से गये उसका बिल बनाकर भेजने की हिम्मत कैसे हुई आपकी? कान खोलकर सुन लीजिए...आपकी पहली और आखरी गलती समझ कर क्षमा कर रहा हूँ...यह लीजिए पाँच सौ रुपये और मामला खत्म करिए...अगली बार इससे ज़ियादा माल आपकी पोलेटरी फार्म से जाएगा समझे...यह एक हल्का सा पनिश्मेन्ट है आपके लिए. ..समझे?" "नो सर...यह असम्भव है... अपने नोट उठा लीजिए और हिसाब किलयर कर दीजिए, यह गौवरमेन्ट पोलेटरी फार्म है...मेरा होता तो किसी तरह पेट पर पत्थर बान्ध कर सह लेता..."

"जानते भी हैं आप क्या कह रहे हैं? अभी तो आपके मुंह से दूध के दांतों की बू आ रही है?...शादी...वादी हो गयी?

"जी! एक बच्ची भी है!"

"प्यार नहीं है अपनी बच्ची से? क्या उसे अपनी तरह पालेंगे??"

"बहुत प्यार है सर लेकिन वह रिश्वत के पैसों से नहीं पलेगी!"

"दिमाग सहीह नहीं है एक दिन में आप की सारी अकड़ निकल जाएगी. ..आपके पिता का समय नहीं रहा...वह तो रिटायर हो गये होंगे कोई घर वर बनवाया आप लोगों के लिए?"

"नहीं सर...किराये का घर है."

"चच...बड़ा अत्याचारी पिता है तुम्हारा...ज़रा दया नहीं आयी अपने पुत्रों पर...अच्छा वह नोट आप रख लीजिए और अपने अच्छे भविष्य को बनाना शुरू कर दीजिए..."

"नो सर...नो कम्प्रोमाइज़...माई फादर इज़ ए ग्रेट पर्सन...आई एम वेरी प्राउड ऑफ हिम..."

"हुंह...अत्यन्त कम बुद्धि के हो. ..कल आफिस में वर्मा जी से मिल लेना, आल दि बेस्ट।"

"ओह तो आप आ गये...नान रिश्वत रेजुलोशन...हा...हा...यह रहा आपका सस्पेन्शन लेटर...हमारा स्टाफ बहुत खफा है, साल भर आपने किसी के साथ कोई छूट नहीं की...आपको आपकी इस कीमती पोस्ट से सस्पेन्ड किया जाता है...आपकी कम उमरी....

भोलापन पर तरस आ रहा है...बट आई एम सोरी...यह आप के खाने कमाने के दिन थे....लेकिन ईमानदारी के पीछे हाथ धोकर पड़ गये...जाइए अब सड़कें नापिइए...वैसे आप जैसे लोगों को कम से कम फेमली नहीं बनाना चाहिए... अपने पिता की तरह...."

"डोन्ट से ए वर्ड अगेन्स्ट माई फादर...आई डोन्ट केयर फादर जाब... मैं ईमानदारी से कोई समझौता नहीं कर सकता....इमपासिबल..."

"ओह आप कहाँ जा रहे हैं.... मैनेजर साहब बुला रहे हैं..."

"आइए...आइए... मुझे तरस आता है आप पर...अभी आपकी शादी हुई...फूल सी बच्ची है आपके पास... बहुत परेशान हो जाएंगे...ऐसा करते हैं आपको फार्म से हटाकर पोस्टिंग किए देते हैं....बस समझ लीजिए हक के दाने मिलेंगे...सूखा वेतन...कोई ऊपरी आय नहीं...पता नहीं कैसे आपकी पत्नी की अभिलाषाएं तथा बच्ची की इच्छाएं पूरी होंगी...इतनी मूर्खता...बोलिए स्वीकार करते हैं?" "बिल्कुल...सौ प्रतिशत स्वीकार है सर। मैं हक के दानों पर राज़ी हूँ मेरी पत्नी व बच्चे हलाल (अवर्जित) रोज़ी (जीविका) से पलने में खुशी महसूस करेंगे...थैंकयू सर...लेकिन इसके लिए कोई रिश्वत तो नहीं देना पड़ेगी?"

"दूर हो जाओ रिश्वत के बच्चे। ऐसा बुरा मुंह बनाता है साला रिश्वत के नाम पर जैसे रेप किया हो....?"

"बिलकुल सर। मेरे पिता कहते हैं कि रिश्वत लेना और देना रेप करने के बराबर पाप है।" "शट अप योर माउथ ...तेरा ट्रांस्फर मैं दूसरे शहर किये देता हूँ ताकि यह मन्हूस लेक्चर सुन्ने को न मिले..."

"थैंक यू...सो मच...यू आर सो काइन्ड आफ मी।"

उर्दू से अनुवाद– अब्दुर्रहीम

'इल्म इन्सानियत का ज़ेवर है'

एम० हसन अंसारी

जानना और न जानना। ज्ञान और अज्ञानता। ज्ञान है तो आसानीं, जानकारी नहीं तो दुश्वारी। वाक़िफ़कार है तो कामयाब, कोरा है तो नाकाम। इल्म मंज़िल तक पहुंचने की डगर, लाइल्मी भटकाव का सबब। जानने वाला बाइल्म, बाख़बर, होशमन्द, ज़ीहोश, ज़हीन, फ़हीम न जानने वाला, बेइल्म, बेख़बर, अजनाज, कोरा, नासमझ। एक रहमत व बरकत दूसरा बार और वबाल। 'इल्म से आदमी संवरता है'। 'इल्म सबको क़रीब लाता है, दूरियाँ दिल की यह मिटाता है'। 'इल्म कोई चुरा नहीं सकता।'।

इल्म का सीखना, सिखाना मानव विकास के इतिहास में उतना ही पुराना है जितना पुराना सभ्यता केविकास का इतिहास है। मानव समाज में तालीम (शिक्षा) का सिलसिला हमेशा रहा है पर इस का स्वरूप तथा इसकी उपादेयता बदलती और घटती बढ़ती रही है। सही शिक्षा का स्रोत और ज़रिया आसमानी किताबें रही हैं। और इन्सान को उन्हीं से रहनुमाई मिलती रही है। जो तालीम (शिक्षा) इस रहनुमाई से महरूम (वंचित) रहेगी वह इन्सान के सही रास्ते से भटक जाने का सबब और कारण बनेगी। इसलिये सही तालीम की डोर का सिरा आसमानी किताबों की शिक्षाओं से जुड़ने में कामयाबी है और इस तरह के प्रयास में ख़ुदा की मदद शामिल होती है।

इस्लाम में अच्छाइयों को फैलाने का हुक्म दिया गया है और इनके ज़ाहिर करने की व्यवस्था की गई है। हमारे नबी सल्ल० ने समाज में अच्छाइयों पर अमल कर के, लोगों को दिखाकर और बता बताकर फैलाई। इसका नतीजा है कि आप सल्ल० से आपके समाज को अच्छाइयों, अच्छी बातों और अच्छी आदतों का जो भरपूर ख़ज़ाना मिला, वैसा दुनिया के किसी समाज को इतिहास के किसी ज़माने में नहीं मिला।

इसलिये हमारी ड्यूटी है कि बड़े अपने छोटों को पढ़े लिखे अनपढ़ लोगों को अच्छी और मुफ़ीद (लाभप्रद) बातें सिखायें, अगर अपनी नसीहत, शिक्षा-दीक्षा से न सिखा सकें तो अच्छे अमल (कर्म) करके दिखायें इस तरह बहुत से आदमी सिर्फ देखकर सीख जायेंगे और वही करने लगेंगे जो अच्छे लोगों को करते देखेंगे।

इस सिलसिले में सबसे बड़ी जिम्मेदारी माँ-बाप पर और घर के बड़े भाई बहनों पर आइद होती है वह जैसे दिखाई देंगे और वह जैसा करेंगे उनकी औलाद और उनके छोटे भाई बहन वैसे ही बनेंगे और वैसा ही करेंगे। और माँ की ज़िम्मेदारी इस सिसिले में और भी ज़्यादा है क्योंकि बच्चे सब से पहले और सबसे ज्यादा उसी को देखते और उसी से सीखते हैं।

अच्छी भाषा के नौ बिन्दु

लेखकः टीकाकार व साहित्यकार अब्दुल माजिद दरियाबादी

१. गद्यांश (इबारत) सारगर्भित हों कठोर न हो।
२. सादी हो फीकी न हो।
३. सरल व सहज हो सपाट न हो।
४. गम्भीर हो शुष्क न हो।
५. सर्वग्राह्य हो अशिष्ट न हो।
६. मृदुल हो अधम न हो।
७. ठोस हो ढस न हो।
८. चिन्तनशील हो बोर करने वाली न हो।
९. सशक्त हो मगर कोलाहलपूर्ण न हो।

(प्रस्तुति : एम० हसन अंसारी)

क़ादियानी को जवाब

एक क़ादियानी ने एक मुसलमान से पूछा, यार शैतान को तो क़ियामत तक छूट मिली है कि वह औलादे आदम को बहकाने की कोशिश करता रहे? मुसलमान ने जवाब दिया, हां यह बात तो क़ुर्आने मजीद से साबित है। क़ादियानी ने कहा फिर तो पैग़म्बरी का सिल्सिला भी क़ियामत तक चाहिये! मुसलमान ने कहा यह बात उससे कहें जिसका मज़हब इन्सानी अ़क़्ल ने बनाया हो। इस्लाम तो किताब व सुन्नत की तालीमात का नाम है और किताब व सुन्नत ने दीन के कामिल होने का एअ़लान कर दिया और यह कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर रिसालत व नुबुव्वत ख़त्म हो चुकी आपके बाद जो नुबुव्वत का दावा करे वह झूठा है।

(पृष्ठ २८ का शेष)

तुम्हे देख रहा है। लेकिन चूंकि इन आँखों से इस दुन्या में अल्लाह तआ़ला किसी हाल में नही दिखता इसलिये यह मतलूबा कैफ़ीयत आसानी से नहीं पैदा होती लेकिन यह कैफीयत शरीअ़त की पाबन्दी से पैदा हो सकती है। और किसी इल्म वाले बुज़ुर्ग की निगरानी में शरीअ़त की पाबन्दी से यह कैफ़ीयत पैदा करने में आसानी होती है मन की बुराइयाँ दूर करने और भलाइयाँ पैदा करने के लिये भी किसी बुज़ुर्ग की निगरानी सहायक होती है इसी ग़रज़ से किसी इल्म व अ़मल वाले बुज़ुर्ग से बैअ़त हुआ जाता है। जिसका सुबूत किताब व सुन्नत में मौजूद है। वाज़िह रहे एक बैअ़त इस्लामी निज़ामे हुकूमत की है जहाँ इस्लामी निज़ामे हुकूमत हो और अमीर इस्लामी निज़ाम चला रहा हो तो उससे बैअ़त ज़रूरी है दूसरी बैअ़त किसी बुज़ुर्ग से इस्लाहे नफ़्स के लिये है जो ज़रूरी तो नहीं है लेकिन बड़ी कार आमद और मुफ़ीद है।

नातो मन्कबत

हैदर अली नदवी

हम ख़ुदा की मर्ज़ी पर अपने को चलाएंगे
मुस्तफा की सुन्नत को हर अमल में लाएंगे
आप शाफ़ेअ़ महशर हैं और कसीमे कौसर है
हम गुनाहगारों को आप ही बख़्शवाएंगे
कामयाबी उक्बा में उनके हाथ आएगी
जो ख़ुदा के हुक्मों पर अपने को चलाएंगे
परचमे सहाबा हम शौक से उठाते हैं
अज़्मते सहाबा पर जानो दिल लुटाएंगे
बारगाहे मौला में ऊंचा उनका दर्जा होगा
जो ख़ुदा के बन्दों को राहे हक दिखाएंगे
ज़ुल्म करने वालों पर क़हर रब का आता है
ज़ुल्म करने वालों पर ज़लज़ले भी आएंगे
सूद लेना देना तो है ज़िना से भी बदतर
ख़ुद को सूद खोरी से दोस्तो बचाएंगे
जो नमाज़ें पढ़ते हैं पन्जगाना मस्जिद में
जन्नतुल फिरदौस में वह मज़े उड़ाएंगे
मुस्तफा की सीरत पर ख़ुद को जो चलाते हैं
जाम उनको कौसर पर मुस्तफा पिलाएंगे
मजलूम की आह जाती है बारगाहे मौला तक
हम किसी भी इन्साँ का दिल नहीं दुखाएंगे
बेशक उन मलऊनों को रब मेरा सज़ा देगा
जो दहेज़ की खातिर दुल्हने जलाएंगे
जिस्म चाहे टुकड़े हो कह रहे है ये सिद्दीक़
इर्तिदादी फित्ने को हर तरह मिटाएंगे
राय पर उमर की रब का हुक्म आया है
उनकी इस फजीलत को हम नही भुलाएंगे
जुर्म कौन था उनका जो शहीद कर डाला
जो ग़नी के क़ातिल हैं मुंह कहाँ दिखाएंगे
मुर्तज़ा की अज़मत से दिल हमारे हैं मअ़मूर
दुश्मने अली से हम लौ नही लगाएंगे
लिख गया है क़िस्मत में उनको रुस्वा होना है
जो नबी के प्यारों पर उंगलियाँ उठाएंगे
अज़मते सहाबा और मिदहते नबी लेकर
है यक़ीन ये हैदर हम मदीने जाएंगे

पतन के रास्ते पर समाज ...

---इलाज मुम्किन है---

मौलाना असरारुल हक़ कासिमी

मुस्लिम समाज की सूरतेहाल आए दिन तशवीशनाक होती जा रही है जिसके बाइस मुसलमानों को मुख़्तलिफ़ मसायल का सामना करना पड़ रहा है। इस पर तुर्रा यह कि मुस्तक़बिल क़रीब (निकट भविष्य) में इस खस्ता सूरतेहाल से बाहर निकलने के इमकानात नज़र नही आते क्योंकि वक़्त के साथ लोगों में जदीद तहज़ीब व मुआशरत की मक़बूलियत बढ़ रही है और वह इसको अपनाने में दिलचस्पी ले रहे हैं ताकि वह अपने ख़्याल के मुताबिक़ मेयारे ज़िंदगी को बेहतर बना सके और ज़्यादा से ज़्यादा इंज्वायमेंट कर सके। जबकि सच्चाई इसके बरअक्स है। जदीद तहज़ीब इंसान को सुकून फ़राहम नही करती। हां उसे कई मसायल से दो चार जरूर कर देती है। इसके बावजूद नई तहज़ीब की चमक दमक आज के इंसानों को अपना दीवाना बना रही है। इससे लोगों में नई तहज़ीब की चाहत बढ़ रही है और अपनी पुरानी तहज़ीब व मुआशरत से बग़ावत के रुझानात पैदा हो रहे हैं। जबकि होना यह चाहिए था कि दुनिया के तमाम मुसलमान अपनी तहज़ीब व मुआशरत को मज़बूती से थामे रहते और दूसरी तहज़ीब को बिल्कुल क़ुबूल न करते।

अपनी तहज़ीब व मुआशरत पर क़ायम रहना मिल्लते इस्लामिया के लिए इसलिए ज़रूरी है कि इसी से उसकी पहचान कायम है। अगर तहज़ीबी व मुआशरती इम्तियाज़ ख़त्म हो जाएगा तो उनकी पहचान जाती रहेगी और दुनिया में उनकी पहचान बाक़ी न रहेगी। कौमों की पहचान व इम्तियाज़ उनकी तहज़ीबों और मुआशरों से होती है। जो क़ौम अपनी मुआशरत पर क़ायम नहीं रहती उसका ज़वाल (पतन) शुरू हो जाता है और उसका वजूद ख़तरे में पड़ जाता है। मुसलमानों की ख़ास बात यह है कि वह हर दौर में अपनी तहज़ीब व मुआशरत पर क़ायम रहे और उन्होंने हर तरह के हालात में अपनी पहचान क़ायम रखी जिसके सबब उन्हें हर ज़माने में एक ज़िंदा क़ौम की हैसियत से जाना गया। मगर अब तहज़ीबी व मुआशरती इंक़िलाब जिस तरह दुनिया की दूसरी कौमों की पहचान को मिटाता जा रहा है उसी तरह बहुत से मक़ामात पर मुसलमान इस इंक़िलाब में बहते नज़र आ रहे हैं। इस लिहाज़ से मौजूदा दौर में मुसलानों का सबसे अहम मसला यह है कि वह अपने मिल्ली पहचान को कैसे महफ़ूज़ रखें और किस तरह अपनी इम्तियाज़ी शान के साथ दुनिया में बाक़ी रहे। अगर मुसलमान इस बात को ठान लें कि उन्हें अपनी तहज़ीबी पहचान को बरक़रार रखना है तो वह यक़ीनन ऐसा करने में कामयाब हो जाएंगें।

दरअस्ल दुनिया में मुसलमान ही वह वाहिद कौम है जिसके पास अपनी दीनी, तारीख़ी और समाजी पूंजी महफ़ूज़ है। उसके पास इस्लाम की बुनियादी किताब क़ुरआने मजीद मौजूद है जिसमें चौदह सदियां गुज़रने के बाद भी ज़र्रा बराबर हेरफेर नहीं हुई है और न होने वाली है। जबकि पहले नबियों और रसूलों पर नाज़िल होने वाली आसमानी किताबें हेरफेर का शिकार हो चुकी है इसके अलावा उम्मते मुसलेमा के पास आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की हदीसों का ज़खीरा भी मौजूद है सहाबा–ए–कराम के कौल व उनके किरदार से मुताल्लिक बड़ी तफ़सीली मालूमात भी महफ़ूज़ है। इसी तरह फ़ुकहाए उम्मत और उलमा की लिखी भारी भरकम मुस्तनद किताबों का भी एक बड़ा ज़खीरा उनके पास बाक़ी है। इसलिए मुसलमानों को अलग से निज़ामे ज़िंदगी बनाने की ज़रूरत नही और न ही उन्हें मुआशरती व तहज़ीबी ढांचा तैयार करने की ज़रूरत है, सिर्फ़ उस पर अमल करने की ज़रूरत है।

फ़िक्र व अमल की कमज़ोरी ने मिल्लते इस्लामिया को अपने मज़हबी, तहज़ीबी, तारीख़ी और इल्मी विरसे से दूर कर दिया है और वह माद्दी तरक़्क़ी और जदीद तहज़ीब की तरफ बढ़ती हुई नज़र आ रही है। ज़रूरत इस बात की है कि मुसलमानों के ताल्लुक़ को उनके दीन, उनकी तारीख़ और उनकी तहज़ीब व मुआशरत से मज़बूत कर दिया जाए। सिर्फ़ इतना करने से ही कई सतह पर इंकिलाब बरपा हो सकता है। ख़ास तौर से मुआशरती लिहाज़ से

मुसलमानों में बेदारी पैदा हो सकती है और वह इस्लामी समाज के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने वाले बन सकते हैं।

मिल्लते इस्लामिया को दीन से क़रीब लाने और मुकम्मल तौर पर इस्लामी मुआशरत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने के लिए बड़े पैमाने पर ज़िद्दोजुहद की जानी चाहिए। बेहतर होगा कि मुसलमानों के तमाम ज़िम्मेदार व हस्सास लोग इस मैदान में आगे आएं और अपनी हैसियत के मुताबिक कोशिश करें। उलमा और इमाम हज़रात इस मामले में ज़्यादा बेहतर ख़िदमत अंजात दे सकते हैं। एक तो इसलिए कि उनकी पहुंच दीन के बुनियादी माख़ज़ तक होती है, कुरआन व हदीस को वह समझने की सलाहियत रखते हैं और सालेह लोगों की लिखी किताबों से फ़ायदा उठाने की अहलियत भी उनके अन्दर पाई जाती है। दूसरे यह कि उलमा को दीन का वारिस बनाया गया है। यानी नबियों के बाद दीन की इशाअत व तब्लीग़ की ज़िम्मेदारी उन पर आती है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया 'यक़ीनन उलमा नबियों के वारिस हैं।'

इमाम आम तौर से उलमा होते हैं और उनकी दीनी जानकारी ज़्यादा होती है। इसलिए दीनी मुआमलात की इशाअत में उनका रोल ज़्यादा अहम होता है। मुक़्तदियों से भी उनकी जान पहचान होती है। लोग अपने इमामों की क़दर करते हैं उनकी बातों को मानते हैं और उनसे तअल्लुक़ रखते हैं। जो लोग पांच वक़्त मस्जिद में नमाज़ जमाअत के साथ अदा करते हैं इमाम हज़रात उन्हें बहुत सी दीन की बातें सिखा सकते हैं और उनकी ज़ेहन साज़ी कर सकते हैं।

आम तौर से जुमे की नमाज़ में ज़्यादा लोग होते हैं। जुमे के ख़ुतबे से पहले तक़रीरे करने का रिवाज तकरीबन सभी मस्जिदों में है। इसके ज़रिये लोगों को कुछ न कुछ दीनी मालूमात हासिल होती है। लेकिन अगर ज़्यादा मुनज़्ज़म तौर पर इमाम हज़रात आम मजमे में अवाम को समझाएं तो और बेहतर नतीजें की उम्मीद की जा सकती है। समाज की इस्लाह के लिए असरदार अंदाज़ में मुकम्मल बाते करें। उन्हें समाज की अहमियत से वाक़िफ़ कराएं। फिर समाज में फैली हुई बुराइयों से लोगों को आगाह करें। मसलन फ़ुजूलख़र्ची, झूट, बदगोई, ऐबजूई, जहेज़ का मुतालबा, तलाक़ का बेजा इस्तेमाल, औरतों के साथ जुल्म व ज़्यादती को जारी रखना, औरतों को लटका कर छोड़ देना, बेपर्दगी, बेहयाई, मर्द व औरत की आज़ादाना दोस्ती, गुमराहकुन रस्म व रिवाज, बिदआत व ख़ुराफ़ात, बराहरवी, अल्लाह के अहकाम से हटना, सुन्नते नबवी (सल्ल०) से बेज़ारी ग़ैर इस्लामी हरकतें और सिनेमा टी.वी वीसीआर सी.डी और नशीली चीज़ों के साथ जरायम वगैरह। साथ ही वह बुराइंया क्यों फैल रही हैं इसकी वजहों पर भी रौशनी डालें और अब समाज सुधार की क्या सूरत हो सकती है इससे मुतअल्लिक़ हल भी पेश करें। हलाल रोज़ी, तिजारत की ख़ैर व बरकत, वालिदैन और रिश्तेदारों के हुकूक़ की अहमियत, मुसलमानों के साथ अच्छा बरताव इंसान से मोहब्बत और वतन की हिफ़ाज़त जैसे मज़ामीन भी बयान किए जाएं।

आजकल हमारे समाज में ऐसी रस्में और तक़रीबें दूसरे समाजों से आ रही हैं जो गैर इस्लामी है या तो वह मनगढ़त और तवहहुम (अंधविश्वास) पर मबनी हैं। तवहहुम पर मबनी बातें हो या दूसरी सोसाइटियों की रस्में हों, इस्लामी नुक़्त–ए–नज़र से उनमें किसी की भी इजाज़त नही दी जा सकती। मनगढ़ंत और तवहहुमात पर यक़ीन रखने की इस्लाम में बिल्कुल इजाज़त नही। रही वह चीज़ें जो दूसरी सोसाइटियों से हमारे यहां आ रही है। उनको भी अपनाना मुनासिब नही। इस्लाम मुकम्मल दीन है और पूरा समाजी निज़ाम रखता है। इसलिए इसमें पहले से ही तमाम अच्छी चीज़ें मौजूद हैं। इसलिए इसके अलावा दूसरी बातों को अपने ऊपर लाज़िम करना क्योंकर दुरुस्त हो सकता है। इमाम हज़रात अपने मुक़्तदियों को बताएं कि कौन–कौन सी चीज़ें गैर–इस्लामी हैं और उनके क्या नुक्सानात हैं। जैसा कि बर्थडे मनाना, नया साल मनाना, राखी बंधन में हिस्सा लेना यह सब गैर–इस्लामी है। इस्लाम में इनका कोई सुबूत नहीं मिलता। इसलिए उनके बड़े नुक़्सानात हैं, फ़ुजूलख़र्ची, फ़ुहहाशी और बेपर्दगी की इन चीज़ोंसे बढ़ावा मिलता है। जबकि यह तमाम चीज़ें इस्लामी समाज के ख़िलाफ़ हैं। आजकल यह बात भी धीरे–धीरे मुस्लिम समाज में फैलती जा रही है कि मुसलमानों के त्यौहारों में दूसरे लोग और ग़ैर मुस्लिमों के त्यौहारों में कुछ मुसलमान शिरकत करने लगे हैं। यह भी सही नही। क्योंकि मुसलमानों और ग़ैर मुसलमानों के त्यौहारों में फ़र्क़ होता है और त्यौहार आम तौर से मज़हबी लिहाज़ से होते हैं। इस्लाम एक सादा अम्न पसंद

मज़हब है। इसके यहां इबादत का उंसुर (तत्व) गालिब है। इंसान का जिस क़दर वक़्त इबादत में गुज़रेगा उसी क़दर वह अल्लाह के नज़दीक और महबूब होगा और अपने मक़सद के क़रीब होगा। अगर समाजी ज़िंदगी इस्लाम के मुताबिक़ गुज़ारी जाए तो इंसान अपने मक़सद को हासिल करने वाला होता है।

इमामों को चाहिए कि वह नए ज़माने के हालात से भी वाक़िफ रहे और जो चीज़ें इस्लाम और मुसलमानों के लिए नुक्सानदेह हो उनसे मुसलमानों को वाक़िफ़ कराएं ताकि मिल्लते इस्लामिया नाजुक हालात से महफूज़ रहे और कभी–कभार उठने वाले मसायल से मुक़ाबला कर सके। मस्जिदों के इमामों को यह भी चाहिए कि वह उन ज़रूरी बातों पर लोगों का ध्यान खीचें जिनसे ग़फ़लत पूरी क़ौम के मुस्तक़बिल के लिए तबाहकुन हो सकती है।

तालीम मौजूदा दौर में हर शख़्स के लिए ज़रूरी है और इस्लाम ने इस को हासिल करने की तरफ़ मुख्तलिफ़ अंदाज़ से लोगों का ध्यान खींचा है। इमाम हज़रात तालीम की मुहिम को आम मुसलमानों में चलाए और उनको इस बात की तरफ़ मोड़े कि वह अपने बच्चों को मेयारी तालीम से संवारे। मौजूदा दौर में दीनी व मार्डन दोनों तरह की तालीम ज़रूरी है। इसलिए वाल्दैन की यह कोशिश होनी चाहिए कि वह अपने बच्चों को दोनों तरह की तालीम से संवारे। अख़्लाक़ी तालीम का आज के ज़माने में फुक़दान (अभाव) होता चला जा रहा है और लोग अपने बच्चों को माद्दी तालीम दिलाने में ज़्यादा दिलचस्पी ले रहे हैं ताकि माद्दी तालीम हासिल करके बड़ी रक़म हासिल की जा सके। आम रुझान को देखते हुए मुसलमानों में भी यह रुझान आने लगा है और बहुत से मुसलमान दूसरों को देखते हुए अपने बच्चों को सिर्फ दुनियावी तालीम हासिल कराने में दिलचस्पी ले रहे हैं और दीनी व अख़्लाक़ी तालीम को नज़रअंदाज़ कर रहे हैं। यह मुसलमानों के लिए मुनासिब नही क्योंकि मोमिन की ज़िंदगी का अस्ल मक़सद दौलत हासिल करना नही है बल्कि आख़िरत को कामयाब बनाना है। क़ुरआनी तालीम के मुताबिक़ मुसलमानों की कामयाबी दुनिया व आख़िरत की भलाई में है। इमाम हज़रात को चाहिए कि वह इस बात की कोशिश करे कि उनके हलके में कोई मुस्लिम बच्चा ऐसा बाक़ी न रहे जो क़ुरआने मजीद और दीन के ज़रूरी मसायल से वाक़िफ़ न हो। यक़ीनन यह कोशिश तमाम मुस्लिम बच्चों को दीनी तालीमात से आरास्ता कर सकती है और इससे बच्चों का दीनी माहौल बन सकता है। जिसका आगे चलकर नतीजा यह निकलेगा कि बच्चे का ज़ेहन बड़ी हद तक दीनी हो जाएगा और माद्दियत का उस पर असर न पड़ेगा। मस्जिदों के इमामों का मुसलमानों के हालात को सुधारने में बड़ा अहम किरदार हो सकता है। बशर्ते कि वह अपनी ज़िम्मेदारियों को समझे और पूरे जज़्बे के साथ मिल्लत की ख़िदमत में लगे और उनको सच्चा–पक्का मुसलमान बनाने के लिए कमर कस लें।

पये इल्म चूं शम्अ़ बायद गुदाख्त
कि बे इल्म न तवां खुदा रा शिनाख्त
(सअदी)

हालैंड की मुसलमान छात्रा अदालत में मुकदमा जीत गयी

उस्ताद से हाथ न मिलाने पर छात्रा को स्कूल से निकाल दिया गया था अदालत ने दाखिला बहाल कर दिया,

एमेस्टरडेम (अल-अहरार) हालैण्ड की अदालती कमीशन ने मुसलमान औरत को मर्द से हाथ मिलाने से इनकार की इजाजत दे दी है, तफसीलात के अनुसार एक मुस्लिम छात्रा ने एमस्टरडेम में अपनी क्लास के दौरान मर्द उस्ताद से हाथ मिलाने से इन्कार कर दिया था, जिस की वजह से प्रबन्धकों ने उस छात्रा को स्कूल से निकाल दिया, गल्फ न्यूज के अनुसार छात्रा का मौकिफ था कि इस्लाम किसी गैर मर्द से हाथ मिलाने की इजाजत नहीं देता और उसे अपने दीन के अनुसार जिन्दगी गुजारने का मुकम्मल इख्तियार है, डच कमीशन ने छात्रा के ऊपर कारवाई कर के फैसला दिया है कि मुस्लिम औरतें मर्दों से हाथ मिलाने की पाबंदी नहीं है, अगर वो चाहें तो इससे इंकार कर सकती है, ध्यान रहे! कि हालैड में दस लाख से अधिक मुसलमान आबाद है जिनकी बड़ी संख्या तुरकी और मरकश से तअल्लुक रखती है, अदालत के फैसले के बाद मुस्लिम हलकों ने खुशी का इजहार किया।

0522-2201540
M.R.
Jewellers
Manufacturer & Seller
All kinds of Gold & Silver Jewelleries
Shop No. 1, Haji Nanhey Market,
Opposit Mumtaz Inter College,
Jutey Wali Gali, Aminabad, Lucknow
Prop. Mohd. Ali

रमज़ान आ रहा है

अबू मर्गूब

हज़रत सलमान (रजि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने शअ़बान के आखिरी जुमे (जुमुअ़) में ख़ुत्बा पढ़ा और फ़रमाया : ऐ लोगो तुम्हारे पास एक बड़ा और बरकत वाला महीना आ पहुंचा (यअ़नी रमज़ान) ऐसा महीना जिस महीने में एक रात है जो (ऐसी है जिसमें इबादत करना) एक हज़ार महीने (तक इबादत करने) से अफ़ज़ल है। अल्लाह तआ़ला ने उस के रोज़े को फ़र्ज़ किया है और उसकी रातों में जागने का हुक्म दिया है। (यअ़नी तरावीह की नमाज़ पढ़ना मस्नून किया है।) जो शख़्स इस महीने में कोई मुस्तहब नेक काम करेगा उस को दूसरे दिनों के फ़र्ज़ के बराबर सवाब मिलेगा, और जो कोई इस महीने में फ़र्ज़ अदा करेगा उस को दूसरे दिनों के फ़र्ज़ के मुक़ाबले में सत्तर गुना बढ़ा कर सवाब मिलेगा। जो शख़्स इसमें किसी को रोज़ा खुलवा दे यह उस के गुनाहों की मुआफ़ी और जहन्नम से छुटकारे का सबब बनेगा और उसको भी उस रोज़ेदार के बराबर सवाब मिलेगा इस तरह की रोज़ेदार के सवाब में कोई कमी न होगी। सहाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) हम में से हर एक के पास इतना नहीं है कि रोज़ेदार को इफ़्तार करा सके (पूछने वाले ने समझा था कि पेट भर खाना खिला दे) आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला यह सवाब उस शख़्स को भी देता है जो किसी रोज़ेदार का रोजा एक छुवारे से खुलवा दे या प्यास भर पानी से या दूध की लस्सी से रोज़ा खुलवा दे।

(यह मुस्लिम की एक हदीस का मफ़हूम है)

इस रिवायत की पैरवी में आमतौर से रवाज है कि शअ़बान के आख़िरी जुमे के दिन मस्जिदों के इमाम रमज़ान के इस्तिक़बाल (स्वागत) पर तक़रीरें करते हैं। और बेशक रमज़ान का यह हक़ है कि हर मुसलमान शाबान ही से रमज़ान की तैयारे करे और अपने मुतअ़ल्लिक़ीन और अपने भाइयों को रमज़ान की आमद पर मुतवज्जेह करे। सहाब–ए–किराम तो दीन में ग़फ़लत करने वाले न थे जब अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपने सहाबा को शअ़बान ही में रमजान की अहम्मीयत पर वअ़ज़ कहा तो हर उम्मती को भी चाहिए कि शअ़बान ही में उस वअज को याद करे और अपने मुतअ़ल्लिक़ीन को याद दिलाए।

आज आम तौर से देखा जाता है कि जब किसी का अज़ीज़ किसी ख़लीजी मुल्क से इत्तिलाअ देता है कि मैं अगले माह की फुलां तारीख को आ रहा हूं तो घर वाले उसका कितना चर्चा करते हैं और कितना इहतिमाम करते हैं, घर की सफ़ाई, आने वाले के कमरे की ज़रूरियात का मुहय्या करना, हवाई अड्डे पर लेने जाने के लिए गाड़ी का इन्तिज़ाम करना वग़ैरह फिर रमज़ान जैसे महीने के आने की तैयारी में शअ़बान ही से क्यों ने फ़िक्र की जाए जिस के बारे में अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फरमाया जिसे हज़रत अबू ख़ुदरी ने रिवायत किया है कि :

जब रमज़ान की पहली रात होती है तो आसमानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, फिर उन मे कोई दरवाज़ा बन्द नहीं होता यहां तक कि रमज़ान की आख़िरी रात हो जाती है और जो कोई ईमानदार बन्दा इस की किसी रात में (रमज़ान से मुतअ़ल्लिक) नमाज़ पढ़े (तरावीह वग़ैरह) तो अल्लाह तआ़ला हर सज्दे के बदले में डेढ़ हज़ार नेकियां लिखता है और उसके लिए जन्नत में एक घर सुर्ख़ याक़ूत से बनाता है, जिस के साठ हज़ार दरवाज़े होंगे उनमें से हर दरवाज़े से मुतअ़ल्लिक़ एक सोने का महल होगा जो सुर्ख़ याक़ूत से सजा होगा, फिर जब रमाज़न के पहले दिन का रोज़ा रखता है तो उसके सब पिछले रमज़ान की पहली तारीख़ तक के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं और हर रोज़ सुबह की नमाज़ से लेकर आफ़ताब छुपने तक सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उस के लिए मग़फ़िरत की दुआ करते हैं और यह जितनी नमाज़ें रमाज़न के महीने में पढ़ेगा चाहे दिन में चाहे रात में हर सजदे के बदले एक दरख़्त मिलेगा जिस के साये में सवार पांच सौ बरस तक चल सकेगा। (बैहकी–मफ़हूमे हदीस)

पस ऐसे महीने की तैयारी हम को शअ़बान ही से करना चाहिए, तैयारी इस तरह की हम इरादा करें कि अल्लाह तआ़ला के इस इनआ़म की क़द्र करेंगे, इस का कोई वक़्त बेकार न जाने देंगे,

इस महीने में रोजा जरूर रखेंगे। अगर हमारा काम हार्ड वर्क का है जिस में रोज़ा रखना कुछ मुश्किल हो ता है तो शअ़बान ही से उसकी तदबीरें करें कि रमज़ान में काम हल्का हो जाए और अगर मजबूरी है जैसे किसान को खेत में काम करना है या मज़दूर को मेहनत करना है तो हिम्मत न हारें शअ़बान ही से हिम्मत करें कि हर हाल में रोज़ा रखना है अगर हिम्मत व नीयत होगी तो अल्लाह तआ़ला मदद फ़रमाएंगे। यूं तो मुसलमान हमेशा हलाल रोज़ी खाता है लेकिन रमज़ान के लिए खास इहतिमाम करना चाहिए कि हलाल व तय्यिब रोजी हो शक व शुब्हे से पाक हो। अगर अल्लाह ने दे रखा है तो रमजान में नेक कामों पर ख़र्च करने का मन्सूबा बना लें। अगर साहिबे निसाब हों यअ़नी ज़कात फ़र्ज हो तो शअ़बान ही से मन्सूबा बना लें ज़कात रमज़ान में निकालेंगे ताकि सवाब सत्तर गुना मिले, शअ़बान ही में फ़ैसला कर लें कि ज़कात व ख़ैरात की रक़म फ़ुलां फ़ुलां अ़ज़ीज़ों और फ़ुलां फ़ुलां मदरसों और फ़ुलां फ़ुलां नेक कामों में ख़र्च करना है।

गरज़ कि शअ़बान के महीने में रमज़ान की आमद का चर्चा भी हो और हर तरह से तैयारी भी।

मगर बड़े अफ़सोस की बात है कि हमारे बहुत से भाई अपनी ना समझी से शअ़बान के महीने में बहुत से ख़ुराफ़ाती कामों में मुब्तला हो जाते हैं शअ़बान के महीने के लिए हदीस से सिर्फ़ तीन बातें साबित हैं, पहली बात शअ़बान की पन्द्रहवी रात को क़ब्रिस्तान जा कर मुसलमान मुर्दों के लिए मग़फ़िरत की दुआ करना, अब इसमें यह ज़ियादती हुई है कि कहीं से तो कोई क़ब्रिस्तान का रूख भी नहीं करता खैर यह कुछ ज़ियादा ख़राब बात नहीं है कि बअ़ज़ जगहों पर क़ब्रिस्तान बस्ती से दूर होते हैं और बअ़ज़ जगह जंगल झाड़ी के सबब रात में वहां कीड़े मकोड़ों का भी ख़तरा होता है लिहाज़ा अगर बसुहूलत क़ब्रिस्तान जाया जा सके तो पन्द्रहवीं रात क़ब्रिस्तान जा कर मुसलमान मुर्दों के लिए दुआए मग़फ़िरत करें वरना घर ही पर रह कर सुफया तौर पर कुछ अल्लाह की राह में ख़र्च कर के उस का सवाब मुर्दों को बख़्शें और उन के लिए मग़्फ़िरत की दुआ करें।

बअ़ज़ जगह पन्द्रहवी शब को क़ब्रिस्तान बिल्कुल मेला हो जाता है, हर क़ब्र पर रौशनी अगर बत्ती औरतों का हुजूम यह सब ज़ियादती की बात है, हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तो जन्नतुल बक़ीअ़ अकेले गये थे न चिराग जलाया था न अगर बत्ती न लोबान बस मग़्फ़िरत की दुआ कर के लौट आए थे।

दूसरी बात जो हदीस से साबित है वह इस रात जाग कर इबादत में मशग़ूल होना है, मस्जिद में हो या घर में अकेले हो या दो चार लोगों के साथ हो। लेकिन इस में भी ज़ियादती यह हुई कि बअ़ज़ मस्जिदों में खाने की देगें चढ़ती हैं रात भर खाना पीना शोरग़ुल हंगामा, इबादत की रूह फ़ना हो जाती है सिर्फ़ दिखावा हाथ आता है लिहाज़ा इहतियात चाहिए।

तीसरी बात जो किसी हद तक साबित है वह पन्द्रहवी शअ़बान का रोज़ा है जो नफ़्ली है।

इन तीन बातों के सिवा पन्द्रहवी रात आतिश बाज़ी तो गुनाहे कबीरा है इसी तरह हल्वे को लाज़िम करना बिदअ़त है, जो खाना चाहे पकाएं खाएं लेकिन किसी खाने को लाज़िम करना ठीक नही।

ग़रज कि शअ़बान की पन्द्रहवीं रात या पन्द्रहवीं तारीख़ को वही करना चाहिए जिस का सुबूत हो और खुराफ़ात व बिदअ़ात से बचना चाहिए और आख़िर शअ़बान में बाहम रमज़ान का चर्चा होना चाहिए और रमज़ान के रोज़ों की तैयारी और रमज़ान में नेक कामों की मन्सूबा बन्दी होना चाहिए।

रमज़ान के इस्तिक़बाल (स्वागत) में यह बात भी आती है कि २९ शअ़बान को ज़ौक़ व शौक और इहतिमाम से चान्द देखने की कोशिश करें और चान्द देखकर खुशी महसूस करें और मस्नून दुआ पढ़ें।

अगर आसमान साफ़ न हो बादल हो, या गर्द ग़ुबार छाया हो ऐसी सूरत में अगर किसी नेक मुसलमान को चान्द दिख जाए तो उस को चाहिए कि वह मस्जिद के इमाम या किसी आ़लिम को बताए कि मैंने चान्द देखा है फिर वह आ़लिम या इमाम चान्द देखे जाने का एअ़लान कर दे और फिर इशा में तरावीह पढ़ी जाए और सुब्ह से रोज़ा रखा जाए। आज कल फ़ज़ाई कसाफ़त (प्रदूषण) के सबब कभी आसमान साफ़ दिखता है मगर साफ़ नहीं होता ऐसी सूरत में अगर कोई नेक मुसलमान चान्द देखने की गवाही दे तो मान लेना चाहिए।

कुइज़ क्या है?

अब्दुल्लाह

कुइज (**Quiz**) अंग्रेजी शब्द है यह संज्ञा (इस्म) भी है और क्रिया (फिअ़ल) भी, अर्थ है मस्खरा, वह व्यक्ति जिसे देख कर हंसी आए, हंसी उड़ाना, लेकिन इस दौर में एक विशेष अर्थ (खास मअ़ना में) प्रयोग है **Questions asked to test knowledge** योग्यता जांचने के लिए प्रश्न।

आजकल कुईज़ का बड़ा रवाज है, अन्जुमनों, स्कूलों मदरसों सब जगह कुइज़ के इनआ़मी मुक़ाबले होते हैं। शुरूअ़ में मदरसों में यह तरीक़ा होता था कि जैसे चालीस तलबा कुइज़ में हिस्सा लेना चाहते हैं तो इन के चार ग्रुप कर दिये जाते पहले दो ग्रुप में मुक़ाबला होता फिर दूसरे दो ग्रुपों में फिर जीते हुए दोनों ग्रुपों में मुक़ाबला होता और फिर जीता हुआ ग्रुप इनआ़म (पुरस्कार) पाता, ज़ियादा भी ग्रुप होते, हर दूसरे ग्रुप को मुतअ़य्यन वक़्त दिया जाता।

अब कुइज़ ने तरक़्क़ी कर के एक नई शक्ल इख़्तियार कर ली है। पहले जनरल नालेज के खुवालात होते थे अब कोई किताब नियुक्त कर ली जाती है। मान लो भारत के इतिहास पर कोर्स की जो किताब है उस पर कुइज़ का मुक़ाबला करना है तो कुइज़ का नाम रखा "इतिहासिक कुईज़" अब जितने तलबा शरीक होना चाहें उन सब को एक साथ तरतीब से बिठा लिया चाहे दो लाइनों में चाहे गोल दाइरे में, मान लो तीस तलबा शरीक हो रहे हैं तो किताब से कम से कम तीन सौ बीस सुवाल बना कर अलग अलग कार्ड पर लिख लिये, बेहतर होता है और जियादा मुफीद होता है कि यह सुवालात शरीक होने वालों की नजर से गुज़ार दिये जाएं, सुवालात छोटे छोटे हों जिन के जवाबात, एक जुम्ले (वाक्य) में या एक दो लफजों (शब्दों) में किताब में वाज़ेह तौर पर मौजूद हों। फिर हर कार्ड पर लिखे सुवाल का मुख़्तसर जवाब सुवाल के नीचे किताब के सफ़ह (पृष्ठ) नम्बर के साथ लिख लिया जाए। एअ़लान कर दिया जाए कि हर सुवाल के जवाब के लिए दस सेकण्ड दिये जाएंगे, इस तरह तीन सौ सुवालात के लिए तीन हज़ार सेकेण्ड चाहियें और तालिब इ़ल्म को बुलाने और सुवाल करने के लिए भी कम से कम एक घण्टा चाहिए, इस तरह यह मुक़ाबला एक घण्टा चालीस मिनट या ज़ियादा से ज़ियादा दो घण्टों में पूरा हो जाएगा।

अब कम से कम दो हकम (नम्बर देने वाले) बिठाये जाएं जिन के पास तलबा की लिस्ट तर्तीब वार हो। हर तालिब इ़ल्म के सामने दस ख़ाली ख़ाने हों जिन में हकम हर राउण्ड में नम्बर दे सके। सुवाल का जवाब ग़लत हो तो खाने को क्रास करें, जवाब बिल्कुल सहीह़ हो तो एक सुवाल के जवाब पर पांच नम्बर दें, जवाब सहीह़ हो मगर सलीक़े से न दिया गया हो तो हकम अपनी समझ से कुछ नम्बर कम कर दे, मगर इस का एअ़लान हो कि अगर जवाब सलीक़े से न दिया तो सहीह़ होने पर भी नम्बर कम हो सकते हैं। इस तरह हर तालिब इ़ल्म को दस बार जवाब देने का मौक़अ़ मिलेगा और सारे जवाबात सहीह़ होने पर हर हकम से पचास नम्बर पाएगा।

आख़िर में हकम साहिबान हर एक के नम्बर अलग अलग जोड़ कर फ़र्स्ट, सेकेण्ड, थर्ड निकाल कर इनआ़म के लिये नतीजा पेश करेंगे।

सुवालात के सारे कार्ड एक डिब्बे में रख कर एक शख़्स एक एक तालिबे इ़ल्म को बुलाकर हर बार एक कार्ड निकाल कर सुवाल पढ़ कर सुनाएगा, जवाब सहीह़ होने पर एअ़लान करेगा कि जवाब सहीह़ है ताकि हकम साहिबान नम्बर दे सकें, जवाब ग़लत होने पर सुवाल करने वाला एअ़लान करेगा कि जवाब ग़लत है और सहीह़ जवाब यह है।

कुइज़ का खेल बड़ा मुफ़ीद खेल है जिस के जरीअ़े मुश्किल किताब आसानी से हल की जा सकती है।

Noor Ahmad 0522-2005079
Prop. 2273297
Haji Noor Ahmad Jewellers
143/75, Joote Wali Gali,
Behind Mumtaz Market,
Aminabad, Lucknow

जुल्म व ना इन्साफी और खुदगरज़ी से बचने की ज़रूरत

मौ० मुहम्मद राबे हसनी नदवी

बर्रे सगीर (उप महाद्वीप) हिन्द व पाक में हिन्दोस्तान एक लम्बा चौड़ा और भारी आबादी वाला मुल्क है। दो शताब्दियों से साम्राजी कब्जे में रहने के पश्चात आजाद हुआ। साम्राजी काल में यहां की आबादी को बहुत कमजोर और पसमान्दा (अनुन्नत) जिन्दगी से गुजरना पड़ा था। अतः १९४७ई० में हासिल की हुई आजादी से उस को अपनी जिन्दगी को मजबूत खुशहाल (समृद्ध) और तरक्की याफता (उन्नतिशील) बनाना था। दुन्या के आजाद मुल्कों में जो तरक्की हो रही थी उसकी बराबरी बल्कि उससे भी अच्छी सूरत हासिल करना थी चुनांचि मुल्क के जियालों ने इस का अज्म (संकल्प) किया और मुल्क आगे बढ़ने लगा। तरक्की याफता लोगों और मुल्कों के बराबर पहुंचने के लिए जिस मेहनत और कोशिश से गुजरना था वह शुरूअ हुई और मुल्क ने तरक्की (प्रगति) की और वह अभी तअमीरी (रचनात्मक) कोशिशों की राह में है। ऐसी दशा में और इस रचनात्मक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए देश के अन्दर एकता और पारस्परिक सहयोग का बड़ा महत्व होता है। इस सिलसिले में इन्सानी ताकतों का इस्तिअमाल यकसूई (चित्तस्थिरता) और बाहमी हमदर्दी (सहानुभूति) और वसीउलकल्बी (उदारता) के साथ करना होता है। मुल्क की आबादी चूंकि मुख्तलिफ मजाहिब (विभिन्न धर्मों) मुखतलिफ तहजीबां (विभिन्न सभ्यताओं) और तबकाती लिहाज से (वर्गानुसार) मुख्तलिफ अनासिर (तत्वों) पर मुश्तमिल (आधारित) है अर्थात समाज विभिन्न भागों में बटा हुआ है जिनके बीच आसानी से फिर्कावाराना (साम्प्रदायिक) और तबकाती तअस्सुब (ऊंच नीच में पक्षपात) तथा मुफादात (अपने अपने फाइदों) का टकराव हो सकता है जिस को हिक्मत और खुश अखलाकी (सद भावना) के जरीअे कन्ट्रोल करने की जरूरत है ताकि मुल्क की तरक्की के लिए उस के मुख्तलिफ अनासिर (विभिन्न तत्वों) और वर्गों के बीच एकता तथा सहवाणिता से सहयोग मिल सके और देश के हिति की सुरक्षा हो सके। इसके लिए यह जरूरी है कि देश निवासियों को उनके स्वदेशी अधिकार बराबरी की नीति से प्राप्त हो। और जब देश विभिन्न तत्वो पर आधारित है जिन में बहुसंख्यक तथा अल्पसंख्यक का अन्तर भी है तो जरूरत है कि इस बात की फिक्र रखी जाए कि आपस का यह मतभेद एक दूसरे को गलत नजर से देखने और मुआमलात में बराबरी का बरताव न करने की हद तक न पहुंचा दे और फूट और तनाव की सूरत न पैदा हो और किसी वर्ग तथा तत्व को अपने से गालिब उन्सर (अधिकार प्राप्त वर्ग) की तरफ से विरोधी स्वभाव से साबका न पड़े। वास्तव में यह बड़ी जिम्मेदारी देश की बुद्धिजीवियों तथा सत्ता प्राप्ति जनों पर आती है। उन को इस बात की फिक्र रखना होती है कि वह देश के सभी निवासियों के मुआमले में एक तरह का रवय्या रखे जाने पर ध्यान दें देखें कि क्या उनको उनका जम्हूरी हक (लोकतांत्रिक अधिकार) सेकुलर आधार पर पूरा पूरा मिल रहा है? प्रत्यक्ष है कि देश में कुछ ऐसे तत्व अवश्य हो सकते हैं जो अपने अतिरिक्त दूसरों को अवसर देने के पक्ष में न हों वह कभी अपनी बहुसंख्यक शक्ति की बिना पर अल्पसंख्यकां के साथ हकतलफी और अति को बुरा नहीं समझते इस प्रकार मुल्क की आबादी के एक भाग को बे चैन और बदगुमान बना सकते हैं और हमारे इस विभिन्न वर्ग और विभिन्न धर्म रखने वाले देश में ऐसा हो रहा है।

आजादी के बाद मुल्क में होने वाली घटनाओं में इस के खुले हुए उदाहरण मिलते हैं और यह स्पष्ट दिखाई देता रहा है कि यह कार्यप्रणाली देश की उन्नति के लिये जो शान्तिपूर्ण रहा है। बहुसंख्यक के कुछ तत्वों की ओर से उदारता तथा सहानुभूति का उल्टा, टकराव और जुल्म का रवैया इख्तियार करना और सत्ता की ओर से उस पर अनदेखी करना देश के भविष्य को उत्तम बनाने में कमजोरी पैदा करने वाला कार्य सिद्ध हो सकता है, जिस की ओर देश के शुभचिन्तकों तथा बुद्धिजीवियों को उचित ध्यान देने की आवश्यकता है जिस की कमी निरन्तर चल रही है।

मुसलमान इस देश में एक बड़े अल्पसंख्यक हैं और लोकतांत्रिक स्तर पर वह दोसरे तत्वों, वर्गों की भांति ही स्वदेशी अधिकार रखते हैं परन्तु उनको समय समय पर शक की परिधि में ले आया जाता है जब कि देश को स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय मुसलमान अपने देश से सम्बन्धित मुआमलों में निरन्तर काबिले इतमीनान तरीके पर कारबन्द रहे हैं तथा देश की सुरक्षा के लिये प्रयास करते रहे हैं और इस की उन्नति के कार्यों में भरपूर भाग लेते रहे हैं परन्तु खेद तथा दुख की बात है कि देश में कभी कभी जो विनाशात्मक घटनाएं घटती हैं उनमें तुरन्त मुस्लिम अल्पसंख्यक पर आरोप लगाने का एक नियम सा बन गया है। जब कि देश में होने वाले हिंसा तथा आतंक की बहुत सी घटनाओं का सम्बन्ध बहुसंख्यक लोगों से सिद्ध होता रहता है परन्तु जहां और जिस घटना में कुछ भी गुंजाइश अल्प संख्यक के किसी व्यक्ति अथवा व्यक्तों पर शंका करने की होती है बिना पूरी जांच पड़ताल के मुस्लि कौम से उस को सम्बन्धित कर दिया जाता है और जांच से पहले ही उस को अपराधी के समान घोषित कर दिया जाता है। देश के कई भाग हैं जहां हिंसा तथा आतंक की घटनाएं बराबर दूसरे फिर्कों की ओर से घटती रहती हैं और उन पर आरोप पूरी तरह सिद्ध भी हो जाता है वहां उनके धर्म से उसे नहीं जोड़ा जाता परन्तु मुस्लिम अल्प संख्यक के किसी व्यक्ति अथवा गुट पर शंका हो तो उस को इस्लाम धर्म से खुल कर जोड़ दिया जाता है जब कि अपराधी अपने धर्म की बिन पर नहीं अपितु अपनी ख्वाहिश, चाहत और अपने जाती अपराधी भाव से वह अपराध करते हैं।

मुस्लिम अल्पसंख्यक इस देश में जिस संख्या में हैं उसके अनुसार वह देश के शरीर का एक सुदृढ़ अंग है इस अंग को कष्ट देकर उसे निर्बल रखना, समय समय पर उसके लिए चिन्ता तथा बेचैनी पैदा करना देश की दृढ़ता तथा उन्नति को हानि पहुंचाना है। आर्थिक व्यवस्था हो अथवा सत्ता तथा शक्ति की समस्या हो, इस में देश के इस महत्वपूर्ण अंग को उस की पूरी कारकर्दगी (कर्मणयता) तथा योग्यता का हक न देना भविष्य के लिए सहायक बनने वाला रवय्या नहीं है। यह देश के समस्त विभिन्न बुद्धिजीवियों सत्ता आरूढ़ जनों के समझने की बात है कि देश को स्वतंत्रता मिलने के पश्चात से उन्नति तथा दृढ़ता प्राप्त करने की जो आवश्यकता है उस के साधनों में देश के विभिन्न वर्गों में पारस्परिक एक स्वरता तथा हार्दिक प्रसन्नता एक बड़ा साधन है इस साधन को निर्बल न करना चाहिए। जो वसाइल (साधन) हैं उनसे पूरी सहायता लेना चाहिए देश अभी उन्नति के मार्ग में है और इस के निवासियों में जो कमजोरियां कई पहलुओं से पैदा हो गई है देश की दृढ़ता तथा उन्नति के लिए उनको दूर करने की बड़ी आवश्यकता है। इस मुआमले में असावधानी से देश का हाल बड़े बिगाड़ में पड़ सकता है। इस समय हाल यह है कि जिन लोगों के भी हाथ में लाभ पहुंचाने का अधिकार आ जाता है उनकी सारी फिक्र और ध्यान अपने जाती फाइदे में लग जाती है चाहे उससे देश को कितनी ही हानि पहुंचे, जाती फाइदे के लिए देश का नुक्सान गवारा हो जाता है।

मानवी आचरण जो देश की नैतिक संपत्ति है उसकी उपेक्षा करते हुए केवल निजी हितों में अपना ध्यान सीमित कर देना एक प्रकार की मानवी तथा नैतिक बीमारी है, यह किसी भी कौम में हो सकती है और होती हैं, परन्तु आवश्यकता इस बात की होती है कि बुराई को बुराई माना जाए और कम से कम बुद्धि जीवी तथा सत्ता आरूढ़ जन बुराई को बुराई कहने और उस को दूर करने की चिन्ता करें, वर्ना मुल्क व मिल्लत (देश व कौम) में पैदा होने वाली बुराइयां मुल्क व मिल्लत को दीमक की तरह चुपके चुपके खोखला करके पतन का कारण बन सकती है।

बहरहाल देश निवासियों के स्वभाव को मुआमलात में न्याय करने और अच्छे बुरे के बीच अंतर करने वाला बनाने की आवश्यकता है। इस सिलसिले में बड़ी जिम्मेदारी देश के बुद्धिजीवियों तथा सत्ताधिकारियों पर आती है और मीडिया को इस में न्याय का स्वभाव अपनाने की आवश्यकता है कि अपने पसन्द के धर्म के अतिरिक्त धर्म वालों के दोष ढूंढ ढूंढ कर प्रकाशित करना और अपनी पसन्द के लोगों के दोषों को छुपाना मुल्क व कौम के साथ शुभेच्छा नहीं है अपितु दुराशय है कि अपने दोष न जानने पर उनसे बचने की भावना भी न पैदा होगी, और देश में सुधार न आएगा। सत्ताधारी मुआमलात को प्रचलित करते हैं और मीडिया वाले लोगों का जिहन बनाते हैं अतः दोनों को अपना महत्वपूर्ण कर्तव्य न्याय पूर्वक पूरा करना चाहिए।

(शेष पृष्ठ १५ पर)

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

डॉ० मुईद अशरफ नदवी

शताब्दी के अन्त तक यूरोप "अरबीयूरोप" में बदल सकता है

मशहूर पत्रिका "इकोनामिस्ट" ने लिखा है कि यूरोप में इस्लाम तेज़ी से फैल रहा है और अरब विषय के विशेषज्ञ बरनार्ड डलेविस इस भविष्यवाणी से सहमत हैं कि यूरोप इस शताब्दी के अन्त तक इस्लामी और अरबी क्षेत्र "यूरो अरब" में बदल जाएगा। रिपोर्ट में कहा गया है कि परिस्थिति इतनी गम्भीर है कि अब इस विषय पर पुस्तकें भी प्रकाशित होना शुरू हो गई हैं। धार्मिक रुचि का सेकूलरज़्म से मुकाबला नहीं किया जा सकता क्योंकि इस समय यूरोप में इतनी संख्या में लोग चर्च नहीं जाते जितनी संख्या में मुसलमान मस्जिदों में इबादत के लिए जाते हैं।

११ सितम्बर के हमलों और लन्दन, मैडरिड बम धमाकों से इस्लाम पसन्दी की रफ़तार कुछ धीमी पड़ गई अलबत्ता यूरोपीय समाचार पत्रों में अपमानजनक कारटूनों के प्रकाशन के बाद हंगामों, हालैण्ड फिल्म निर्माणकार श्यूरन गोद्य की हत्या और उसके साथी अयान हरसी की अमेरिका में देश निर्वासन (जला वतनी) की घटनाएं इस संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं। रिपोर्टस में इकोनामिस्ट का कहना है कि "लन्दनिस्तान" की स्थापना के खतरे बहुत बढ़ते जा रहे हैं और वर्तमान परिस्थितियों में बाएं बाजू (वामपंथी) के युद्ध विरोधी ग्रूप और इस्लाम पसन्द ग्रूप निकट आ गए हैं। समस्या यह है कि यूरोप इस्लाम के हवाले से कार्यवाही में विरोध (इख़्तिलाफ़) का शिकार है। फ्रांस में मुसलमान छात्राओं पर स्कार्फ़ पहनने की पाबन्दी जैसे कठोर क़दम उठा रहा है। दूसरी तरफ ब्रिटेन की पालिसी बहुत ही नर्म है। इस दर्मियान मुस्लिम आबादी वाला तुर्की यूरोपीय यूनियन में शामिल होने के लिए पर तौल रहा है मानो यूरोपी यूनियन धीरे धीरे "यूरो अरब" होता जा रहा है। इस समय मुसलमान यूरोपीय आबादी का चार प्रतिशत हैं और अगर तुर्की यूरोपीय यूनियन का सदस्य बनता है तो यह प्रतिशत बढ़कर १७ प्रतिशत हो जाएगा।

डेनमार्क का एडीटर ज़िन्दा जल गया

राष्ट्रीय सहारा (उर्दू) के एक रिपोर्ट के अनुसार रसूले अकरम सल्ल० के अपमानजनक चित्र के प्रकाशन करने वाले डेनमार्क के बदनाम ज़माना समाचार पत्र 'ज़ामकन बोस्टन' का एडीटर एलियट बैक अपने कमरे में भड़क उठने वाली आग में जलकर हलाक हो गया। एक सऊदी समाचार की रिपोर्ट के हवाले से पाकिस्तानी दैनिक समाचार पत्र 'नवाए वक़्त' ने यह ख़बर दी है। इस सम्पादक ने ३० दिसम्बर २००५ को अपने समाचार पत्र में रसूले अकरम के अपमानजनक चित्र प्रकाशित किये थे जिस पर दुन्या भर के मुसलमानों ने कठोर विरोध प्रदर्शन किया था। डेनमार्क सरकार इसके जलके मरने की ख़बर छुपाने की कोशिश कर रही है। सऊदी अखबार ने लिखा है कि इस सम्पादक को अल्लाह के अज़ाब ने सोते में पकड़ लिया और वह ज़िन्दा जलकर जहन्नुम वासिल (नरक में ढकेल) कर दिया गया।

वातावरण में फैल रहा है रहस्यमय चमकदार नीला बादल

नासा के नये रहस्योद्घाटन ने दुनिया में बढ़ रहे प्रदूषण की चिंता को और बढ़ा दिया है। नासा के अनुसार हाल के वर्षों में एक चमकदार, नीले रंग का रहस्यमय बादल दुनिया के चारों ओर फैल रहा है। इस बारे में और जानकारी के लिए नासा जल्द ही एक अंतरिक्षयान भेजने की योजना बना रहा है। अधिकतर वैज्ञानियों के अनुसार, ये नीले चमकदार बादल ग्लोबल वार्मिंग के कारण बने हैं।

वातावरण के ऊपरी हिस्से में रात में चमकने वाले ये बादल ८० किलोमीटर की ऊंचाई पर स्थिति हैं। इन्हें सूर्य के उगने के ठीक पहले और डूबने के ठीक बाद देखा जा सकता है। वर्जीनिया स्थित पटन विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक जेम्स रसेल के अनुसार, इन बादलों को पहली बार १८८५ में ध्रुवीय क्षेत्रों में देखा गया था। मगर तब यह कहा गया था कि ये दो साल पहले क्राकातुआ ज्वालामुखी में विस्फोट के कारण बने हैं। मगर हाल के वर्षों में ये बादल ४० डिग्री के निचले अक्षांश में तेजी से फैले हैं। साथ ही हर वर्ष इसकी चमक बढ़ती जा रही है। अधिकतर वैज्ञानिकों का मानना है कि बढ़ते

(शेष पृष्ठ २४ पर)